''वाह-वाह के गीत गाओ। ब्राह्मण जीवन अर्थात् वाह-वाह, हाय-हाय नहीं। शारीरिक व्याधि में भी हाय-हाय नहीं, वाह-वाह! यह भी बोझ उतरता है। ... मेरा ही हिसाब है! प्राप्ति के आगे हिसाब तो कुछ भी नहीं है।'' अ.बापदादा 30.11.99

''कोई बीमारी वा दुख आदि है तो तुम सिर्फ याद में रहो। यह हिसाब-किताब अभी ही चुक्तू करना है। ... गाया जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं।''

सा.बाबा 27.11.04 रिवा.

''इस समय के इस एक जन्म (पुरुषार्थ का फल) का अनेक जन्मों तक चलता है और वह अनेक जन्मों का (खाता) एक जन्म में खत्म होता है। तो अनेक जन्मों का हिसाब-किताब एक जन्म में खत्म करने के कारण कब-कब वह फोर्स रूप में आता है। ... जब साक्षी होकर देखने लग पड़ते तो यह व्याधि बदलकर खेल रूप में हो जाती है।'' अ.बापदादा 23.3.70

आत्मा के लिए दैहिक भोगना, दुख-दर्द इतना दुखदायी नहीं है, जितना विकारों की बीमारी, व्यर्थ संकल्प की बीमारी, मानसिक बीमारी देहिक बीमरी से कहीं अधिक दुखदायी है। देह से न्यारा होकर ही इन सब भोगनाओं से निदान पा सकते हैं। इसमें व्यर्थ संकल्पों की सबसे बड़ी बाधा है, जो न उस स्थिति में स्थित होने देती है और न ही उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करने देती है। विकार ही कर्मभोग या दैहिक भोगना के मूल कारण हैं और यथार्थ ज्ञान की धारणा अर्थात् देह से न्यारा होने का पुरुषार्थ ही अभीष्ट पुरुषार्थ है, स्व-स्थिति में स्थित आत्मा सर्व प्रकार की कर्मभोग की वेदना से मुक्त है।

''मुख्य शक्तियाँ हैं - तन की, मन की, धन की और सम्बन्ध की। चारो ही आवश्यक हैं।... तन का हिसाब-किताब होते भी स्व-स्थिति के कारण स्वस्थ अनुभव करता है। उनके मुख पर, चेहरे पर बीमारी के कष्ट के चिन्ह नहीं रहते। ... क्योंकि बीमारी का वर्णन भी बीमारी की वृद्धि करने का कारण बन जाता है। वह कभी भी बीमारी के कष्ट का अनुभव नहीं करेगा, न दूसरे को कष्ट सुनाकर कष्ट की लहर फैलायेगा।'' अ.बापदादा ...

कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय

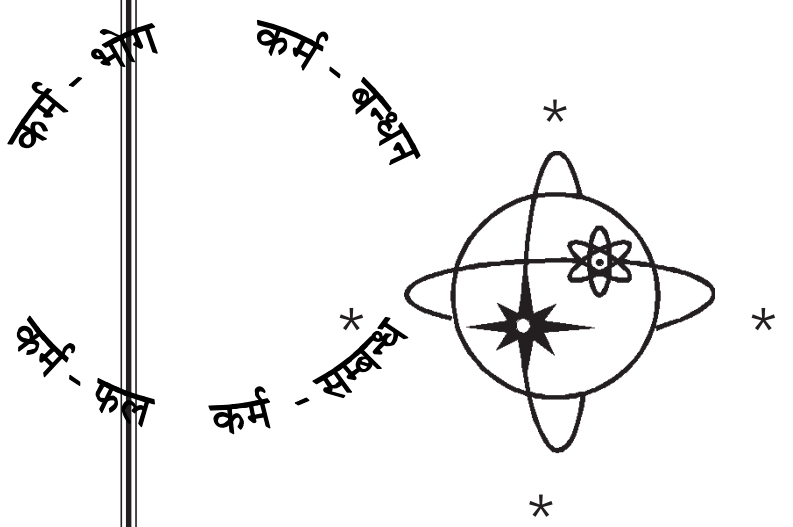

प्रस्तावना

सत्यता ये है कि हर आत्मा को अपने अच्छे या बुरे कर्मों का फल अवश्य भोगना होता है इसलिए अच्छे या बुरे दोनों ही प्रकार के कर्मों का भोग कर्मभोग ही है। ऐसे ही कर्मफल भी अच्छे-बुरे कर्मों के अनुसार अच्छा या बुरा अर्थात् सुखदाई और दुखदाई दोनों ही प्रकार का होता है। इस प्रकार दोनों ही शब्द पर्यायवाची हैं। परन्तु बाबा ने मुरलियों में कर्मभोग शब्द बुरे कर्मों के दुखदायी फल के भोग के लिए प्रयोग किया है और कर्मफल को अच्छे कर्मों के सुखदायी फल के लिए प्रयोग किया है। ऐसे ही कर्म-बन्धन दुखदायी सम्बन्ध के रूप में और कर्म-सम्बन्ध सुखदायी सम्बन्ध के रूप में प्रयोग किया है। यहाँ भी ये कर्मभोग, कर्म-बन्धन शब्द उसी भाव और भावना से प्रयोग किये गये हैं। कर्मयोग शब्द का प्रयोग परमात्मा की मधुर स्मृति में किये गये कर्मों के लिए अर्थात योग-युक्त स्थिति के लिए प्रयोग किया गया है क्योंकि योग भी एक कर्म है, जिस योग से आत्मा अपने विकर्मों के भोग से मुक्त होती है और सुकर्मों के द्वारा श्रेष्ठ कर्मफल का खाता जमा करती है। योग में हमारे कर्म कैसे श्रेष्ठ होते हैं और उनसे कैसे आत्मा में बल आता है, जो आत्मा को कर्मभोग और कर्म-बन्धन के दुख से सहज मुक्त होने में सहयोग करता है। कर्म करते हुए आत्मा को परमात्मा की मधुर याद में रहना कर्मयोग है और वे कर्म आत्मा को कर्मभोग कर्म-बन्धन से सहज मुक्त करते हैं।

कोई व्यक्ति या उपचार हमको सदा काल के लिए स्वस्थ कर देगा, ये आशा रखना या परिकल्पना करना भी अज्ञानता है अर्थात् भूल होगी। परन्तु कर्मभोग से मुक्त होने के लिए यथा सम्भव पुरुषार्थ करना, उपचार करना, सहयोग लेना और देना हमारा कर्तव्य है, जो करना है और करना भी चाहिये। ये भी विश्व-नाटक में हमारा एक पार्ट है जो बजाना ही है और बजाना ही होगा परन्तु वह पार्ट भी खुशी से बजायें यही ज्ञान है। आत्मिक-स्वरुप में स्थित होकर रहना और पार्ट बजाना ही सर्व श्रेष्ठ पुरुषार्थ और उपचार है। राग-द्वेष के वशीभूत किये गये कर्म आत्मा के बन्धन अर्थात् कर्मभोग का कारण हैं और विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर देह और देह की दुनिया से नष्टोमोहा, राग-द्वेष से मुक्त होकर साक्षी होकर पार्ट बजाना, यथोचित उपचार करना कर्मभोग से सहज मुक्त होने का साधन है।

कर्मभोग चुक्ता करने में भी आत्मा के परस्पर हिसाब किताब का महत्वपूर्ण स्थान है। ड्रामानुसार कर्मभोग का आना भी आवश्यक है। यदि कर्मभोग आये ही नहीं तो कर्मयोग की परीक्षा भी कैसे हो? भले ही हम देखते हैं कि ब्रह्मा बाबा ने कर्मयोग से कमभोग को चुक्ता किया परन्तु अन्त घड़ी तक कर्मभोग ने पीछा किया और बाबा को कर्मयोग के द्वारा कर्मभोग से युद्ध लड़ना पड़ा और अन्त में उन्होंने कर्मयोग से कर्मभोग पर जीत पाई।

स्व-स्वरूप की स्थिति परमानन्दमय भी है तो परम कल्याणमय भी है - जब कर्मभोग नहीं है या हल्का है तब इस आत्मिक स्वरूप की स्थिति का किया हुआ दृढ़ अभ्यास ही समय पर काम आता है अर्थात् कर्मयोग द्वारा कर्मभोग से मुक्त करने में सहयोगी होता है। यदि पहले से अभ्यास न किया तो कर्मभोग के समय न ये स्थिति होगी और न इस स्थिति का अभ्यास सम्भव होगा। पहले से किया हुआ अभ्यास ही उस समय काम आता है अर्थात् उस दुख-दर्द की महसूसता से मुक्त होने में सहयोगी होता है। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा देह का कठिन कर्मभोग होते भी उसकी महसूसता से मुक्त होगी और देहाभिमानी आत्मा हल्के कर्मभोग की पीड़ा भी अधिक महसूस करेगी।

किताब चुक्तू होने का अवसर आये और वह चुक्ता हो। भक्त कवि रहीम ने गाया है - रहिमन विपदा हू भली जो नारायण रत होये। जैसे कर्मयोग से कर्मभोग की वेदना कम होती है, वैसे ही कर्मभोग के समय कर्मभोग का अधिक चिन्तन करने से कर्मभोग की वेदना और भी बढ़ जाती है। कर्म भोग की वेदना को सहन करते भी मन में किसके प्रति कोई नेगेटिव संकल्प न आये, यही कर्मयोग द्वारा कर्मभोग पर विजय पाने की कसौटी है। नेगेटिव संकल्प कर्मभोग की वेदना को भी बढ़ाते है तो आगे के लिये कर्मभोग का बीजारोपण भी करते हैं अर्थात् हमारा नया दुखदायी हिसाब-किताब भी आत्माओं के साथ बनाते हैं।

''बाप जो समझाते हैं, उसको उगारना चाहिए। यह भी बाप ने समझाया है - कर्मभोग की बीमारी उथल खायेगी, माया सतायेगी परन्तु मूँझना नहीं चाहिए। बीमारी में तो मनुष्य और ही भगवान को जास्ती याद करते हैं। ... तुम और सब बातें भूल मुझे याद करो।'' सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

हमारा अपने कर्मभोग की वेदना की महसूसता ही दूसरे की वेदना की महसूसता कराती है, जो हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन करता है और पीड़ितों के प्रति सद्भावना जाग्रत करता है। इसीलिए गायन है - जिसके पैर न गई बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई। इस प्रकार हम देखें तो कर्मभोग भी हमको अनुभवी बनाता है और दूसरों की सेवा के लिए प्रेरित करता है। यदि हमको कोई कड़वा फल खाने को मिल रहा है या हम खाने के लिए बाध्य हो रहे हैं तो जरूर हमने ऐसा बीज बोया है, जिसका ये फल निकला है। इस सत्य को ध्यान में रख हमको भूतकाल के कर्मो को खुशी से चुक्ता करना है और वर्तमान में कोई ऐसा कर्म रूपी बीज नहीं बोना है, जिसका कड़वा फल भविष्य में खाना पड़े।

कर्म भोग आया है आना अवश्य सम्भावी है क्योंकि आधा कल्प से अनेक विकर्म आत्मा ने किये ही हैं और आना भी चाहिए क्योंकि ये कर्मभोग भी हमको अनेक अनुभव कराता है और अन्तिम परीक्षा में पास होने के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ के लिए प्रेरित करता है। हम यहाँ पूर्ण और सदा काल के लिए स्वस्थ हो जायेंगे या

कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय

विषय-सूची

विषय — पेज नं.

कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय और ब्रह्मा बाबा 5
कर्म, कर्मयोग, कर्मभोग, कर्म-बन्धन, और कर्मफल की परिभाषा
कर्म
कर्म और कर्म का विधि-विधान
कर्मभोग
कर्मभोग अर्थात् दैहिक एवं मानसिक व्याधियाँ और उनका कारण
तन-मन की आरोग्यता में हमारे संकल्पों का महत्व 17
कर्मफल
कर्मयोग 24
कर्मयोगी स्थिति
कर्मभोग, कर्मफल और कर्मयोग के प्रकार
कर्मभोग के विभिन्न प्रकार 29
A. दैहिक कर्मभोग
B. मानसिक कर्मभोग
C. सामाजिक कर्मभोग अर्थात् कर्म-बन्धन
D. भौतिक कर्मभोग
कर्मफल के प्रकार 33
स्वस्थ तन
स्वस्थ मन
स्वस्थ धन
स्वस्थ जन अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क
कर्म-सम्बन्ध अर्थात् श्रेष्ठ कर्मों अर्थात् परमात्मा की याद में किये गये कर्मों के द्वारा निर्मित सुखदायी सम्बन्ध
कर्मयोग के प्रकार 34
विशेष योग
श्रीमत अनुसार दिनचर्या का पालन
क्लास

खान-पान 35
व्यवहार
ईश्वरीय सेवा
ज्ञान की सेवा
मन्सा-सेवा
यज्ञ की कर्मणा-सेवा
योगयुक्त स्थिति में निद्रा
कर्म बन्धन और कर्म सम्बन्ध में कर्मयोग का स्थान
कर्मभोग के कारण 40
कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय
कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय और निश्चय
कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय का विधि-विधान और पुरुषार्थ ..... .44
कर्मयोग का विधि-विधान
कर्मयोग से कर्मभोग और कर्म-बन्धन पर विजय पाने का पुरुषार्थ
कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय का अनुभव 54
कर्मभोग, कर्मयोग और मृत्यु
कर्मभोग और कर्मयोग के द्वारा मृत्यु पर विजय
कर्मभोग, उपचार, मृत्य और कर्मयोग
कर्मभोग, कर्मभोग से मुक्ति का उपचार और कर्मयोग
Q. यज्ञ में अपने कर्मभोग से मुक्त होने के उपचार का क्या विधि-विधान है?
कर्म-बन्धन, कर्म-सम्बन्ध और कर्मयोग 61
कर्मयोग, कर्मफल, कर्मभोग और संगमयुग
कर्मयोग अर्थात् संगमयुग
कर्मभोग और आत्मा की इच्छा-शक्ति **(Will-power)** एवं कर्मयोग
कर्मभोग, कर्म-बन्धन और कर्मयोग का राज़
कर्मभोग, कर्मभोग की आशंका और उससे बचने का विधि-विधान
कर्मभोग से मुक्त होने का विधि-विधान 76
दैहिक-मानसिक भोगना के रूप में
कर्मयोग के पुरुषार्थ द्वारा
अन्त में धर्मराज की सज़ाओं के रूप में
धर्मराज की ट्रिबुनल 76

विचारणीय है कि कर्मभोग आता क्यों है? कर्मभोग से हमारा अनेक आत्माओं के साथ का हिसाब-किताब चुक्ता होता है, वह चुक्ता होना भी अति आवश्यक है, इसलिए पुरुषार्थ करने पर सफलता तो अवश्य मिलेगी लेकिन अति आशावान भी नहीं होना चाहिए अर्थात् पुरुषार्थहीन भी नहीं होना है और अति आशावान भी नहीं होता है। साक्षी होकर पुरुषार्थ करने वाले सफल भी होते हैं और सन्तुष्ट भी रहते हैं।

कर्मभोग, कर्म-बन्धन और कर्मयोग का राज़

कर्मभोग दुख का कारण है और कर्मयोग सुख का आधार है। कर्मभोग और कर्मयोग दोनों ही आत्मा के विकर्मों का खाता खत्म करने के आधार है। कर्मभोग अनेच्छा से और कर्मयोग स्वेच्छा से विकर्मों का खाता भस्म करने की प्रक्रियायें हैं। कर्मभोग और कर्मयोग की वास्तविकता को जानकर स्वस्थिति में स्थित होकर कर्मभोग को चुक्ता करने से कर्मभोग की महसूसता कम हो जाती है अर्थात् शूली से कांटा हो जाती है। स्वस्थिति में स्थित होकर परमात्मा की याद में कर्मभोग को चुक्ता करना ही कर्मयोग है। परमात्मा की याद से ही आत्मा अपनी स्व-स्थिति अर्थात् आत्मिक स्वरूप की स्थिति में स्थित होने में समर्थ होती है। कर्मयोग ही कर्मभोग पर विजय पाने या उससे मुक्त होने का एकमात्र उपाय है। योग द्वारा देह से न्यारे हो जायें तो भी उसकी वेदना की महसूसूता से मुक्त हो जायेंगे अथवा योग में कर्मभोग से मुक्त होने का कोई उपचार भी टच हो सकता है जिसके द्वारा भी हम कर्मभोग से मुक्त हो सकते हैं। कलियुग के अन्त में कर्मभोग का आना अवश्य सम्भावी है। कोई कर्मभोग न आये ये परिकल्पना भी निरर्थक है। कर्मभोग का कारण भी बाबा ने बताया है।

कर्मभोग आत्मा को अनुभवी भी बनाता तो अन्तिम परीक्षा में पास होने के लिए पथ प्रदर्शन भी करता है। आत्माओं के परस्पर के हिसाब-किताब चुक्ता करने में भी कर्मभोग का महत्वपूर्ण स्थान है। कर्मभोग आये तब ही आत्मा के हिसाब

हम यथार्थ रीति योग लगाते हैं और देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास करते हैं तो उस कर्मभोग की वेदना से मुक्त हो सकते हैं। ये अभ्यास और स्थिति जितनी गहरी होगी, हमारी विल पॉवर जितनी शक्तिशाली और दृढ़ होगी, उसका प्रभाव भी उतना ही गहरा होगा अर्थात् उस सीमा तक हम उस कर्मभोग से मुक्त हो सकते हैं।

हम परमात्मा की याद में अपनी देह में जहाँ कर्मभोग का केन्द्रबिन्दु है, वहाँ मन-बुद्धि को केन्द्रित करके अपने संकल्प शक्ति अर्थात् अपनी विल-पॉवर के आधार पर उसका निदान कर सकते हैं। इस विल-पॉवर का उपयोग दुनिया में भी किया जाता है परन्तु उसे कर्मयोग नहीं कहा जा सकता है क्योंकि उसमें परमात्मा के साथ योग नहीं है। उसमें आत्मा की अपनी विल-पॉवर काम करती है और उसमें व्यक्तियों का व्यक्तियों के साथ योग होता है, इसलिए उसका फल भी उन व्यक्तियों के साथ के हिसाब-किताब के आधार पर ही होता है।

Q. क्या किन्हीं अन्य आत्माओं की विल-पॉवर से आत्मा अपने कर्मभोग से मुक्त हो सकती है? यदि हो सकती है तो किस सीमा तक?

अन्य आत्माओं की विल-पॉवर के द्वारा कर्मभोग का निदान होता भी है और हो भी सकता है परन्तु उसकी एक निश्चित सीमा है अर्थात् उन आत्माओं के साथ जितना हिसाब-किताब होगा, उसी सीमा तक वह विल-पॉवर काम करेगी। दुनिया में तन्त्र-मन्त्र वाले या झाड़-फूँक वाले भी कुछ इस तरह से आत्माओं के कर्मभोग का निदान करते हैं, दुआ-दवा का भी प्रभाव होता है परन्तु उस सबकी सीमा हिसाब-किताब तक ही है।

Q. क्या अपनी विल पॉवर अर्थात् योग शक्ति से अपने कर्मभोग पर विजय पायी जा सकती है? यदि पायी जा सकती है तो किस सीमा तक और कैसे?

पायी जा सकती है। आत्मा की एकाग्रता और परमात्मा के साथ योग में वह शक्ति है, जो हमको अपने कर्मभोग से मुक्त कर सकती है परन्तु उसमें परमात्मा पर निश्चय और अपनी इच्छा शक्ति की दृढ़ता अति आवश्यक है। परन्तु ये

धर्मराज की सज़ायें और सज़ाओं से बचने का पुरुषार्थ 78

Q. दोषी अर्थात् उत्तरदायी कौन?

कर्मभोग से मुक्ति में कर्मयोग का स्थान और विधि-विधान

कर्मभोग, कर्म-बन्धन, कर्मयोग और परमात्मा 82

कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय और विश्व-नाटक

कर्मभोग और सृष्टि-चक्र 88

आत्मा, कर्म और स्वर्ग

कर्मभोग और स्वर्ग

आत्मा, कर्म और नर्क

कर्मभोग और नर्क

आत्मा, कर्म और संगमयुग

कर्मभोग और संगमयुग

समर्पित जीवन, कर्मभोग और कर्मयोग

कर्मयोग, शारीरिक स्वास्थ्य और अन्य प्रकार के योग एवं पद्धतियाँ

कर्मयोग अर्थात् राजयोग और अन्य योगों एवं पद्धतियों द्वारा स्वास्थ्य लाभ का तुलनात्मक अध्ययन 95

कर्मभोग और बाह्य सहयोग

कर्मभोग, योगबल और सहयोग

कर्मभोग, कर्मातीत स्थिति और कर्मयोग

कर्मातीत और विकर्माजीत स्थिति में अन्तर और उसका कर्मभोग-कर्मयोग से सम्बन्ध

कर्मभोग, कर्मातीत स्थिति और पुरानी दुनिया के विनाश का सम्बन्ध

साक्षी - कर्मातीत - मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति और उसका कर्मभोग-कर्मयोग से सम्बन्ध

कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय और मृत्य 107

कर्मयोग, कर्मभोग, कर्म-बन्धन और पाप-पुण्य

आपघात-जीवघात से कर्मभोग और कर्मयोग का सम्बन्ध

कर्मभोग, कर्म-बन्धन, कर्मयोग और संकल्प

एक अप्रत्याशित स्वप्न और संकल्प 119

प्रश्नावली अर्थात प्रश्न और सम्भावित उत्तर

प्रश्नावली अर्थात् प्रश्न और सम्भावित उत्तर 124

Q.क्या कर्मयोग के द्वारा इस जीवन में स्वास्थ्य लाभ किया जा सकता हे और यदि किया जा सकता है तो कैसे और कितने तक तथा उसकी क्या प्रक्रिया है?

"Q. यदि परमात्मा कर्मभोग या कर्म-बन्धन से मुक्त होने में जो उनको याद करते हैं, उनको मदद करता है और जो याद नहीं करते, उनको मदद नहीं करता है तो क्या ये उनकी कामना नहीं कही जायेगी कि जो उनको याद करें, उनको मदद करे और जो न याद करें, उनको मदद नहीं करे ?

"Q. कर्म-बन्धन का कारण क्या है और कर्म-सम्बन्ध का आधार क्या है ? 128

ऐं. कर्मभोग का कारण क्या ?

Q कर्मफल का आधार क्या है ?

"Q. किसकी धन-सम्पत्ति को उसकी इच्छा और प्यार से लेकर सेवा में लगाते, अपने निजी उपयोग में लगाते, विलासिता पूर्वक उपभोग करते, तो उसका क्या हिसाब-किताब बनता है या बनेंगा ?

. 130

"Q. धर्मराज की मार अर्थात् सज़ाओं का स्वरूप क्या है या होगा ? उससे बचने का उपाय क्या है ?

"Q. अभी अनेक महारथी या जिन्हें हम अष्ट रतनों में गिरती करते हैं, वे अन्त तक बीमारी कहें या हिसाब-किताब कहें पूरा करते हैं और अनेक ऐसे हैं, जिन्हें हम महारथी नहीं समझते हैं, वे सहज शरीर छोड़ देते हैं, तो जो बाबा कहते हैं ८ रतन ही हैं, जो बिल्कुल सज़ा नहीं खते हैं, वह किस समय का गायन है ?

Q. दादी जानकी अष्ट रतनों में है, उसका आधार क्या है ? 134

"Q. बाबा ने कहा है - कोई कर्म करते तो उसके आदि-मध्य-अन्त को विचार कर कर्म करो तो पछताना नहीं पड़ेगा। तो कर्म के आदि-मध्य-अन्त के विषय में क्या विचार करना है ?

Q. आत्मा में अविनाशी संस्कार हैं - तो आत्मा ओरिजिनली पुण्यात्मा है या पापात्मा ? और है तो कैसे है ?

Q.आत्मा पर किस-किस प्रकार का बोझा है, जो खत्म हो तब आत्मा पावन बनें और घर जा सके ?

. 136

"Q.क्या हम ब्राह्मण आत्माओं को परमधाम जाने की उतावली होनी चाहिए ? यदि होनी चाहिए तो क्यों और यदि नहीं तो क्यों ? परमधाम में जल्दी जाने से हमको क्या लाभ होगा ?

"Q.यदि हमारा इस ब्राह्मण जीवन में सही पुरुषार्थ है तो हमको परमधाम में जल्दी जाने की उतावली हो नहीं सकती। क्योंकि अभी जैसा सुख हमको त्रिलोक्य में कहाँ भी नहीं मिल सकता है या मिलता है। यदि किसी को कर्मभोग के भय से परमधाम में जाने की उतावली है तो प्रश्न उठता है कि क्या जब तक कर्मभोग है, तब तक हम परमधाम में जा सकते हैं, क्या परमधाम में हमारा कर्मभोग का खाता चुक्ता होगा ?

विविध ईश्वरीय महावाक्य 138

संगमयुग पर ही कर्मयोग के द्वारा आत्मा को आधे कल्प का विकारी कर्म-संस्कारों के वशीभूत किये गये कर्मों का हिसाब-किताब खत्म होता है और आधे कल्प के लिए श्रेष्ठ कर्म करके खाता जमा करना होता है। द्वापर के बाद जो भी हिसाब-किताब या सम्बन्ध होते हैं, वे सब कर्म-बन्धन वाले ही होते हैं। कर्म-सम्बन्ध केवल संगमयुग पर जुटता है, जो आधे कल्प तक चलता है।

द्वापर-कलियुग है कर्मभोग और कर्म-बन्धन बनाने और भोगने का युग, सतयुग-त्रेता है संगमयुग पर बनाये कर्म-सम्बन्धों और किये सुकर्मों का कर्मफल का सुख भोगने का युग और संगमयुग है कर्मयोग से कर्म-बन्धन से मुक्त होकर कर्म-सम्बन्ध बनाने और सुकर्मों के द्वारा कर्मफल जमा करने का युग।

कर्मभोग और आत्मा की इच्छा-शक्ति (Will-power) एवं कर्मयोग

Q. क्या कर्मयोग के द्वारा कर्मभोग पर विजय पायी जा सकती है और यदि पायी जा सकती है तो किस सीमा तक और किस रूप में ?

विश्व-नाटक की यथार्थता पर विचार करें तो ये बात स्पष्ट होती है कि Events can't be changed, but we can change our attitute towards events. ये बात बाबा के ज्ञान देने से पहले भी कही गई हे परन्तु उसकी यथार्थ सत्यता विश्व-नाटक के ज्ञान के आधार पर ही सिद्ध होती है, जो परमात्मा ने अभी दिया है। इस सत्य के आधार पर कल्प पहले के अनुसार हमारे किन्हीं कर्मों के फलस्वरूप कोई कर्मभोग आया है या आने वाला है तो उसको टाला तो नहीं जा सकता है परन्तु हम ज्ञान द्वारा उसके कारणों को जानकर और कर्मभोग की यथार्थता को समझकर कर्मयोग के द्वारा उस कर्मभोग की वेदना से मुक्त हो सकते हैं या उसको हल्का कर सकते हैं। सत्य ज्ञान और कर्मयोग के अभ्यास से आत्मा की विल पॉवर बढ़ती है, जिस विल पॉवर के आधार पर आत्मा सहज कर्मभोग से मुक्त हो सकती है।

कर्मयोग, कर्मफल, कर्मभोग और संगमयुग

कर्मयोग अर्थात् संगमयुग

संगमयुग पर आत्मा कर्मयोग के द्वारा कर्मभोग को चुक्ता करती है, आधे कल्प के रहे हुए कर्म-बन्धन के हिसाब-किताब को चुक्ता करती है और भविष्य आधे कल्प के लिए कर्मफल का और कर्म-सम्बन्ध का खाता जमा करती है। कर्म-सम्बन्ध अर्थात् सुखदायी सम्बन्धों का निर्माण करती है। ये विधि-विधान हर आत्मा के लिए प्रभावित होता है, भले ही वह कल्प के अन्त में एक ही जन्म लेने वाली क्यों न हो। क्योंकि सृष्टि-चक्र के नियमानुसार हर आत्मा इस विश्व-नाटक में अपने पार्ट का आधा समय सुख का और आधा समय दुख का पार्ट बजाती है। इसलिए हर आत्मा को संगमयुग पर आधे कल्प या पार्ट का हिसाब-किताब चुक्ता करना होता है और नये पार्ट या आधे कल्प के लिए कर्मफल का खाता जमा जमा करना होता है, नये सुखदायी सम्बन्धों का निर्माण करना होता है। हर आत्मा को संगमयुग पर भविष्य नये सम्बन्धों और कर्मफल का खाता जमा करना होता है, उसके आधार पर आत्मा नये कल्प में उन आत्माओं के पास जन्म लेती है और सुख का उपभोग करने के लिए साधन-सम्पत्ति मिलती है। जो आत्मायें कलियुग के अन्त में आती हैं, उनको भी ये खाता संगम पर जमा करना ही होता है। भले जमा करने का विधि-विधान अर्थात् कर्मयोग अलग है। यदि परमात्मा के साथ उन आत्माओं का योग न हो, तो वे उसे याद क्यों करती हैं। कुछ आत्माओं का योग डायरेक्ट है और कुछ कर अपने धर्म-पिता के सम्बन्ध से है। हम जो परमात्मा से योग लगाते हैं, उससे जड़ प्रकृति भी पावन होती है, जिससे वह भविष्य में श्रेष्ठ और सुखदायी फल देती है और जो अन्य आत्माओं की तन-मन-धन से सेवा करते हैं, उनको सुख का रास्ता बताते हैं, ज्ञान-योग में आगे बढ़ने में सहयोग करते हैं, उससे भविष्य सुखदायी सम्बन्धों का निर्माण होता है। रोग-शोक, बीमारी आदि के द्वारा आये हुए कर्मभोग को कर्मयोग के द्वारा सहज सहन करते हुए पूरा करते हैं और आत्माओं के साथ के रहे हुए हिसाब-किताब का कर्मयोग के द्वारा अर्थात् उसकी वास्तविकता को जानकर खुशी से लेन-देन करके, सहयोग आदि के द्वारा पूरा करते हैं।

कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय

Q. कर्मयोग से कर्मभोग और कर्म-बन्धन पर विजय की स्थिति क्या और कैसी होती है?

कर्मयोग के द्वारा कर्मभोग और कर्म-बन्धन से मुक्त आत्मा कर्मातीत स्थिति के अनुभव में होती है। कलियुग के अन्त में सारे कल्प के कर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू होना होता है, इसलिए कर्मभोग और कर्म-बन्धन का होना या आना स्वभाविक है परन्तु कर्मयोग की सफल अभ्यासी आत्मा कर्मभोग और कर्म-बन्धन होते भी सदा देह से न्यारी स्थिति में स्थित होने के कारण कर्मभोग और कर्म-बन्धन के द्वारा होने वाली दैहिक और मानसिक वेदना से मुक्त रहती है अर्थात् खुशी-खुशी से उसको पार करते हुए निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प स्थिति में रहते हुए सदा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है और दूसरों को भी कराती है। जैसे प्यारे ब्रह्मा बाबा।

कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय और ब्रह्मा बाबा

हम सब के आदर्श प्यारे ब्रह्मा बाबा हैं, उनके कर्म और उनका पुरुषार्थ हमको प्रेरणा देने वाला है। जैसे और सब पुरुषार्थ बाबा ने किया, वैसे कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय भी पायी। बाबा ने कर्मयोग से कर्मभोग पर कैसे विजय पायी, उस पर विचार करने और उस अनुसार पुरुषार्थ करने से ही हम कर्मयोग से कर्मभोग और कर्म-बन्धन पर विजय पा सकते हैं।

''खेल तो सिर्फ 10-15 मिनट का ही था। उस थोड़े से समय में ही अनेक खेल चले। उसमें भिन्न-भिन्न अनुभव हुए। पहला अनुभव तो यह था कि पहले जोर से युद्ध चल रही थी। किसकी? योगबल और कर्मभोग की। कर्मभोग भी फुल फोर्स में अपनी तरफ खींच रहा था और योगबल भी फुल फोर्स में ही था। ऐसे अनुभव हो रहा था

कि जो भी शरीर के हिसाब-किताब रहे हुए थे, वे फट से योग-अग्नि में भस्म हो रहे थे और मैं साक्षी होकर देख रहा हूँ। जैसे अखाड़े में बैठ मल्लयुद्ध देखते हैं। मतलब तो दोनों का फोर्स पूरा ही था। कुछ समय बाद कर्मभोग तो बिल्कुल निर्बल हो गया, बिल्कुल दर्द गुम हो गया। ऐसे ही अनुभव हो रहा था कि आखरीन में योगबल ने कर्मभोग पर जीत पा ली। उस समय तीन बातें साथ-साथ चल रही थी। एक तरफ तो बाबा से बातें कर रहा था... तीसरी तरफ यह भी अनुभव हो रहा था कि कैसे शरीर से आत्मा निकल रही है।... डेड साइलेन्स का अनुभव हो रहा था। देख रहा था कि कैसे एक-एक अंग से आत्मा अपनी शक्ति छोड़ती जा रही है। मृत्यु क्या चीज है, वह अनुभव हो रहा था।''

अ.बापदादा का सन्देश 7वें दिन

''बाबा अपना भी बताते हैं कि मैं भी भूल जाता हूँ। कोशिश करता हूँ, बाबा को कहता हूँ कि बाबा मैं पूरा समय याद में रहूँगा, आप हमारी खाँसी बन्द कर दो, सुगर कम कर दो... परन्तु मैं खुद ही भूल जाता हूँ, तो खाँसी कैसे कम होगी। जो बातें बाबा के साथ करता हूँ, वे सच सुनाता हूँ। बाबा बच्चों को बता देते हैं, बच्चे बाप को सच नहीं सुनाते हैं। लज्जा आती है।''

सा.बाबा 1.07.09 रिवा.

कर्म, कर्मयोग, कर्मभोग, कर्म-बन्धन, और कर्मफल की परिभाषा

कर्म इस विश्व-नाटक का मुख्य घटक है क्योंकि ये सारा नाटक ही कर्म और फल पर आधारित एक घटना चक्र है। यहाँ आकर आत्मा कर्म करने के लिए बाध्य है और उसके कर्मानुसार उसको उसका अच्छा या बुरा फल भोगना ही पड़ता है।

कर्मयोग शब्द का प्रयोग कर्म करते हुए अर्थात् कार्य-व्यवहार में रहते हुए परमात्मा की याद से लिया जाता है परन्तु वास्तविकता को विचार करें तो योग भी एक कर्म है, इसलिए कभी भी परमात्मा को याद करेंगे तो वह कर्मयोग ही होगा और कर्म करते हुए परमात्मा की मधुर याद को कर्मयोग कहा जाता है।

संगमयुगी कैसा भी श्रेष्ठ कर्म हो लेकिन श्रेष्ठ कर्म के भी बन्धन में फँस गया, जिसको दूसरे शब्दों में आप सोने की जंजीर कहते हो। श्रेष्ठ कर्म में भी हद की कामना, यह सोने की जंजीर है। चाहे डाली हीरे की है, जंजीर भी सोने की है लेकिन बन्धन तो बन्धन है ना!''

अ.बापदादा 3.4.83

''जैसे अन्य आत्माओं को सेवा की भावना से देखते हो, बोलते हो, वैसे निमित्त बने हुए लौकिक परिवार की आत्माओं को भी उसी प्रमाण चलाते रहो। हद में नहीं आओ। मेरा बच्चा, मेरा पति...अगर मेरापन है तो आत्मिक दृष्टि, कल्याण की दृष्टि दे नहीं सकेंगे।''

अ.बापदादा 7.4.83

''घर में रहने वाली, घर की सेवा करने वाली साधारण मातायें हैं, यह याद रहता है या जगत माता हैं, जगत का कल्याण करने के निमित्त यह कार्य कर रही हूँ - यह याद रहता है? ... जिसको यह रुहानी नशा होगा वह कर्म करेगा लेकिन कर्म के बन्धन में नहीं आयेगा, न्यारा और प्यारा होगा।''

अ.बापदादा 24.9.92 पार्टी 1

''कर्म के सम्बन्ध में आना और कर्म के बन्धन में आना, इसमें भी फर्क है। अगर कर्म के बन्धन में आते हैं तो कर्म आपको खींचेगा, फुल स्टॉप लगाने नहीं देगा। ... न्यारे होकर कर्म के सम्बन्ध में आना, यह अण्डरलाइन करना है।''

अ.बापदादा 7.3.95

''तुम बच्चों को अपनी इस लाइफ से कभी तंग नहीं होना चाहिए क्योंकि यह हीरे जैसा जन्म गाया हुआ है। इसकी सम्भाल भी करनी होती है। ... बीमारी में भी नॉलेज सुन सकते हैं, बाप को याद कर सकते हैं। जितने दिन जियेंगे कमाई होती रहेगी, हिसाब-किताब चुक्तू होता रहेगा। ... कर्मातीत बनना है।''

सा.बाबा 10.2.05 रिवा.

बनकर हर कर्म करो। तो साथी और साक्षी ये दो शब्द प्रैक्टिस में लायो। तो यह बन्धनमुक्त की अवस्था बहुत जल्दी बन सकती है।'' अ.बापदादा 13.3.71

''इस देह के भान को भी अर्पण करने से जब अपनापन मिट जाता है तो लगाव भी मिट जाता है। ...ऐसे समर्पण होने वालों की निशानी क्या रहेगी? एक तो सदा योगयुक्त और दूसरा सदा बन्धनमुक्त। जो योगयुक्त होगा, वह बन्धन मुक्त जरुर होगा। योगयुक्त का अर्थ ही है देह के आकर्षण के बन्धन से भी मुक्त।''

अ.बापदादा 25.3.71

''कर्मयोगी के आगे कोई कैसा भी आ जाये लेकिन वह स्वयं सदा न्यारा और प्यारा रहेगा। नॉलेज द्वारा जानेगा कि इसका यह पार्ट चल रहा है। घृणा वाले से स्वयं भी घृणा कर ले, यह हुआ कर्म का बन्धन। ऐसा कर्म के बन्धन में आने वाला एकरस नहीं रह सकता। ... इसलिए अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखो और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी होकर देखो।'' अ. बापदादा 18.4.82

''बाप कितना सहज समझाते हैं। तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। बाकी किसका कर्मभोग का हिसाब-किताब है, कुछ भी है, वह तो भोगना ही है। उसमें बाबा आशीर्वाद नहीं करते। ... अभी हमको बाप का और सृष्टि-चक्र का पूरा ज्ञान मिल गया है।''

सा.बाबा 3.10.05 रिवा.

''मेरा मन नहीं लगता, मेरा योग नहीं लगता, मेरी बुद्धि एकाग्र नहीं होती। यह मेरा शब्द हलचल पैदा करता है। मेरा है कहाँ। मेरापन मिटाना ही सर्व बन्धन मुक्त बनना है।'' अ.बापदादा 19.5.83

''सभी का कल्याण चाहते हो तो स्वयं शक्तिरूप बन सर्वशक्तिवान के साथी बन शुभ भावना रख चलते चलो। चिन्तन वा चिन्ता मत करो, बन्धन में नहीं फँसो। अगर बन्धन है तो उसको काटने का तरीका है याद। कहने से नहीं छूटेंगे, स्वयं को छुड़ा दो तो छूट जायेंगे।'' अ.बापदादा 13.4.83

''संगमयुग का ही सर्व श्रेष्ठ कर्म है ना। यह श्रेष्ठ कर्म ही हीरे की डाली है। चाह

कर्मभोग का अर्थ है कर्मों का भोग, इसलिए कर्मों का भोग अच्छे कर्मों का अच्छा होगा और बुरे कर्मों का बुरा होगा, इसलिए हर प्रकार का भोग कर्मभोग ही है। परन्तु सामान्य रूप में कर्मभोग शब्द का प्रयोग विकर्मों के फलस्वरूप होने वाले रोग-शोक और उसकी वेदना या दुख-अशान्ति के अनुभव के सम्बन्ध में किया जाता है। इसलिए अच्छे कर्मों का जो भोग होता है, उसे कर्मफल की संज्ञा दी जाती है।

कर्म-बन्धन से आशय उन दुखदायी सम्बन्धों से है, जिन समबन्धों से आत्मा को दैहिक या मानसिक वेदना होती है, जिन सम्बन्धों के कारण आत्मायें अपने को बन्धन में महसूस करती हैं, साकार में आये हुए परमात्मा से मिलन मनाने से वंचित रहती हैं।

संगमयुग है कर्मयोग से कर्मभोग और कर्म-बन्धन पर विजय पाने का युग। कर्मभोग और कर्म-बन्धन से होने वाली दैहिक और मानसिक वेदना पर कर्मयोग से कैसे विजय पायें, उसका विधि-विधान क्या है, उस पर बाबा ने अनेकानेक प्रकार से समझाया है, परमात्मा के उन महावाक्यों को बुद्धि में रखकर यहाँ कुछ विचार कर रहे हैं।

कर्म और कर्म का विधि-विधान

ये कर्मक्षेत्र है, जहाँ आत्मायें कर्म करने और उसका फल भोगने के लिए ही आती हैं। कर्म हर आत्मा का स्वभाविक धर्म है। इसलिए यहाँ कोई भी आत्मा कर्म के बिना रह नहीं सकती है।

बाबा ने विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है और विश्व-नाटक में कर्म और फल का क्या विधि-विधान है, उसका भी विस्तार से ज्ञान दिया है तथा उस विधि-विधान को समझकर श्रेष्ठ कर्म करने के लिए श्रीमत भी दी है और श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति कैसे अर्जित करें या धारण करें, उसका भी विधि-विधान बताया है और

उसको धारण कर श्रेष्ठ कर्म करने की श्रीमत दी है। बाबा ने कर्म के विधि-विधान का जो ज्ञान दिया है, उसके विस्तार में जायेंगे तो एक बड़ी किताब बन जायेगी, इसलिए उसको विस्तार से यहाँ वर्णन नहीं कर रहे हैं परन्तु बाबा ने जो कर्मभोग पर कर्मयोग से विजय कैसे पायें, उससे सम्बन्धित कुछ विधि-विधान, जो बाबा ने बताये हैं, उनका वर्णन करने का प्रयत्न कर रहे हैं। बाबा ने बताया है -

इस विश्व-नाटक में कर्म और फल का अद्वितीय सन्तुलन है, जिसके अनुसार हर आत्मा को अपने कर्म का फल जाने-अन्जाने भोगना ही होता है। बिना कर्म के किसी आत्मा को कोई भी अच्छा या बुरा फल प्राप्त नहीं हो सकता है।

कर्म के फल के निर्णय में कर्म के स्वरूप से भी कर्ता की भावना का महत्वपूर्ण स्थान है। अबोध व्यक्ति के द्वारा किये गये कर्म से जानकार व्यक्ति के द्वारा किये गये कर्म का फल कई गुणा अधिक होता है। ज्ञानी आत्मा को साधारण मनुष्य की अपेक्षा अच्छे कर्म का सौगुणा फल भी मिलता है तो विकर्म का सौगुणा दण्ड भी मिलता है। हर आत्मा को सारे कल्प में आत्माओं के साथ या प्रकृति के साथ किये हुए अपने अच्छे या बुरे कर्मों के फल का हिसाब-किताब कल्पान्त में पूरा करना होता है और परमात्मा की याद में परमात्मा की श्रीमत पर नये कल्प में आधे कल्प के श्रेष्ठ कर्मफल और मधुर सम्बन्धों का खाता जमा करना होता है।

एक बाप की याद और उसके द्वारा दिये गये ज्ञान से ही आत्मा सुकर्म करने में समर्थ होती है, अज्ञानता के वश देहाभिमान में आने से आत्मा के कर्म विकर्म ही होते हैं। इसलिए बाबा ने श्रीमत दी है कि तुमको कर्मयोगी बनकर कर्म करना है, कर्मेन्द्रियों के वश होकर या कर्म-कान्शस होकर कर्म नहीं करना है।

शब्द हैं कर्म-क्षेत्र, कर्म-सम्बन्ध, कर्म-बन्धन कर्मेन्द्रियाँ, कर्म-भोग, कर्म-फल, कर्मयोग तो जरूर उनमें भाव और भावना के अनुसार कुछ अन्तर अवश्य होगा।

''धर्मराज के रजिस्टर में सब जमा हो जाता है ऑटोमेटिकली। ... बाबा को लिखकर देने से बोझा हल्का हो जायेगा।'' सा.बाबा 15.8.05 रिवा.

''कर्मातीत, कर्मभोग के वश न होकर मालिक बन कर्मभोग को चुक्तू करना, कर्मयोगी बन कर्मभोग चुक्तू करना। ... कर्मातीत स्थिति वाला देह के मालिक होने के कारण कर्मभोग होते हुए भी न्यारा बनने का अभ्यासी होने के कारण बीच-बीच में अशरीरी स्थिति का अनुभव बीमारी से परे कर देता है। ... बीच-बीच में यह अशरीरीपन का रुहानी इन्जेक्शन लग जाता है।''

अ.बापदादा 18.12.87

कर्म-बन्धन, कर्म-सम्बन्ध और कर्मयोग

कर्म-बन्धन और कर्म-सम्बन्ध दोनों ही परमात्मा की याद में बाधक हैं क्योंकि दोनों में ही किसी न किसी देहधारी की याद आती ही है और वह याद आत्मा की उतरती कला का कारण बनती है परन्तु कर्म-बन्धन दुखदायी होता है, कर्म-सम्बन्ध सुखदायी होता है। इसी विधि-विधान के कारण सतयुग में कर्म-सम्बन्ध होते हैं, आत्मायें सुख-शान्ति में रहती हैं फिर भी आत्मा की उतरती कला होती है। अभी बाबा की श्रीमत है कि दोनों से बुद्धि निकाल कर अपने को निराकार आत्मा निश्चय कर मुझ निराकार बाप को याद करो, जब तक अपने को निराकार नहीं समझेंगे तब तक मुझ निराकार बाप को याद नहीं कर सकेंगे। कर्मबन्धन से मुक्त होने में भी कर्मयोग सहयोगी बनता है।

''तीसरे नेत्र में कमजोरी आने की भी वही दो बातें हैं ... एक लगाव और दूसरा पुराना स्वभाव। ... अगर अपनी किसी विशेषता में भी लगाव है तो वह भी बन्धन-युक्त कर देगा, बन्धन-मुक्त नहीं करेगा क्योंकि लगाव अशरीरी बनने नहीं देगा।''

अ.बापदादा 15.7.73

''अनेक संकल्पों की समाप्ति होकर एक शुद्ध संकल्प रह जाये, इस स्थिति का अनुभव कर रही हो? इस स्थिति को ही शक्तिशाली, सर्व कर्म-बन्धनों से न्यारी और अति प्यारी स्थिति कहा जाता है।'' अ.बापदादा 22.6.71

''दो शब्द हैं एक साक्षी और साथी। एक तो साथी सदैव साथ रखो। दूसरा साक्षी

लौकिक परिवार हो या ये अलौकिक परिवार अर्थात् सेवाकेन्द्र या मधुवन हो, उसके द्वारा खर्च और साधन-सुविधायें अवश्य मिलती है परन्तु किसको कितनी साधन-सुविधायें मिलेंगी, ये एक विचारणीय विषय है। हम जहाँ भी रहते हैं, वह हमारी ज्वाइन्ट प्रॉपर्टी है परन्तु सत्यता ये है कि हमारी उसमें उतनी ही है, जितनी हमने अपने सहयोग से जमा की है अर्थात् उतनी ही हमको मिल सकती है और किसी कर्मभोग के समय हमारे लिए उतनी ही खर्च की जा सकती है, जितना उसमें हमारा हिस्सा है या कोई संगठन उतना ही खर्च कर सकता है, जितनी उसके लिए हमारे शरीर की उपयोगिता है। ये विश्व-नाटक का अनादि-अविनाशी विधि-विधान है, इसके लिए किसी को किसी भी रूप में दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। यदि हम संगठन की सारी सम्पत्ति पर अपना अधिकार समझते हैं या अपने को सारी सम्पत्ति में समान हिस्सेदार समझते हैं, तो ये हमारी भूल है, जो हमारे दुख का कारण बन सकती है अर्थात् हमारे कर्मभोग की वेदना को बढ़ा सकती है क्योंकि ये हमारी पैत्रिक सम्पत्ति नहीं है, जिसके हम समान हिस्सेदार हैं। ये तो हमारा जमा का खाता है, उसमें जितना जमा किया है, उतना ही मिलेगा।

अपने कर्मभोग से मुक्त होने का सबसे सफल उपचार यही है कि हम इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति समझें, उसके विधि-विधानों को समझकर देह और देह की दुनिया को भूल अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल अभ्यास करें, जो कर्मयोग है। ये कर्मयोग हमको सहज कर्मभोग से मुक्त करेगा और समय पर सहज देह का त्याग करने में सहयोगी बनेंगे अर्थात् हमको मृत्यु पर भी विजय प्राप्त करायेगा। यथार्थ ज्ञान की धारणा वाली कर्मयोग के सफल अभ्यास करने वाली आत्मा को समय पर आवश्यक साधन-सामग्री स्वत: मिलती है और जो मिलती है, उसमें वह आत्मा सहज सन्तुष्ट हो जाती है।

''अपने को आत्मा समझ एक बाप को याद करो तो इस योग अग्नि से विकर्म विनाश होंगे। ... हम आत्मा हैं, इस शरीर द्वारा पार्ट बजाते हैं - यह पक्का अभ्यास चाहिए।'' सा.बाबा 12.9.05 रिवा.

''निमित्त बनने वाले का एक सेकेण्ड में एक का पद्मगुणा बनना भी है, प्राप्ति का चान्स है और अगर निमित्त बने हुए कोई ऐसा कर्म करते हैं, जिसको देख और सभी विचलित हों, तो उसका पद्मगुणा उल्टी प्राप्ति भी होती है।''

अ.बापदादा 16.1.77

''कोई ने हॉस्पिटल बनाई तो दूसरे जन्म में रोग कम होगा। ऐसे नहीं कि पढ़ाई जास्ती मिलेगी, धन भी जास्ती मिलेगा। उसके लिए तो सब कुछ करो। कोई धर्मशाला बनाते हैं तो दूसरे जन्म में महल मिलेगा, ऐसे नही कि तन्दुरुस्त भी रहेंगे। बाप सब बातें समझाते हैं।'' सा.बाबा 5.5.05 रिवा.

''ब्राह्मण विश्व की किसी भी आत्माओं को देखते हैं, तो उनको सिर्फ कल्याण की ही भावना से देखते हैं। सम्बन्ध और लगाव की भावना से नहीं। सिर्फ ईश्वरीय सेवा के भाव से देखते। पंच तत्वों को देखते हुए, प्रकृति को देखते हुए, प्रकृति के वश नहीं होंगे। ... अभी जो प्रकृति को वश नहीं कर सकते, वे भविष्य में सतोप्रधान प्रकृति के सुख को नहीं पा सकते।'' अ.बापदादा 13.6.73

''पुरुषार्थी को कभी भी यह समझना नहीं चाहिए कि मेरे पुरुषार्थ करने के बाद कोई असफलता भी हो सकती है। सदैव समझना चाहिए कि जो पुरुषार्थ किया, वह कभी व्यर्थ नहीं जा सकता।'' अ.बापदादा 27.4.72

''जब बीज अविनाशी है तो फल न निकले, यह तो हो नहीं सकता। कोई पीछे आने वाले हैं तो अभी कैसे आयेंगे? ... कब भी सर्विस करते तो यह नहीं देखना वा सोचना कि जो किया, वह व्यर्थ गया।'' अ.बापदादा 11.7.71

''अगर कोई अकर्तव्य कार्य देखता भी है तो देखने का असर हो जाता है। उसका भी हिसाब बन जाता है। ... अशुद्ध संकल्प बुद्धि में भी अगर टच होते हैं तो भी सम्पूर्ण वैष्णव वा सम्पूर्ण प्योरिटी नहीं कहेंगे।'' अ.बापदादा 22.6.71

सतयुग में जो कर्म करते, खाते-पीते, उसका फल तो होता है परन्तु उससे पाप या पुण्य नहीं होता है, इसलिए उनको न सुकर्म कह सकते और न ही विकर्म, इसलिए बाबा ने उनको अकर्म कहा है। वास्तविकता तो ये है कि किसी भी

देहधारी का कोई कर्म अकर्म होता ही नहीं है। हर कर्म का प्रभाव आत्मा और प्रकृति पर अवश्य होता है

''यह भी तुम बच्चे अभी जानते हो - 21 जन्म तुम पुण्यात्मा रहते हो, फिर पापात्मा बनते हो। जहाँ पाप होता है, वहाँ दुख जरूर होगा। ... ये सब बातें उनकी बुद्धि में ही बैठेंगी, जिनकी बुद्धि में कल्प पहले बैठीं होंगी।''

सा.बाबा 21.8.04 रिवा.

''अपने कर्मों पर खबरदारी रखना है। कोई भी पाप कर्म न करना है। ... अगर अपने घाटे और फायदे का पोतामेल न रखेंगे तो फेल हो जायेंगे। माया ऐसी है जो बहुतों को फेल कर देगी। युद्ध है ना। ... जो कर्म दिल को खाता हो, उसे छोड़ते जाओ।''

सा.बाबा 3.8.68

''दान भी पात्र को देना चाहिए। पापात्मा को देने से फिर देने वाले पर भी असर हो जाता है। वह भी पापात्मा बन जाता है। ऐसे को कब नहीं देना चाहिए, जो जाकर उस पैसे से कोई पाप करे।''

सा.बाबा 14.8.69 रिवा.

''गरीब का भावना से दिया गया एक पैसे का फल भी साहूकार के एक हजार रुपये के बराबर हो सकता है ... कोई तो दो पैसा भी देते हैं, बाबा हमारी एक ईट लगा दो, कोई हजार भेज देते हैं। भावना तो दोनों की एक है ना, तो दोनों को बराबर मिल जाता है।''

सा.बाबा 30.11.69 रिवा.

''जो पाप कर्म करते हैं, उसका दण्ड तो जरूर मिलेगा ना। बाप थोड़ेही बैठ दण्ड देगा। यह तो ऑटोमेटिक ड्रामा बना हुआ है, जो चलता रहता है। बाप इसके आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं।''

सा.बाबा 19.2.69 रिवा.

''बाप को जान पहचान उनकी मत पर चलने से तुम श्रेष्ठ बन सकेंगे। नहीं तो बहुत सज़ायें खायेंगे। जैसे ईश्वर की महिमा अपरम अपार है वैसे सज़ा खाने की दुर्दशा भी अपरम अपार है। क़यामत का समय है। बाबा कहते हैं मैं सबका हिसाब-किताब चुक्तू कराता हूँ। ... कोई भी किसको दुख देते हैं तो दुखी होकर मरेंगे। जो काम कटारी चलाते हैं, वे दुखी होकर मरने वाले हैं - यह पक्का समझ लो।''

जो सर्व आत्माओं के लिए समान न है और न ही हो सकती है क्योंकि ये विविधतापूर्ण विश्व-नाटक है, हर आत्मा का अपना पार्ट और पुरुषार्थ भिन्न-भिन्न है। मृत्यु अपरिहार्य है क्योंकि पार्ट बजाने के लिए आत्मा को वस्त्र बदलना ही है, जो विश्व-नाटक का अनादि नियम और अभिन्न अंग है, जो सबके लिए समान है परन्तु यथार्थ योग साधना के द्वारा आत्मा मृत्यु-भय, मृत्यु-दुख और कर्मभोग की वेदना की महसूसता से बच सकती है, वेदना की महसूसता को कम कर सकती है, उसे भी सुखदायी बना सकती है क्योंकि कर्मयोगी आत्मा को ज्ञान होता है कि कर्मभोग भी हमारे ही पाप-कर्मों का फल है, जिसको चाहे-अन्चाहे खत्म करना ही है और कर्मभोग से हमारा पाप-कर्म का संचित खाता खत्म होता है। कर्मयोगी आत्मा देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास करती है, जिससे आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है और अपने मूल स्वरूप में स्थित आत्मा राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा आदि सबसे मुक्त होती है। आत्मा का मूल स्वरूप अजर, अमर, अविनाशी, सर्व ईश्वरीय गुणों से परिपूर्ण है। कर्मयोगी बनकर कर्मभोग को चुक्ता करने से, उसका उपचार करने से और कर्मयोगी बनकर देह का त्याग करने से भी आत्मा अनेक आत्माओं की सेवा के निमित्त बन जाती है, जिससे उसका भविष्य के लिए श्रेष्ठ सुखदायी खाता जमा हो जाता है।

Q. यज्ञ में अपने कर्मभोग से मुक्त होने के उपचार का क्या विधि-विधान है?

वर्तमान जगत में कर्मभोग का आना स्वभाविक है और उसके निदान के लिए उपचार करना भी स्वभाविक और अति आवश्यक है परन्तु सब कुछ करने के बाद अन्तिम मन्जिल तो मृत्यु ही है, जो ज्ञानी-अज्ञानी सबके लिए समान होती है परन्तु कर्मभोग के उपचार में हर आत्मा अपने उपलब्ध साधनों और स्थिति के अनुसार पुरुषार्थ करती है अर्थात् कर्मभोग से मुक्त होने के लिए यथा सम्भव उपचार करती-कराती है, उसके लिए यथा शक्ति खर्च करती है। ये खर्च करने के लिए आत्मा जिस स्थान पर रहती है, जिस संगठन में रहती है, वह चाहे अपना

और परमात्मा की याद से अपने आत्मिक स्वरूप में स्थिति का सफल अभ्यास ही है।

''आपके और बाप के मेहमान समझने में फर्क है। मेहमान उसको कहा जाता है जो आता है और जाता है। ... जितना ऊपर की स्थिति में जायेंगे, उतना उपराम होते जायेंगे। शरीर में होते हुए भी इस उपराम अवस्था तक पहुँचना है। बिल्कुल देह और देही अलग महसूस हो। ... ऐसी स्थिति की स्टेज को ही कर्मातीत अवस्था कहा जाता है।'' अ.बापदादा 26.1.70

''मन अमन तब हो जब शरीर में नहीं हो। बाकी मन अमन तो कभी होता ही नहीं है। देह मिलती है कर्म करने के लिए तो फिर कर्मातीत अवस्था में कैसे रहेंगे? कर्मातीत अवस्था कहा जाता है मुर्दे को। जीते जी मुर्दा बनना अर्थात् शरीर से डिटैच। बाप तुमको शरीर से न्यारा बनने की पढ़ाई पढ़ाते हैं।''

सा.बाबा 18.12.04 रिवा.

''अभी-अभी शरीर में आये, फिर अभी-अभी अशरीरी बन गये, यह प्रैक्टिस करनी है। इसी को ही कर्मातीत अवस्था कहा जाता है। ... शरीर और आत्मा दोनों का न्यारापन चलते-फिरते भी अनुभव होना है। ... शरीर की दुनिया, सम्बन्ध वा अनेक जो भी वस्तुयें हैं, उनसे बिल्कुल डिटेच होंगे, जरा भी लगाव नहीं होगा, तब न्यारा हो सकेंगे।'' अ.बापदादा 21.1.72

कर्मभोग, उपचार, मृत्य और कर्मयोग

कर्मभोग, कर्मभोग से मुक्ति का उपचार और कर्मयोग

कलियुग अर्थात् कल्पान्त में कर्मभोग का आना अवश्य सम्भावी है क्योंकि आधे कल्प के विकारी हिसाब-किताब चुक्ता होने ही हैं, उसके उपचार के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करना आत्मा का परम कर्तव्य है, जिसको करने के बिना आत्मा रह नहीं सकती परन्तु उसके लिए पुरुषार्थ, उसके लिए साधन-सामग्री, अन्य आत्माओं से सहयोग, उसके लिए साधन-सामग्री, खर्च आदि की एक सीमा है,

सा.बाबा 17.4.73 रिवा.

''दूसरी तरफ बाप सुप्रीम जस्टिस के रूप में कल्याणकारी होने के कारण बच्चों के कल्याण अर्थ ईश्वरीय लॉज (नियम) भी बताते हैं। सबसे बड़े ते बड़ा संगम का अनादि-अविनाशी लॉ कौन सा है? ड्रामा के प्लॉन अनुसार एक का लाख गुणा प्राप्ति और पश्चाताप वा भोगना - यह ऑटोमेटिकली लॉ अर्थात् नियम चलता ही रहता है। बाप को स्थूल रीति-रस्म के माफिक कहना वा करना नहीं पड़ता कि इस कर्म का यह लेना वा इस कर्म की ये सज़ा है, लेकिन यह ऑटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी है। ... इसलिए गाया हुआ है - 'कर्मों की गति अति गुह्य है'।''

अ.बापदादा 3.5.77

''इसीलिए नाम है - कर्म-क्षेत्र, कर्म-सम्बन्ध, कर्मेन्द्रियाँ, कर्मभोग, कर्मयोग। ... कर्म श्रेष्ठ है तो श्रेष्ठ प्रालब्ध है, कर्म भ्रष्ट होने के कारण दुख की प्रालब्ध है। लेकिन दोनों का आधार कर्म है। कर्म आत्मा का दर्पण है।'' अ. बापदादा 19.3.82

''श्रेष्ठ संकल्प से वायुमण्डल शुद्ध होता है, तो व्यर्थ से दूषित होता है, जिसका बोझा आत्मा पर चढ़ जाता है।'' अ.बापदादा 5.7.74

''बाप (परमात्मा) को छोड़कर दूसरे को याद करना - यह भी विकर्म है।''

सा.बाबा 5.1.69 रात्रि क्लास

''अगर बाप (परमात्मा) का बनकर कोई पाप कर्म किया तो सौगुणा दण्ड पड़ जायेगा।'' सा.बाबा 3.10.97 रिवा.

''बुरा कर्म करने से सौगुणा दण्ड हो जाता है। ज्ञान नहीं तो एक पाप का एक दण्ड। ज्ञान में आने के बाद फिर ऐसे कोई विकर्म करते हैं तो सौगुणा पाप लगता है।''

सा.बाबा 24.11.69 रिवा.

''अन्य आत्माओं के प्रति संकल्प में भी किसी विकार के वशीभूत वृत्ति है तो यह भी महापाप है। किसी अन्य आत्माओं के प्रति व्यर्थ बोल भी पाप के खाते में जमा होता है। ... शुभभावना के बजाये और कोई भी भावना है तो यह पाप का खाता

जमा होता है क्योंकि यह भी दुख देना है।'' अ.बापदादा 3.12.78

''बाप (परमात्मा) कर्म-अकर्म-विकर्म की गुह्य गति का ज्ञान देते हैं। अगर बाप की श्रीमत पर चलते रहें तो कब विकर्म न हो।'' सा.बाबा 1.10.97 रिवा.

''बाबा हमेशा कहते मांगो मत। ... दाता के बच्चे हो ... और किससे लेंगे तो उनकी याद आती रहेगी। ... औरों से मांगो मत। नहीं तो देने वाले को भी नुकसान पड़ जाता है क्योंकि वह शिवबाबा के भण्डारे में नहीं दिया। देना चाहिए शिव बाबा के भण्डारे में।'' सा.बाबा 25.1.72 रिवा.

''बुरा काम हुआ तो फौरन बताओ तो आधा माफ हो जायेगा। ऐसे नहीं कि मैं कृपा करूँगा। क्षमा वा कृपा पाई की भी नहीं होगी। सबको अपने आपको सुधारना है। बाप की याद से विकर्म विनाश होंगे और पास्ट का भी योगबल से कटता जायेगा।''

सा.बाबा 5.5.05 रिवा.

''कर्म और कर्म के फल के बन्धन में फंसने के कारण कर्म-बन्धनी आत्मा अपनी ऊंची स्टेज को पा नहीं सकती है। ...ज्ञानस्वरुप होने के बाद वा मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिवान होने के बाद अगर कोई ऐसा कर्म जो योगयुक्त नहीं है वह कर लेते हो, तो इस कर्म का बन्धन अज्ञान काल के कर्म-बन्धन से पदमागुणा ज्यादा है। ... इसलिए इसमें भी अन्जान नहीं रहना है कि यह छोटी-छोटी गल्तियां हैं, ये तो होंगी ही।'' अ.बापदादा 20.5.72

''जो विकर्म किये हैं, उनकी सज़ा कर्मभोग के रूप में भोगनी ही पड़ती है। कर्मभोग अन्त तक भोगना ही है, उसमें माफी नहीं मिल सकती है। ड्रामा अनुसार सब होता है। क्षमा आदि होती ही नहीं। सब हिसाब-किताब चुक्तू करना ही है।''

सा.बाबा 25.6.05 रिवा.

ईर्ष्या-द्वेष एक मानसिक विकर्म है, जिसका फल आत्मा को मानसिक दुख-अशान्ति के रूप में भोगना ही पड़ता है। यदि कोई ईर्ष्या-द्वेष की भावना से यज्ञ का हित समझकर भी किसी आत्मा के साथ व्यवहार करता है तो भी उसको अपनी ईर्ष्या-द्वेष का फल मानसिक दुख-अशान्ति के रूप में भोगना ही पड़ता है,

परम सुख अनुभव करते हैं और समय पर उसको सहज त्याग देने से मृत्यु-दुख से भी बच जाते हैं। ऐसी ही स्थिति व्यक्तियों के सम्बन्ध में भी है। उनमें भी सब पार्ट अनुसार मिलते हैं और विछुड़ते हैं, पार्ट अनुसार कोई मित्र बनता है तो वही व्यक्ति पार्ट आने पर शत्रु बन जाता है। वास्तव में इसमें कोई हमारा मित्र या शत्रु नहीं है, अपना-पराया नहीं है, सब पार्ट बजाने के लिए मिलते और बिछड़ते हैं। पार्ट बजाने के लिए ही कर्मों अनुसार उनके साथ हमारे हिसाब-किताब बनते हैं और चुकता होते हैं।

वास्तव में मृत्यु तो इस विश्व-नाटक में सबसे अच्छी घटना है, जो आत्माओं के लिए वरदान है परन्तु अज्ञानता के वशीभूत आत्मा के लिए वह अभिषाप हो जाती हैं क्योंकि आत्मा उस समय दुख का अनुभव करती है। मृत्यु और जन्त तो आत्मा को पार्ट के अनुसार एक वस्त्र उतार कर नया धारण करने के लिए एक साधन मात्र हैं। गीता में भी इस सम्बन्ध में एक बहुत सुन्दर श्लोक है। ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा के द्वारा दिये गये इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा और आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर उनकी मधुर याद के सफल अभ्यास द्वारा आत्मा मृत्यु पर विजय पा सकती है।

वास्तविकता यह है कि सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक आत्मा और समग्र विश्व की उतरती कला होती है, इसलिए हर आत्मा का अगला जन्म उतरती कला का होता है और द्वापर से लेकर आत्मायें अनेकानेक विकर्म या पाप कर्म ही करती आती हैं, इसलिए शरीर छोड़ते समय आत्माओं को अपने कुछ कर्मों का हिसाब-किताब कर्मभोग या दण्ड के रूप में मृत्यु के समय भोगना पड़ता है और भविष्य जन्म उतरती कला का होने के कारण तथा वर्तमान देह और दैहिक सम्बन्धों में लगाव होने के कारण आत्मा को देह त्याग के समय दुख होता है। भले ही अज्ञानी आत्माओं को पता नहीं होता है कि हमारा अगला जन्म उतरती कला है परन्तु जाने-अन्जाने उनको भी उसका आभास अवश्य होता है। इस मृत्य-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त होने का एकमात्र साधन यथार्थ ज्ञान की धारणा

उसने परमात्मा पर दृढ़ निश्चय और विश्वास रखा, बाबा से रूह-रुहान करते हुए सो गई तो अव्यक्त बापदादा ने स्वप्न में आकर उसको दृष्टि दी और उसके शरीर पर हाथ फेरा और वह जब जागी तो 75 प्रतिशत उसके कर्मभोग का निदान हो गया। ऐसे अनेक अनुभव हैं परन्तु इसके लिए परमात्मा पर दृढ़ विश्वास अटल निश्चय अति आवश्यक है।

कर्मभोग, कर्मयोग और मृत्यु

कर्मयोग के द्वारा कर्मभोग और मृत्यु पर विजय

जन्म और मृत्यु तो इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाने का मूलाधार हैं। आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है, जिसका आधार लेकर आत्मा इस विश्व-नाटक पर पार्ट बजाती है। कर्मयोग का मूल है अपने और परमात्मा के मूल स्वरूप को पहचान कर, देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा की मधुर याद में स्थित होना। जब आत्मा इस स्थिति में होती है तो उसको न मृत्यु-भय होता है और न ही मृत्यु आने पर मृत्यु-दुख की महसूसता होती है। उसके लिए मृत्यु तो एक वस्त्र बदलना होता है।

इस विश्व-नाटक में किसी भी वस्तु पर किसी एक व्यक्ति का अधिकार नहीं है। इसमें सारी सम्पत्ति सार्वजनिक है और हर आत्मा को उसके पार्ट बजाने केलिए मिलती है और जब पार्ट पूरा हो जाता है तो उसको छोड़ना ही पड़ता है और दूसरे पार्ट के अनुसार दूसरी साधन-सम्पत्ति मिलती है। इस एक जीवन में भी नित्य परिवर्तन होता रहता है परन्तु पार्ट बजाने के लिए अस्थाई मिली हुई साधन-सम्पत्ति को अपना समझ लेते हैं, उनको वह सब समय पर छोड़नी तो पड़ती ही है परन्तु उनको उसके वियोग का दुख उनको अवश्य भोगना होता है, जो मृत्यु-दुख के रूप में अनुभव होता है। जो विश्व-नाटक के इस गुह्य रहस्य को समझ लेते हैं, वे नष्टोमोहा और साक्षी होकर पार्ट बजाने से इस जीवन का सुर-दुर्लभ

भले उसने यज्ञ के हित के लिए जो कार्य किया, उसका अच्छा फल भी उसको मिलेगा।

''एक का पदम देने की विधि इस समय की है। बाप भी अन्त में हिसाब-किताब चुक्तू करने वाले अपने साथी से काम लेंगे। ... फिर हिसाब-किताब शुरू हो जायेगा। ... बाप भोलानाथ तो है लेकिन महाकाल भी है।''

अ.बापदादा 14.12.87

''यहाँ उस रीति से माफी नहीं लेनी होती। महसूसता की विधि ही माफी है। दिल से महसूस करना ... बिना विधि के सिद्धि नहीं मिलेगी।'' अ.बापदादा 14.12.87

''बाप आकर बुद्धि का ताला खोलते हैं। ताला उनका खुलेगा, जो श्रीमत पर चलने लग पड़ेंगे और पतित-पावन बाप को याद करेंगे। बाप ज्ञान भी देते हैं और याद भी सिखलाते हैं।'' सा.बाबा 31.8.05 रिवा.

''सिर्फ लकीर के ऊपर लकीर खींच रहे हो। ड्रामा की लकीर खींची हुई है, नई लकीर नहीं खींच रहे हो, जो सोचो कि पता नहीं सीधी होगी या नहीं। कल्प-कल्प की बनी हुई प्रारब्ध को सिर्फ बनाते हो क्योंकि कर्मों के फल का हिसाब है। ... यह है अटल निश्चय।'' अ.बापदादा 11.4.86

''हर कर्म में श्रेष्ठ और सफल रहना - इसको कहते हैं नॉलेजफुल। शरीर की भी नॉलेज और आत्मा की भी नॉलेज। दोनों नॉलेज हर कर्म में चाहिए।''

अ.बापदादा 11.4.86

''किसी की बुरी बात को समझना अलग चीज है लेकिन स्वयं में वा अपने चित्त पर, अपनी बुद्धि में, अपनी वृत्ति में, अपनी वाणी में दूसरे की बुराई को बुराई रूप में धारण नहीं करना है।'' अ.बापदादा 21.11.92

''अभी कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान मर्ज हो गया है, इसलिए अलबेलापन है। ... आप लोगों की अपनी स्थिति तो न्यारी और प्यारी है लेकिन दूसरों की बातों में समय तो देना पड़ता है।... यही समय लाइट-हाउस माइट-हाउस बन वायब्रेशन्स फैलाने में जाये तो क्या हो जायेगा?'' अ.बापदादा 21.11.92 दादियों से

''अगर किसी की कोई बुराई चित्त पर है तो उसका चित्त सदा प्रसन्नचित्त नहीं रह सकता और चित्त पर धारण की हुई बातें वाणी में जरूर आयेंगी। ... लेकिन कर्मों की गति का गुह्य रहस्य सदा सामने रखो।'' अ.बापदादा 21.11.92

''कर्मों का यह पक्का नियम है अथवा कर्मों की फिलॉसाफी है कि आज आपने किसकी ग्लानि की तो वह आपकी कल दुगुनी ग्लानि करेगा। ... तो कर्मों की गति क्या हुई? बुराई लौटकर कहाँ आई?'' अ.बापदादा 21.11.92

''कर्मों की गहन गति क्या हुई? ... कई कहते हैं - हमने किसको कहा नहीं लेकिन वे कह रहे थे तो मैंने भी हाँ में हाँ कर दिया। ... हाँ में हाँ मिलाना, यह भी कर्मों की गति के प्रमाण पाप में भागी बनना है।'' अ.बापदादा 21.11.92

''यह छोटे-छोटे सूक्ष्म पाप श्रेष्ठ सम्पूर्ण स्थिति में विघ्नरूप बनते हैं ... ये अति सूक्ष्म व्यर्थ कर्म बुद्धि को, मन को ऊंचा अनुभव करने नहीं देते। ... अल्पकाल के मनमौजी नहीं बनो, सदाकाल की रुहानी मौज में रहो। ... कर्मों की गुह्य गति के ज्ञाता बनो।'' अ.बापदादा 21.11.92

''यह है इन्द्र सभा। इन्द्र शिवबाबा है, जो ज्ञान वर्षा बरसाते हैं। ... इस सभा में कोई भी विकार में जाने वाले को नहीं ला सकते हो ... लाते हैं तो बहुत भारी सज़ा मिल जाती है।'' सा.बाबा 21.7.06 रिवा.

कर्म का फल तो हर आत्मा को मिलता ही है, यह इस विश्व-नाटक का अनादि नियम है परन्तु जो आत्मा जानते हुए, परमात्मा के मना करने पर भी कोई गलत कर्म करता है, उसके लिए ट्रिबुनल बैठती है और उसका कई गुणा दण्ड मिलता है। जिसके लिए बाबा ने कई बार कहा है कि ट्रिबुनल उन बच्चों के लिए बैठेगी, जिनको बाबा ने ज्ञान दिया है, सावधान किया है फिर भी वे विकर्म करते हैं, बाप का नाम बदनाम करते हैं। बाबा ने ये भी कहा है कि उस समय धर्मराज ये सब साक्षात्कार करायेगा कि तुमको ब्रह्मा द्वारा अमुख रूप से, अमुख स्थान पर सावधान किया, फिर भी तुमने पाप कर्म किये, अब उन कर्मों की सज़ा खानी ही पड़ेगी। कर्म के विधि-विधान अनुसार विधान को जानते हुए विकर्म करना,

तब ही हुआ, जब परमात्मा के ऊपर छोड़ा और उसकी प्रेरणा अनुसार या उसने जो मुरली आदि में श्रीमत दी है, उसके अनुसार पुरुषार्थ किया। जब बाबा के ऊपर छोड़ा तो बाबा ने ड्रामा की याद भी दिलाई और इस सत्य का अनुभव कराया कि तुम साक्षी हो जाओ, जो सम्भव हो वह पुरुषार्थ करते रहो परन्तु बाबा को विशेष याद करो, उसके लिए चिन्तित या परेशान नहीं हो और जब उस स्थिति में रहे तो सहज समाधान हो गया। बाबा ने आभास कराया कि ये समस्यायें तो पाई-पैसे की हैं और वर्तमान जगत में सामान्य हैं, ये तो आयेंगी भी और जायेंगी भी, इनसे परेशान होने या चिन्ता करने से इनका निदान नहीं होगा, इसलिए इनके लिए चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है अपने मूल लक्ष्य को ध्यान में रखकर अभीष्ट पुरुषार्थ करने की। इसलिए तुम अपने मूल लक्ष्य को ध्यान में रखकर अभीष्ट पुरुषार्थ करो, उसमें ही जीवन की सफलता है। समस्याओं और कर्मभोग में तो एक जायेगा, दूसरा आयेगा, इसमें जाने की अति खुशी और आने का ग़म नहीं होगा तब ही अपने अभीष्ट लक्ष्य के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकोगे और इस ब्राह्मण जीवन का सच्चा सुख अनुभव कर सकोगे। इस सम्बन्ध में विभिन्न भाई बहनों के लेख ज्ञानमृत, वर्ल्ड रिन्युअल आदि पत्रिकाओं में समय-समय पर आते रहते हैं, जिनको पढ़ने से भी कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय के विषय में समझ सकते हैं और उनसे प्रेरणा ले सकते हैं कि कैसे परमात्मा हमको कर्मभोग से मुक्त होने में सहयोग करता है।

इस ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य ही देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर एक विदेही बाप को याद करना और उनकी याद में सहज देह का त्याग करना। जब देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास करेंगे तो कर्मभोग या तो आयेगा ही नहीं और पूर्व कर्मों के फलस्वरूप आयेगा भी तो इस पुरुषार्थ से वह हल्का हो जायेगा और सहज उससे मुक्ति मिल जायेगी।

इस सम्बन्ध में अफ्रीका एक समर्पित बहन ने बहुत सुन्दर अनुभव सुनाया कि कैसे उसको कर्मभोग आया, जिससे उसको असहनीय वेदना हो रही थी परन्तु

कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय का अनुभव

सर्वशक्तिवान परमात्मा के द्वारा रचे इस ज्ञान-यज्ञ में प्राय: सभी आत्माओं को ये अनुभव है कि कैसे कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय होती है और कर्म-बन्धन से छुटकारा होता है, भले ही कोई उन अनुभवों को वर्णन कर पाते हैं या करते हैं और कोई नहीं भी कर पाते हैं या करते हैं। परन्तु जो वर्णन करते हैं, उनसे औरों को भी अपने इस राजयोग या कर्मयोग पर निश्चय और विश्वास होता है कि जैसे अन्य हठयोगों आदि से कर्मभोगों पर अल्पकाल के लिए विजय पायी जा सकती है, वैसे परमात्मा के द्वारा सिखाये इस कर्मयोग के द्वारा भविष्य में तो निरोगी काया और मधुर सम्बन्ध मिलते ही हैं परन्तु वर्तमान में भी इससे कर्मभोग और कर्म-बन्धन पर विजय होती है, उनसे मुक्ति पायी जा सकती है। इस सत्य को जानने से ब्राह्मण आत्मायें जो अन्य हठयोग आदि सिखाने वाली यथाशक्ति सम्पन्न आत्माओं या तन्त्र-मन्त्र-जन्त्र वाली अल्पज्ञ आत्माओं के पास भटकती हैं या उनसे अपने कर्मभोगों से या कर्म-बन्धनों से मुक्ति पाने की आशा-आकांक्षा रखती हैं, वह न रखकर इस कर्मयोग के सफल अभ्यास से अपने कर्मभोगों और कर्म-बन्धनों पर विजय पाने का सफल पुरुषार्थ करेंगे और आशा ही नहीं पूर्ण निश्चय और विश्वास है कि जो दृढ़ निश्चय और अटल विश्वास के साथ इसका अभ्यास करेंगे, वे इसमें अवश्य ही सफल होंगी।

अपना तो अनेक बार का ऐसा अनुभव है कि जब कोई कर्मभोग आया और उससे निदान के लिए अपने अनुसार अनेक प्रकार से पुरुषार्थ करते रहे, डाक्टरों आदि के पास गये तो भी उसका निदान नहीं हुआ या कोई कार्य उलझ गया और उसके सुधार के लिए अनेक प्रकार के उपाय किये, अनेक जानकार व्यक्तियों से सम्पर्क किया परन्तु वह ठीक नहीं हुआ या समस्या समाधान नहीं हुई परन्तु अन्त में थककर परमात्मा पर छोड़ दिया और योग का उसके लिए विशेष अभ्यास किया तो उस कर्मभोग का निदान हो गया या समस्या का समाधान हो गया। भले उसमें कोई न कोई व्यक्ति या डाक्टर निमित्त बना परन्तु उसका निदान

परमात्मा के मना करने पर भी विकर्म करना, उसकी सज़ा अधिक मिलती है, यह राज़ भी ड्रामा में नूँधा हुआ है कि ऐसे कर्मों का अन्त समय साक्षात्कार होता है, जिससे पश्चाताप की महसूसता बढ़ जाती है।

''बाबा का बनकर और फिर बाबा के आगे जाकर सज़ा खायें, यह तो बड़ी दुर्गति की बात है। अभी याद की यात्रा में नहीं रहेंगे तो फिर बाप के आगे सज़ा खाने के समय बहुत लज्जा आयेगी।'' सा.बाबा 8.11.05 रिवा.

''शरीर तो जड़ है, उसमें जब चैतन्य आत्मा प्रवेश करती है, उसके बाद गर्भ में सज़ा खाने लगती है। आत्मा सज़ा खाती है। सज़ायें भी कैसे खाती है? भिन्न-भिन्न शरीर धारण कर जिन-जिन को जिस रूप से दुख दिया है, वह साक्षात्कार करते जाते हैं और दण्ड मिलता जाता है। त्राहि-त्राहि करते हैं, इसलिए गर्भ जेल कहते हैं। ड्रामा कैसा अच्छा बना हुआ है।'' सा.बाबा 19.5.72 रिवा.

''जन्म-जन्मान्तर का बोझा सिर पर है। साक्षात्कार कराते सज़ा देते जायेंगे। बहुत सज़ायें हैं, जिनका पारावार नहीं। एक-एक जन्म के पापों का साक्षात्कार कराकर सज़ा देते हैं। वह तो जैसे जन्म-जन्मान्तर की सज़ायें हो गई। होता बिजली मुआफिक है परन्तु उसकी भासना ऐसी होती है जैसे कि सेकेण्ड में हजारों वर्ष की सज़ा खाते हैं।'' सा.बाबा 5.12.73 रिवा.

''तुम्हारे लिए तो ट्रिब्युनल बैठेगी। खास उन बच्चों के लिए जो सर्विस लायक बनकर फिर ट्रेटर बन जाते हैं। ... दान देकर फिर बहुत खबरदार रहना है। फिर ले लिया तो सौगुणा दण्ड पड़ जाता है।'' सा.बाबा 3.11.04 रिवा.

''बाप कहते हैं - एक-दो से सेवा मत लो। कोई अहंकार नहीं आना चाहिए। दूसरे से सेवा लेना, यह भी देह-अहंकार है। बाबा को समझाना तो पड़े ना। नहीं तो जब ट्रिबुनल बैठेगी तब कहेंगे, हमको पता थोड़ेही था कायदे-कानून का। इसलिए बाप समझा देते हैं, फिर साक्षात्कार कराये सज़ा देंगे।'' सा.बाबा 5.3.2001 रिवा.

''श्रीमत पर न चलते तो नाम बदनाम करते हैं। भल बच्चे हैं परन्तु बच्चों को ऐसे थोड़ेही छोड़ेंगे। हाँ ट्रिबुनल बैठती है बच्चों को तो और ही कड़ी सज़ा मिलती है

क्योंकि धोखा देते हैं। ... बाप तो उस समय मुस्कराते हैं। कहते हैं इनको कुल्हाड़ी से टुकड़ा-टुकड़ा करो। फाँसी की सज़ा देने वाले रोते हैं क्या? ऐसे थोड़ेही बच्चों पर दया कर देंगे।'' सा.बाबा 22.11.73 रिवा.

''देखना हाथ उठाया है, फिर धर्मराजपुरी में भी यह हाथ उठेगा। बाप का साथी धर्मराज भी देख रहा है कि सभी ने हाथ उठाया है। ... स्व-परिवर्तन करना, दूसरे के परिवर्तन की चिन्ता नहीं करना।'' अ.बापदादा 15.4.92

''बाप आकर पढ़ाते हैं, उनकी भी इज्ज़त नहीं रखते तो सज़ा जरूर मिलेगी। सबसे कड़ी सज़ा उनको मिलेगी, जो विकार में जाते हैं या शिवबाबा की बहुत ग्लानि कराने के निमित्त बनते हैं।'' सा.बाबा 13.01.06 रिवा.

''जो बच्चे बाप का बनकर डिस्सर्विस करते हैं, उनके लिए ट्रिब्युनल बैठती है। भक्ति मार्ग में इतनी कड़ी सज़ा नहीं मिलती है परन्तु बाप का बनकर फिर डिस्सर्विस करते हैं तो बाप का राइटहेण्ड है धर्मराज। ... यह कर्मो के अनुसार ड्रामा बना हुआ है। जो जैसा कर्म करता है, वैसा फल पाता है।''

सा.बाबा 22.9.06 रिवा.

''मेरी निन्दा कराते हैं, उनके लिए ट्रिब्युनल बैठती है। बाप से प्रतिज्ञा कर फिर डिस्सर्विस करेंगे तो कड़ी सज़ा मिलेगी। ... गाया हुआ है - सतगुरु का निन्दक ठौर न पाये।'' सा.बाबा 22.9.06 रिवा.

''कोई भी कर्म करते हो तो पहले त्रिकालदर्शी बनकर फिर कोई कर्म करो। ... पहले परिणाम को सोचो फिर कर्म करो तो सदा श्रेष्ठ परिणाम निकलेगा। ... त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होकर कर्म करने से कब कोई व्यर्थ कर्म नहीं होगा, साधारण नहीं होगा।'' अ.बापदादा 22.1.90 पार्टी

''त्रिकालदर्शी के स्मृति की स्थिति रूपी तख्त पर स्थित होकर कोई भी कर्म करो, फिर कर्म फल नहीं देवे, यह हो नहीं सकता। बीज अगर शक्तिशाली होगा तो फल अवश्य मिलेगा। ... अभ्यास में कभी भी अलबेले नहीं बनो।''

अ.बापदादा 22.1.90 पार्टी

साथ करना।

परमात्मा की याद में उपचार करने वाले व्यक्ति या डाक्टर के विषय में टचिंग होती है, जो हमको उससे निदान दे सकता है, इसलिए उससे श्रृद्धा-भावना के उपचार कराना।

योग में कोई उपचार टच हो सकता है, उसे करना।

योग में अन्य व्यक्तियों के साथ अपने व्यवहार में परिवर्तन करना।

किसी विशेष कर्मभोग के निदान के लिए उसके सम्बन्ध में बाबा के द्वारा उच्चारे विशेष महावाक्यों का अध्ययन और निश्चयपूर्वक मनन-चिन्तन।

ईश्वरीय सर्विस में विशेष रुचि से बिजी रहना।

इस सम्बन्ध में दूसरों के अनुभवों का पठन-पाठन करना।

आदि आदि।

''बुद्धि को अपनी तरफ क्या खींचता है, क्यों खींचता है? बोझा है कोई, जो अपनी तरफ खींचता है? हल्की चीज कभी भी नीचे नहीं आयेगी, वह चढ़ती कला में ही होगी। किसी भी प्रकार का बोझ है तो कितना भी ऊपर करना चाहें तो ऊपर नहीं जायेगा, बल्कि नीचे ही आयेगा। ऐसे ही सारे दिन में मन्सा, वाचा, कमर्णा में, सम्पर्क और सेवा - इन बातों से चेक करो।''

अ.बापदादा 4.2.75

''सिर्फ घर को याद करेंगे तो पाप विनाश नहीं होंगे। बाप को याद करेंगे तो पाप विनाश हो और तुम अपने घर चले जायेंगे।''

सा.बाबा 6.5.05 रिवा.

''इस शरीर को छोड़कर जाना है, इसलिए इस दुनिया को भी भूल जाना है। यह भी एक अभ्यास है। जब शरीर में कोई खिटपिट होती है तो कोशिश कर शरीर को भी भूलना होता है। भूलने का अभ्यास सुबह को सहज होता है। इसमें जास्ती ज्ञान की तो दरकार नहीं रहती है।''

सा.बाबा 6.07.09 रिवा.

है और जब हम उसे भूल जाते हैं तो उसका निदान सहज होता, उसमें सुधार (healing) सहज होती है।

विशेष योग का अभ्यास करना, जिससे कर्मभोग या कर्म-बन्धन से मुक्त होने में परमात्मा की मदद मिलती है, जिससे उससे सहज ही मुक्ति पायी जा सकती है।

विशेष मुरली का अध्ययन करना क्योंकि बाबा से समयानुसार मुरली में ऐसी प्वाइन्ट या विधि सहज मिल जाती है, जिससे कोई अपने कर्मभोग या कर्म-बन्धन से सहज मुक्त हो जाता है। ड्रामा अनुसार यह भी एक विधि का विधान है।

विशेष ज्ञान का चिन्तन करना, जिससे कर्म और फल के राज़ को जानने से सहज कर्मभोग से मुक्त हो सकते हैं क्योंकि हर कर्मभोग या कर्म-बन्धन के लिए हर आत्मा के अपने ही कर्म ही मूल कारण अर्थात् वह स्वयं ही उत्तरदायी है। परन्तु अज्ञानतावश दूसरों को उत्तरदायी ठहराकर अपने कर्मभोग या कर्म-बन्धन को आपही बढ़ाते हैं क्योंकि दूसरों को निमित्त समझने से उसकी शारीरिक और मानसिक वेदना बढ़ जाती है और दूसरों के साथ के सम्बन्धों में और विकृति आती है, जो नये कर्मभोग या कर्म-बन्धन के कारण बन जाते हैं।

जहाँ वेदना होती है, परमात्मा की याद में स्थित होकर मन-बुद्धि को वहाँ एकाग्र करना और निश्चय, श्रृद्धा-विश्वास के साथ संकल्प करना की इससे हमारी वेदना दूर हो रही है। इससे भी वेदना का निदान होता है।

निराकार बाप को याद करना और संकल्प करना कि उसकी किरणें वेदना के स्थान पर पड़ रही हैं, जो वेदना का निदान कर रही हैं।

सम्बन्ध के कारण कोई कर्मभोग आया है तो शिवबाबा की याद में उस आत्मा को इमर्ज करके उसको योगदान करना।

अव्यक्त बापदादा का वरदानी हाथ अपने सिर पर अनुभव करना और उसकी शक्ति हमको हमारे कर्मभोग से मुक्त कर रही है।

कर्मयोग से हम अपने कर्मभोग से डायरेक्ट भी मुक्त हो सकते हैं।

योग में परमात्मा के द्वारा जो उपचार टच हो, उसे श्रृद्धा-भावना और निश्चय के

कर्मभोग / कर्मभोग अर्थात् दैहिक एवं मानसिक व्याधियाँ और उनका कारण

तन-मन की आरोग्यता में हमारे संकल्पों का महत्व

बाबा ज्ञान का सागर है और विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञाता होने के कारण हमारे अनेक जन्मों की कर्म-कहानी को भी जानता है। हमारी दैहिक और मानसिक व्याधियों का कारण जानते हुए हम उससे कैसे सहज मुक्त हो सकें, उसके विषय में भी बाबा ने बताया है, उस अनुसार हम पुरुषार्थ करके सहज उनसे मुक्त हो सकते हैं। यथार्थ पुरुषार्थ अर्थात् कर्मयोग के द्वारा शूली जैसा कर्मभोग काँटा बन जाता है।

बाबा ने ये भी बताया है कि अनेक जन्मों के विकर्मों के फलस्वरूप मानसिक या दैहिक व्याधि का आना अवश्य सम्भावी है क्योंकि अभी आत्मा के प्रकृति और आत्माओं के साथ के सर्व हिसाब-किताब चुक्ता होते हैं। कर्मभोग की वेदना से मुक्त होने का सहज उपचार वैद्यराज परमात्मा ने हमको बताया है, जिससे हम उसकी वेदना से मुक्त हो सकते हैं। सर्व मानसिक और दैहिक व्याधियों की वेदना से मुक्त होने का एकमात्र सफल उपचार है देह से न्यारे अपने मूल स्वरूप अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाना क्योंकि आत्मिक स्वरूप सर्व व्याधियों से मुक्त है। बहुत समय पहले से जब कर्मभोग की वेदना नहीं है, उस समय का देह से न्यारे होने का अभ्यास ही कर्मभोग के समय उसकी वेदना से राहत देता है, वेदना या कर्मभोग के समय ये अभ्यास सम्भव नहीं है।

वास्तविकता को देखा जाये तो व्याधि का आना और वेदना की महसूसता ही हमको उसके उपचार के लिए बाध्य करती है, जो बाध्यता अनेक आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब को चुक्ता करने का साधन है। सबके साथ के हिसाब-किताब चुक्ता होने के बाद ही उसका पूर्ण निदान सम्भव है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो सर्व आत्माओं के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना के वायब्रेशन देना भी एक सफल उपचार है, हिसाब-किताब चुक्ता करने का पुरुषार्थ है।

बाबा ने ये भी कहा है - ये कर्मभोग हमारे कर्मों का ही फल है और हमको ही उसको चुक्ता करना है - इस सत्य का ज्ञान बुद्धि में होगा तो भी कर्मभोग की वेदना कम हो जायेगी। जब दूसरों को उसका कारण समझते हैं या ऐसे ही कर्मभोग आ गया, ये अभिधारणा होती है तो थोड़ा कर्मभोग भी बड़ा महसूस होता है। कर्मभोग की महसूसता में कर्मभोग के स्वरूप से भी उसके प्रति हमारी मानसिक स्थिति का विशेष महत्व है। बाबा ने हमको कर्मभोग का कारण और निवारण दोनों बताये हैं।

हमारे तन के आरोग्यता में, रोगों में और उनके निदान में हमारे मन के संकल्पों और हमारी स्थिति का बड़ा महत्वपूर्ण प्रभाव है। जैसे हमारे संकल्प होते हैं, उस अनुसार शरीर की ग्रन्थियों से रस-स्राव होते हैं, जो हमारे दैहिक स्वाथ्य के कारण भी बनते हैं और अनेकानेक रोगों के निदान का आधार भी बनते हैं। जब मनुष्य भय-चिन्ता, राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा, दुख-अशान्ति, काम-वासना आदि से ग्रसित होता है तो उस समय के संकल्पों के प्रभाव से ग्रन्थियों से जो रस-स्राव होता है, वह अनेकानेक रोगों का कारण बनता है और जब मनुष्य विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान, प्रभु-स्मृति, योग-साधना के द्वारा आत्मिक शक्ति से सम्पन्न होता है तो वह निर्भय-निश्चिन्त, शान्त, पवित्रता, आत्मिक-प्रेम आदि से भरपूर होता है, तो आत्मा को अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है और उस समय उसकी ग्रन्थियों से जो रस-स्राव होते हैं, उनसे अनेकानेक रोगों का निदान होता है। परन्तु इस सत्य को भी भूलना नहीं चाहिए कि यह जीवन अनेक जन्मों के कर्मों के फलस्वरूप अस्तित्व में आया है और इस कल्प में यह अन्तिम जन्म है, जिसमें हमारे अनेक जन्मों में अनेक आत्माओं और प्रकृति के साथ के हिसाब-किताब हैं, वे भी पूरे होने हैं और ड्रामा का पार्ट भी है तथा समयानुसार वर्तमान वातावरण में अनेक प्रकार के जो संक्रमण हैं, वातावरण में वृत्तियों का जो संक्रमण है वह भी आत्मा को उसके कर्मों अनुसार प्रभावित करते हैं और दैहिक बीमारियों का कारण बनते हैं। इसलिए किसी व्यक्ति के या अपने जीवन के रोगों आदि को

उनका कर्मयोग से डॉयरेक्ट निदान तो नहीं हो सकता है परन्तु कर्मयोग से उन आत्माओं की वृत्ति में परिवर्तन अवश्य आता है, जिससे उनके साथ के कर्मभोग या कर्म-बन्धन समाप्त होते हैं। यदि डॉयरेक्ट समाप्त हो जाये तो उन आत्माओं के साथ का हिसाब-किताब चुक्ता नहीं हो सकता है और उनके साथ अन्याय हो जायेगा, इसलिए उनका सन्तुष्ट होना भी अति आवश्यक है। ये विश्व-नाटक बड़ा कल्याणकारी और न्यायपूर्ण है।

''वह है साइन्स, तुम्हारी है साइलेन्स। बाप को याद करने से सब रोग खत्म हो जाते हैं। तुम निरोगी बन जाते हो। ... काशी कलवट खाते हैं। हाँ, जो निश्चयबुद्धि होकर करते हैं, उनके विकर्म विनाश होते हैं, फिर नये सिर हिसाब-किताब शुरू होगा।''

सा.बाबा 23.07.09 रिवा.

''योग में रहेंगे तो दर्द आदि भी कम होगा। योग नहीं तो बीमारी आदि कैसे छूटे? ख्याल करना चाहिए - मात-पिता जो नम्बरवन पावन बनते हैं, वे ही फिर सबसे जास्ती नीचे उतरते हैं। उनको तो बहुत भोगना भोगनी पड़े परन्तु योग में रहने के कारण बीमारी हटती जाती हैं। नहीं तो इनको सबसे जास्ती भोगना होनी चाहिए। बहुत खुशी में रहते हैं - बाबा से हम स्वर्ग के सुख घनेरे लेते हैं।''

सा.बाबा 22.11.08 रिवा.

कर्मयोग से कर्मभोग और कर्म-बन्धन पर विजय पाने का पुरुषार्थ

कर्मभोग या कर्म-बन्धन पर विजय पाने का मूल पुरुषार्थ है देह और देह की दुनिया को भूलना और एक परमात्मा की मधुर याद में रहना। जो इस देह और देह की दुनिया को भूलने का सफल पुरुषार्थ करने में सफल होता है, वह सहज ही अपने किसी भी कर्मभोग पर या कर्म-बन्धन से मुक्त हो जाता है, उस पर विजय पा लेता है।

योग में परमात्मा के प्रति समर्पणता और मन-बुद्धि को देह और देह की दुनिया से हटाकार उस कर्मभोग को भुला देना क्योंकि अशरीरी होने से कर्मभोग भूल जाता

का खाता जमा होता रहता है, संगमयुग पर कर्मभोग के रूप में, कर्म-बन्धन के रूप में पूरा करना ही होता है, जिसको सहज पूरा करने के लिए बाबा ने कर्मयोग का ज्ञान दिया है अर्थात कर्मयोग के अभ्यास द्वारा भी आत्मा कर्मभोग और कर्म-बन्धन का खाता खत्म कर सकती है और श्रेष्ठ कर्म-सम्बन्ध एवं श्रेष्ठ कर्मफल का खाता जमा कर सकती है।

* यथार्थ रीति ज्ञान को धारण करने और परमात्मा की याद से मानसिक कर्मभोग पर सहज विजय पा सकते हैं।

* कर्मयोग के द्वारा आत्मा कर्मभोग अर्थात् कर्मभोग और कर्म-बन्धन से मुक्त हो सकती है। कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय पाने का विधि-विधान है कि आत्मा डायरेक्ट अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर अर्थात् देह से न्यारी होकर उसकी दैहिक और मानसिक वेदना से मुक्त हो जाये। दूसरा परमात्मा के साथ योगयुक्त होने से परमात्मा द्वारा कोई औषधि या विधि-विधान बुद्धि में आ जाये, जिसके प्रयोग से आत्मा उससे मुक्त हो जाये। तीसरी बात किसी व्यक्ति के विषय में टच हो जाये, जिसके सम्पर्क में आने से या उसके सहयोग से उस वेदना से मुक्त हो जाये। ये अटल सत्य है कि यदि आत्मा का परमात्मा के साथ योग सही है तो आत्मा कर्मभोग की वेदना से मुक्त अवश्य हो जायेगी। यथाशक्ति आत्मायें भी अपनी आत्मिक शक्ति से अपने अनेक रोगों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं और अनेक आत्माओं को उनके कर्मभोग से मुक्त कर देते हैं तो परमात्मा तो सर्वशक्तिवान और सर्वज्ञ है, उनके साथ योगयुक्त होने से कर्मभोग या कर्म-बन्धन से मुक्ति न मिले, ये हो नहीं सकता है परन्तु उसमें निश्चय और विश्वास अटल होना अति आवश्यक है। निश्चय में ही विजय समाई है अर्थात् हमको अपने इस कर्मयोग में अटल निश्चय है तो विजय निश्चित है।

जो कर्मभोग प्रकृति के साथ अर्थात् अपनी देह के साथ या बाह्य प्रकृति के साथ की अनियमितताओं के कारण आते हैं, उनका तो कर्मयोग से डॉयरेक्ट निदान हो सकता है परन्तु जिन कर्मभोगों का अन्य आत्माओं के साथ सम्बन्ध है,

देखकर भ्रमित नहीं होना है, अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होना है, आश्चर्यचकित नहीं होना है।

सत्य सदा ही सत्य है। अति आशावान भी नहीं होना है और निराशा को भी जीवन में नहीं लाना है। विश्व-नाटक में देह रूपी वस्त्र बदलना अनिवार्य और स्वभाविक क्रिया है, जिसका कोई न कोई निमित्त कारण तो बनता ही है, इसलिए तमोप्रधान समय के अनुसार बीमारी अर्थात कर्मभोग तो आता ही है और आना ही है। निदान के लिए यथोचित उपचार भी करना ही है और उसको भोगकर या योगबल से चुकता भी करना है। मम्मा-बाबा के उदाहरण हमारे सामने हैं और अनेक मुरलियों में बाबा ने इसके लिए कहा है और ब्रह्मा बाबा का उदाहरण भी दिया है। ब्रह्मा बाबा ने भी अपना अनुभव सुनाया है।

इन्द्रिय सुखों की आकर्षण और भूतकाल का चिन्तन और भविष्य की चिन्ता एवं कर्मभोग की वेदना आत्मा को देह से न्यारे होकर परम सुख की अनुभूति अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के सुख का अनुभव अर्थात् निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि के सुर-दुर्लभ सुख को अनुभव करने नहीं देती है। अमरत्व का अनुभव करने नहीं देती है।

वास्तविकता ये है कि कर्मभोग आदि की दैहिक-मानसिक वेदना ही आत्मा के सुख का आधार है। जिसको दुख का अनुभव नहीं है, वह सुख का अनुभव कर नहीं सकता और जिसने सुख का अनुभव किया है, वही दुख का भी अनुभव कर सकता है क्योंकि यह सुख-दुख का खेल है। सुख-दुख के अनुभव में भी जो जिस सीमा तक सुख का अनुभव करता है, वह उसी सीमा तक दुख का भी अनुभव करता है।

''ब्रह्मा बाप ने त्याग, तपस्या और सेवा लास्ट घड़ी तक साकार रूप में प्रैक्टिकल की। ... सदा अढ़ाई-तीन बजे उठकर स्वयं प्रति तपस्या की, संस्कार भस्म किये तब कर्मातीत बनें, फरिश्ता बनें ... लास्ट तक बिना आधार के तपस्वी रूप में बैठे,

आंखों में चश्मा नहीं डाला। यह सूक्ष्म शक्ति है।''

अ.बापदादा 31.12.05

''बाप जो समझाते हैं, उसको उगारना चाहिए। यह भी बाप ने समझाया है - कर्मभोग की बीमारी उथल खायेगी, माया सतायेगी परन्तु मूँझना नहीं चाहिए। बीमारी में तो मनुष्य और ही भगवान को जास्ती याद करते हैं। ... तुम और सब बातें भूल मुझे याद करो।'' सा.बाबा 18.10.04 रिवा.

''वाह-वाह के गीत गाओ। ब्राह्मण जीवन अर्थात् वाह-वाह, हाय-हाय नहीं। शारीरिक व्याधि में भी हाय-हाय नहीं, वाह-वाह! यह भी बोझ उतरता है। ... मेरा ही हिसाब है! प्राप्ति के आगे हिसाब तो कुछ भी नहीं है।'' अ.बापदादा 30.11.99

''कोई बीमारी वा दुख आदि है तो तुम सिर्फ याद में रहो। यह हिसाब-किताब अभी ही चुक्तू करना है। ... गाया जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं।''

सा.बाबा 27.11.04 रिवा.

''इस समय के इस एक जन्म (पुरुषार्थ का फल) का अनेक जन्मों तक चलता है और वह अनेक जन्मों का (खाता) एक जन्म में खत्म होता है। तो अनेक जन्मों का हिसाब-किताब एक जन्म में खत्म करने के कारण कब-कब वह फोर्स रूप में आता है। ... जब साक्षी होकर देखने लग पड़ते तो यह व्याधि बदलकर खेल रूप में हो जाती है।'' अ.बापदादा 23.3.70

''मुख्य शक्तियाँ हैं - तन की, मन की, धन की और सम्बन्ध की। चारो ही आवश्यक हैं। ... स्व-स्थिति वाला तन का हिसाब-किताब होते भी स्व-स्थिति के कारण स्वस्थ अनुभव करता है। उनके मुख पर, चेहरे पर बीमारी के कष्ट के चिन्ह नहीं रहते। ... बीमारी का वर्णन भी बीमारी की वृद्धि करने का कारण बन जाता है। वह कभी भी बीमारी के कष्ट का अनुभव नहीं करेगा, न दूसरे को कष्ट सुनाकर कष्ट की लहर फैलायेगा।'' अ.बापदादा 29.10.87

''यह पुराना शरीर है, कुछ न कुछ कर्मभोग चलता रहता है। इसमें बाबा मदद करे, यह उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। ... बाप कहेंगे यह तुम्हारा हिसाब-किताब

होती है और यदि होती भी है तो बहुत कम होती है। योगयुक्त न होने से देहाभिमान में रहने से वेदना अधिक होती है। कर्मभोग का अधिक वर्णन करने से भी कर्मभोग बढ़ता है। इसलिए बाबा ने कहा है कर्मभोग का बहुत वर्णन न करो, योग में रहो तो कर्मभोग चला जायेगा।

* कर्मभोग के समय एक परमात्मा ही याद आये तो परमात्मा की मदद मिलती है, यदि उस समय कोई व्यक्ति या सम्बन्धी याद आया तो परमात्मा की मदद मिल नहीं सकती। कर्मयोग का यह अटल विधान है कि परमात्मा की मदद उनको ही मिलती है, जो हर हालत में एक उन पर ही आधारित होते हैं, जिनकी बुद्धि एक परमात्मा के सिवाए और कहाँ भी नहीं जाती है।

* परमात्मा के साथ हमारा सही योग है, उसकी परीक्षा भी अवश्य होती है। परीक्षा में पास होने वाले को ही परमात्मा की मदद मिलती है। जैसे नौधा भक्ति वाले को ही साक्षात्कार होता है।

* कर्मभोग या कर्म-बन्धन में भी बाबा की सेवा करने वाले को बाबा की विशेष मदद भी मिलती है और अन्य आत्माओं की दुआयें भी मिलती हैं, जिससे कर्मभोग या कर्म-बन्धन सहज कट जाता है।

* परन्तु विश्व-नाटक का अनादि-अविनाशी विधि-विधान सदा याद रहे, जो ज्ञान सागर बाबा ने बताया है कि Events can not be changed, but we can change our attitude towards events. विश्व-नाटक के इस सत्य को भी अवश्य ध्यान में रखेंगे तब ही कर्मयोग का सही पुरुषार्थ हो सकेगा और कर्मभोग का निदान होगा, कर्म-बन्धन से मुक्ति मिलेगी।

* सतयुग से लेकर त्रेता के अन्त तक कर्मफल का उपभोग करते, द्वापर से कलियुग तक कर्म करते, उसके कर्मफल का उपभोग करते परन्तु देहाभिमान के कारण विकर्म होते हैं और उनके फलस्वरूप कर्मभोग और कर्म-बन्धन के वशीभूत होकर आत्मा दुख पाती है और सतत आत्मिक शक्ति का ह्रास होता जाता है, साथ-साथ ही अनेक प्रकार के विकर्मों के फलस्वरूप कर्मभोग और कर्म-बन्धन

* विशेष योग अभ्यास करने पर आये हुए कर्मभोग या कर्म-बन्धन से मुक्ति पाने के लिए बाबा कोई युक्ति बुद्धि में टच कर सकता है, जिसको करने से सहज कर्मभोग पर विजय पा लेते हैं या कर्म-बन्धन कट जाता है।
* निश्चय और विश्वास होने और एक परमात्मा पर ही आधारित होने वाले को बाबा अवश्य मदद करता है, उसको कर्मभोग या कर्म-बन्धन से मुक्त होने के लिए कोई न कोई विधि-विधान अवश्य बताता है। इसके लिए -
* कभी-कभी स्वप्नों में भी युक्ति टच कर देता है, जिस युक्ति को अपनाने से आये हुए कर्मभोग या कर्म-बन्धन से मुक्त हो जाते हैं। ऐसा कई भाई-बहनों का अनुभव है।
* स्वप्न या निद्रा में बापदादा आकर कर्मभोग का निदान कर सकता है। कई अनुभव ऐसे हैं, जिनमें निद्रा की स्थिति में स्वप्न में बापदादा आया और उनकी दृष्टि या टच करने से कर्मभोग का निदान हो गया।
* परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर जहाँ कर्मभोग है या वेदना है, वहाँ दृष्टि को केन्द्रित करके वायब्रेशन देने से भी वेदना का या कर्मभोग का निदान होता है।
* जब कर्मभोग या कर्म-बन्धन आया है तो मुरली का विशेष अध्ययन करने से मुरली में कोई न कोई युक्ति मिल जाती है या टच हो जाती है, जिससे कर्मभोग से मुक्ति सहज हो जाती है।
* विशेष योग में बाबा किसी व्यक्ति या डाक्टर को टच कर देता है, जिससे उपचार कराने पर कर्मभोग से मुक्त हो जाते हैं।
* विशेष योग में बाबा कोई दवाई या उपचार भी टच कर देता है, या हो जाता है, जिसको करने से आये हुए कर्मभोग का सहज निदान हो जाता है।
* परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर शुभ-भावना, शुभ-कामना रखने से और जिन आत्माओं के साथ कोई कर्म-बन्धन है, उन आत्माओं को योगदान करने से कर्म-बन्धन सहज कट जाता है।
* योगयुक्त होकर देह से न्यारे होने से कर्मभोग की वेदना की महसूसता नहीं

है। अपनी आप ही मेहनत करो, कृपा माँगो नहीं। जितना बाप को याद करेंगे, इसमें ही कल्याण है।'' सा.बाबा 18.1.05 रिवा.

''जब कर्मभोग का जोर होता है। कर्मेन्द्रियां बिल्कुल कर्मभोग के वश अपने तरफ आकर्षण करें, जिसको कहा जाता है बहुत दर्द है। ... ऐसे समय कर्मभोग को कर्मयोग में परिवर्तन करने वाले, साक्षी हो कर्मेन्द्रियों को भोगवाने वाले जो होते हैं, उनको ही अष्ट रत्न कहा जाता है, जो ऐसे समय विजयी बन दिखाते हैं।''

अ.बापदादा 4.12.72

''इस अलौकिक जीवन में आत्मा और प्रकृति दोनों की तन्दुरुस्ती आवश्यक है। जब आत्मा स्वस्थ है तो तन का हिसाब-किताब वा तन का रोग शूली से से कांटा बन जाता है। ... उसके लिए वरदान अर्थात् दुआ दवाई का काम कर देती है। ... तन की शक्ति आत्मिक शक्ति के आधार पर सदा अनुभव कर सकते हो।''

अ.बापदादा 29.10.87

''बीमारी का वर्णन भी बीमारी की वृद्धि करने का कारण बन जाता है। ... कर्मयोगी परिवर्तन की शक्ति से कष्ट को सन्तुष्टता में परिवर्तन कर सन्तुष्ट रह औरों में भी सन्तुष्टता की लहर फैलायेगा। ... अर्जी डालने वाले कभी भी सदा राजी नहीं रह सकते हैं।'' अ.बापदादा 29.10.87

''निराकारी और साकारी दोनों स्वरुप की स्मृति से स्वत: ही समर्थी-स्वरुप बन जायेंगे अर्थात् हेल्थ, वेल्थ और हैपीनेस का अनुभव हर समय होगा। चाहे शरीर का कर्मभोग शूली से कितना भी बड़े रुप में हो लेकिन सदा अपने को साक्षी समझने से कर्मभोग के वश नहीं होंगे। हर कर्मभोग शूली से कांटे समान अनुभव होगा।''

अ.बापदादा 27.1.76

यथार्थ ज्ञानी कर्मभोग होते भी उसकी वेदना से मुक्त होगा। इसीलिए कहा गया है - Events can't be changed but we can change our attitude towards events. अर्थात् जब यथार्थ ज्ञान होता है और आत्मिक स्थिति होती है तो कर्मभोग होगा परन्तु उसकी वेदना की महसूसता नहीं होगी या कम से कम होगी।

''अशरीरीपन का अभ्यास होने के कारण शूली से कांटा अनुभव होता है और फालो फादर होने के कारण विशेष आज्ञाकारी बनने के कारण प्रत्यक्ष फल के रूप में बाप से विशेष दिल की दुआयें प्राप्त होती है। ... जो कर्मभोग को शूली से कांटा बना देती हैं।'' अ.बापदादा 18.12.87

''जो विकर्म किये हैं, उनकी सज़ा कर्मभोग के रूप में भोगनी ही पड़ती है। कर्मभोग अन्त तक भोगना ही है, उसमें माफी नहीं मिल सकती है। ड्रामा अनुसार सब होता है। क्षमा आदि होती ही नहीं। सब हिसाब-किताब चुक्तू करना ही है।''

सा.बाबा 25.6.05 रिवा.

''शरीर बीमार हो लेकिन शरीर की बीमारी से मन डिस्टर्ब न हो। सदैव खुशी में नाचते रहो तो शरीर भी ठीक हो जायेगा। मन की खुशी से शरीर को भी चलाओ तो दोनों एक्सरसाइज हो जायेंगी। खुशी है दुआ और एक्सरसाइज है दवाई। तो दुआ और दवा दोनों होने से सहज हो जायेगा।'' अ.बापदादा 9.1.83

''बीमारी में भी खुशी से इतना तो कह सकते हो कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बीमारी में ही अवस्था की परख होती है।''

सा.बाबा 21.11.05 रिवा.

''दुनिया वाले डरते हैं और आप और ही निर्भय होते हैं। ... ड्रामा अनुसार यह सभी और ही मजबूत करते हैं। ... बीमारी बापदादा को तो खेल लगता है। जब ब्रह्मा बाप ने क्रास किया है तो आप सबको भी क्रास तो करना ही है। ... ये क्रास करेंगे तो क्रास पर नहीं चढ़ेंगे।'' अ.बापदादा 20.12.92 दादियों से

''तन का प्रभाव मन पर आ गया तो डबल बीमार हो गये। ... कभी भी मन में बीमारी का संकल्प नहीं लाना चाहिए।'' अ.बापदादा 22.12.95

''दवाइयां कलियुग के सीज़न का शक्तिशाली फल है। इसलिए घबराओ नहीं ... इसलिए बीमारी से कभी घबराना नहीं। बीमारी आई और उसको थोड़ा फ्रूट खिला दो और विदाई दे दो।'' अ.बापदादा 22.12.95

काम करती हैं, जिससे पहले तो कोई कर्मभोग आता ही नहीं है और यदि आता भी है तो सहज उसका निदान हो जाता है। कर्मयोग की अभ्यासी आत्मा का स्वभाव शान्त होता है, जिससे कर्म-बन्धन के रूप में आने वाले कर्मभोगों का सहज निदान हो जाता है।

* कर्मयोगी आत्मा की सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना होती है, जिससे उन आत्माओं की दुआयें उस कर्मयोगी आत्मा को मिलती है, जो भी उसके कर्मभोग के निदान में सहयोगी बनती हैं, उनसे उसके कर्मभोग का निदान होता है।

* शरीर में अनेक प्रकार के कर्मभोग अर्थात् आत्मा के मानसिक द्वन्द के कारण होते हैं परन्तु कर्मयोग के अभ्यासी आत्मा में ये द्वन्द नहीं होता है, जिससे पहले तो कोई कर्मभोग आता ही नहीं है और आ जाता है तो सहज उसका निदान हो जाता है।

* कर्मयोग के अभ्यास वाली आत्मा का अपने खान-पान, दिनचर्या, व्यवहार पर नियन्त्रण होता है, जिससे उसको कोई कर्मभोग आता ही नहीं है और पूर्व के कर्मों के फलस्वरूप आता है तो उसका निदान सहज हो जाता है।

* कर्मयोग के सफल अभ्यास वाली आत्मा के वायब्रेशन्स का कर्मभोग के उपचार के लिए सम्पर्क में आने वाले चिकित्सकों पर भी प्रभाव होता है, जिससे उनका मन-बुद्धि भी शान्त और एकाग्र हो जाता है, जिससे उनके द्वारा किया गया उपचार अधिक कारगर होता है। कई ऐसे अनुभव हैं, जिनसे कर्मभोग के उपचार के लिए आने वाले चिकित्सक उसके कर्मयोग से प्रभावित होकर ज्ञानी-योगी बन गये, कईयों के मनोरोगों का निदान हो गया।

* कर्मयोग से कर्मभोग या कर्म-बन्धन पर विजय पाने के लिए निश्चयबुद्धि होना अति आवश्यक है क्योंकि निश्चय में ही विजय समाई होती है। निश्चय और विश्वास होने पर ही बाबा की मदद मिलती है और हमारा योग काम करता है अर्थात् सफल होता है।

विधि-विधान आत्मा को प्रकृति प्रदत्त है, जो शरीर में सदा विद्यमान रहता है और समय पर अपना काम करता है। कर्मयोग की स्थिति में आत्मा शान्त रहती है, जिससे शरीर शान्त रहता है और में वे प्रक्रियायें और विधि-विधान सहज काम करते हैं और कर्मभोग का निदान करते हैं।

* ड्रामा के विधि-विधान अनुसार कल्प पहले भी कर्मभोग आया था, जिसका कर्मयोग के द्वारा निदान हुआ था, इसलिए अभी कर्मयोग की स्थिति में आत्मा को वह विधि-विधान सहज टच होता है और आत्मा सहज उसको कैच कर लेती है, जिसके अनुसार पुरुषार्थ करने से आत्मा अपने कर्मभोग या कर्म-बन्धन से सहज मुक्त हो जाती है। इस सम्बन्ध में बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है कि जब साइन्स वाले 5 हजार वर्ष पहले की आवाज़ को कैच कर लेते हैं तो आप अपने 5 हजार वर्ष पहले के संस्कारों को कैच नहीं कर सकते हो! अर्थात् कर सकते हैं। ऐसे ही इस निदान को भी कर्मयोगी कैच करके कर्मभोग से मुक्त हो जाते हैं।

* किन्हीं कर्मो के फलस्वरूप ही आत्मा को कर्मभोग आता है और वह कर्मों से ही जायेगा, ये विधि का विधान है। बाबा ने कहा है - योग सबसे श्रेष्ठ कर्म है, जिससे आत्मा और शरीर दोनों पावन बनते हैं, योग के द्वारा आत्मा, आत्माओं और प्रकृति दोनों को पावन बनाती है, इसलिए कर्मयोग रूपी श्रेष्ठ कर्म करके आत्मा अपने कर्मभोग और कर्म-बन्धन से अवश्य मुक्त हो सकती है।

* अनेक रोग निरोधक या रोग निवारक तत्व जो विषय-भोग या किन्हीं अन्य अप्राक्रतिक क्रियाओं के द्वारा देह से बाहर चले जाते हैं, वे कर्मयोग अर्थात् योग के अभ्यास से देह में संचित रहते हैं, जिससे अनेक प्रकार के रोगों अर्थात् कर्मभोग का निदान होता है।

* कर्मभोग के कारणों और निवारण का ज्ञान ज्ञान सागर बाबा ने हमको दिया है परन्तु कर्मयोगी आत्मा को ही समय पर वे टच होते हैं, जिससे वह सहज अपने कर्मभोग का निदान कर सकता है।

* कर्मयोगी आत्मा शान्त रहती है, जिससे शरीर की ग्रन्थियाँ सहज अपना

कर्मफल

जैसे कर्म-भोग शब्द अच्छे-बुरे कर्मों के अच्छे-बुरे भोग दोनों के लिए ही प्रयोग होता है परन्तु कर्मभोग शब्द का प्रयोग विकर्मों के दुखदायी भोग के लिए विशेष रूप में प्रयोग किया जाता है, ऐसे ही कर्मफल भी अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के कर्मो के फल के लिए कहा जायेगा परन्तु कर्मफल शब्द का प्रयोग प्राय: अच्छे कर्मों के अच्छे सुखदायी फल के लिए ही किया जाता है। आत्मा जो भी अच्छे कर्म करती है, उसके सुखदायी फल का खाता जमा होता है और आत्मा उसका समयानुसार सुख के रूप में भोग करती है। वैसे तो आत्मा द्वापर से लेकर कलियुग अन्त तक अच्छे बुरे दोनों प्रकार के कर्म करती है और दोनों का फल कर्मभोग या कर्मफल के रूप में प्राप्त करती है। परन्तु कल्प का संगमयुग अर्थात् पुरुषोत्तम संगमयुग विशेष रूप से श्रेष्ठ कर्म अर्थात् सुकर्म करने का युग है, जिनका फल आत्मा को आधे कल्प के लिए मिलता है। संगमयुग पर ही आत्मा की चढ़ती कला होती है। और तो सारे कल्प उतरती कला ही होती है।

''इसीलिए नाम है - कर्म-क्षेत्र, कर्म-सम्बन्ध, कर्मेन्द्रियाँ, कर्मभोग, कर्मयोग। ... कर्म श्रेष्ठ है तो श्रेष्ठ प्रालब्ध है, कर्म भ्रष्ट होने के कारण दुख की प्रालब्ध है। लेकिन दोनों का आधार कर्म है। कर्म आत्मा का दर्पण है।''

अव्यक्त बापदादा 19.3.82

''दैवी कर्म भी चाहिए। कोई भी भ्रष्ट कर्म नहीं करना चाहिए, टाइम वेस्ट नहीं करना है। ... बाप पढ़ाने आया है, वही पतित-पावन है। तो ऐसे बाप की श्रीमत पर चलना चाहिए।''

सा.बाबा 25.8.05 रिवा.

कर्मयोग / कर्मयोगी स्थिति

कर्मयोग का मूल है अपने और परमपिता परमात्मा स्व-रूप को पहचान कर, इस देह और देह की दुनिया को भूलकर अपने आत्मिक स्व-रूप में स्थित होकर परमात्मा को उसके मूल स्वरूप में याद करना और कर्म करते हुए भी अपने मूल स्वरूप की स्मृति में रहते हुए परमात्मा को याद करते हुए कर्म करना।

ये सारा विश्व-नाटक कर्म और फल पर आधारित है। श्रेष्ठ कर्मों के फलस्वरूप आत्मा को सुख और विकर्मों के फलस्वरूप आत्मा दुख पाती है। कोई भी आत्मा कर्म के बिना इस कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती। इसलिए हर आत्मा का कर्तव्य है कि वह विकर्मों से बचे और सुकर्मों में प्रवृत्त हो, जिससे उसका ये जीवन भी सुखमय हो और भविष्य भी सुखमय हो। हम विकर्मों से कैसे बचें और श्रेष्ठ कर्मों को करने में कैसे समर्थ हों, उसके लिए बाबा ने हमको कर्मयोग सिखाया है। कर्मयोग के लिए बाबा ने श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान भी दिया है और उनको करने के लिए शक्ति कैसे अर्जित करें, उसके लिए योग भी सिखाया है, इसलिए इस योग को कर्मयोग भी कहा जाता है। विकर्मों का कारण क्या है, उस कारण का निवारण कैसे करें, उसके लिए भी ज्ञान दिया है, हमारा मार्ग-दर्शन किया है। अब करना या न करना हर आत्मा के अपने ऊपर है, इसीलिए कहा गया है - 'जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है'।

कर्मयोग अर्थात् कर्म करते हुए योग में रहना। योग भी एक कर्म है, इसलिए इसे कर्मयोग कहा जाता है। कर्मयोग से एक तो हमारा पुण्य का खाता, आत्मिक शक्ति का खाता जमा होता है और दूसरा हमारा विकर्मों का खाता अर्थात् कर्मभोग और कर्म-बन्धन का खाता खत्म हो जाता है और कर्म-सम्बन्धों का नया सुखदायी खाता जमा हो जाता है।

''जो भी कर्म करते हो, वह अलौकिक होना चाहिए, साधारण नहीं। अलौकिक कर्म तब होता है जब अलौकिक स्वरूप की स्मृति रहती है। 'एक मेरा' कहने से

हैं और उनका नम्बरवार प्रभाव है। उन विधि-विधानों को स्मृति में रखकर हम सहज कर्मभोग पर कर्मयोग से विजय पा सकते हैं, जिनके विषय में ज्ञान सागर सर्वशक्तिवान परमात्मा ने भी समय-समय पर महावाक्य उच्चारे हैं।

Q. किस तरह के कर्मयोग के द्वारा किस तरह से कर्मभोग और कर्म-बन्धन का खाता चुकता होता है और किस तरह से कर्मफल और कर्म-सम्बन्ध का निर्माण होता है?

यथार्थ ज्ञान को समझकर परमात्मा की श्रीमत पर जो योग साधना करते हैं, आत्मिक स्वरूप में स्थित होते हैं, उससे आत्मिक शक्ति बढ़ती है, जिस आत्मिक शक्ति के द्वारा आत्मा कर्मभोग होते भी उसको सहन करने में समर्थ होती है, तो उस सहन करने से कर्मभोग का खाता सहज चुक्तू होता है और कर्मयोग के द्वारा जो श्रेष्ठ कर्म करते हैं, उससे श्रेष्ठ कर्मफल का खाता जमा होता है। ऐसे ही जिन आत्माओं के साथ हमारा कर्म-बन्धन है, उन आत्माओं के साथ परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर व्यवहार में आते हैं, उनको योगदान करते हैं तो उससे हमारा कर्म-बन्धन का खाता चुक्तू होता है और श्रेष्ठ कर्म-सम्बन्धों का खाता निर्माण होता है। परमात्मा की श्रीमत अनुसार चलकर, योगयुक्त होकर रहम, दया की भावना से प्रेरित होकर शुभ-भावना, शुभ-कामना, शुभ-चिन्तन, शुभ-चिन्तक बनकर जो व्यवहार करते हैं, सेवा करते हैं, उससे भविष्य सुखदायी सम्बन्धों का निर्माण होता है।

अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर जो साधना करते हैं अर्थात् योग का अभ्यास करते हैं, उससे जड़ तत्वों सहित सारी प्रकृति पावन होती है, जिससे हमारा श्रेष्ठ कर्मफल का खाता जमा होता है, जो सारे कल्प चलता है। कर्मयोग से कर्मभोग या कर्म-बन्धन पर विजय पाने के लिए बाबा ने क्या-क्या विधि-विधान बताये हैं या उसका विधि-विधान क्या है, वे कैसे प्रभावित होते हैं, उन सब पर यहाँ कुछ विचार करते हैं -

* हर जीवात्मा के देह में आने वाले किसी कर्मभोग का उपचार करने का

अस्त्र है, जो कभी निष्फल हो नहीं सकता, इसलिए जो निश्चयबुद्धि बनकर दृढ़ निश्चय से उसका उपयोग करता है, उसको सफलता अवश्य मिलती है। योग का विधि-पूर्वक निश्चय से प्रयोग करें और सफलता न मिले, ये हो नहीं सकता है। ये अटल सत्य है कि बाबा ने हमको जो योग सिखाया है, उससे दैहिक और मानसिक सर्व प्रकार के कर्मभोगों का निदान होता है, इसलिए हमको अपने सत्य पथ से बुद्धि को कब भटकाना नहीं चाहिए।

जब हमको निश्चय होगा कि कर्मयोग से कमभोग पर विजय अवश्य होती है, बल्कि ऐसा कहें कि कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय निश्चित ही होती है। वास्तविकता ये है कि कर्मयोग से ही कर्मभोग पर विजय प्राप्त हो सकती है। उसके अतिरिक्त और कोई रास्ता ही नहीं है कर्मभोग पर विजय पाने का। दूसरे जितने भी साधन हैं, हठयोग, तन्त्र-मन्त्र आदि हैं वे अस्थाई हैं अर्थात् कुछ समय के लिए उनसे निदान होता है। परन्तु एक गया तो दूसरा आ जाता है, दूसरा गया तो तीसरा आ जाता है और मनुष्य सारे जीवन किसी न किसी कर्मभोग के वश रहता ही है। जिसको परमात्मा की शक्तियों पर निश्चय है, उसकी श्रीमत पर निश्चय है, वही उसकी श्रीमत को पालन करके सहज अपने वर्तमान कर्मभोग पर विजय प्राप्त करता ही है और जन्म-जन्मान्तर के लिए कर्मभोग से मुक्त हो जाता है।

कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय का विधि-विधान और पुरुषार्थ

कर्मयोग का विधि-विधान

कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय तो निश्चित है, उसमें अंशमात्र भी सोचने या आशंका की गुंजाइश नहीं है परन्तु उसका विधि-विधान क्या है, वह भी जानना अति आवश्यक है, तब ही हम कर्मयोग से कर्मभोग पर सहज विजय पा सकते हैं। कर्मयोग अर्थात् आत्मिक स्थिति में स्थित आत्मा के परमात्मा पिता की मधुर याद और उस कर्मयोग की स्थिति से कर्मभोग पर विजय अर्थात् योग की शक्ति से कर्मभोग से मुक्ति। कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय पाने के अनेक विधि-विधान

मेहनत से छूट जायेंगे, बोझ उतर जायेगा।''

अ.बापदादा 25.12.89 पार्टी 2

''तुम बहुत देहाभिमानी बन पड़े हो, बहुत विकर्म बन जाते हैं ... एक मुख्य विकर्म यह करते हो कि बाप फरमान करते हैं कि अपने को आत्मा समझो, वह मानते नहीं हो तो जरूर विकर्म न होगा तब क्या होगा।''

सा.बाबा 10.3.69 रिवा.

''कई समझते हैं हम अपने को आत्मा समझ शान्त में बैठते हैं। परन्तु इससे भी कोई पाप भस्म नहीं होंगे। बाप कहते हैं - अपने को आत्मा निश्चय कर फिर मुझे याद करो। ... जितना प्यार से बाबा को याद करेंगे, उतना विकर्म विनाश होंगे और फिर वर्सा भी मिलेगा।'' सा.बाबा 20.6.72 रिवा.

''यह निश्चित है कि यह कार्य हुआ ही पड़ा है। सिर्फ कर्म और फल के, पुरुषार्थ और प्रालब्ध के, निमित्त और निर्माण के, कर्म फिलॉसाफी के अनुसार निमित्त बन कार्य कर रहे हैं। भावी अटल है लेकिन सिर्फ आप श्रेष्ठ भावना द्वारा, भावना का फल अविनाशी प्राप्त करने के निमित्त बने हुए हैं।'' अ.बापदादा 20.01.86

''कहते हैं - भूल हो गई, बाबा क्षमा करो। बाबा कहते हैं - इसमें क्षमा की बात नहीं। ... कोई भी उल्टा-सुल्टा कर्म करते हो, वह जमा होता है, जिसका अच्छा-बुरा फल अवश्य मिलता है।'' सा.बाबा 28.7.05 रिवा.

''बाप कर्मों की गुह्य गति बैठ समझाते हैं। ... मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखाता हूँ। ... मैं सभी आत्माओं का बाप हूँ, पढ़ाता भी सभी आत्माओं को हूँ। इसको कहा जाता है स्प्रीचुअल फादर। ... आत्मा को कर्मों अनुसार ही रोगी-निरोगी शरीर आदि मिलता है।'' सा.बाबा 5.10.04 रिवा.

''63 जन्मों के हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। अपने पिछले संस्कार, स्वभाव बाहर इमर्ज हो सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं - इस कर्मों की गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं। ... याद रखो - सच्चे बाप को अपने जीवन की नैया दे दी है तो सत्य की नॉव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती।'' अ.बापदादा 3.5.77

''बाप को जान पहचान उनकी मत पर चलने से तुम श्रेष्ठ बन सकेंगे। नहीं तो बहुत सज़ायें खायेंगे। जैसे ईश्वर की महिमा अपरम अपार है वैसे सज़ा खाने की दुर्दशा भी अपरम अपार है। क़यामत का समय है। बाबा कहते हैं मैं सबका हिसाब-किताब चुक्तू कराता हूँ। ... कोई भी किसको दुख देते हैं तो दुखी होकर मरेंगे। जो काम कटारी चलाते हैं, वे दुखी होकर मरने वाले हैं - यह पक्का समझ लो।''

सा.बाबा 17.4.73 रिवा.

''बाप कहते हैं - यह ड्रामा में नूँध है, जो विकर्म करते हैं, उनको कर्मों की सज़ा मिलती है।... उसकी कोई लिखत आदि तो होती नहीं है।... बड़े से बड़ा विकर्म है देहाभिमानी बनना।... सबसे बड़ा पाप है काम कटारी चलाना।''

सा.बाबा 30.8.05 रिवा.

''बिगर पूछे चीज उठाकर खाया तो वह भी पाप बन जाता है। ... एक खायेंगे तो और भी ऐसे करने लग पड़ेंगे। वास्तव में यहाँ कोई चीज़ ताले के अन्दर रखने की दरकार नहीं है। लॉ कहता है इस घर के अन्दर, किचिन के सामने कोई अपवित्र आने नहीं चाहिए।'' सा.बाबा 15.8.05 रिवा.

''बाप (परमात्मा) कर्म-अकर्म-विकर्म की गुह्य गति का ज्ञान देते हैं। अगर बाप की श्रीमत पर चलते रहें तो कब विकर्म न हो।'' सा.बाबा 1.10.97 रिवा.

''जो बात अच्छी न लगे वह करनी नहीं चाहिए। अच्छे-बुरे को तो अब समझते हो, आगे नहीं समझते थे। ... अब अच्छी रीति पुरुषार्थ कर कर्मातीत बनना है।''

सा.बाबा 11.12.2000 रिवा.

''मन्सा में तूफान जरूर आयेंगे परन्तु कर्मेन्द्रियों से विकर्म नहीं करना है देखो कर्मेन्द्रियां धोखा देती हैं तो खबरदार हो जाओ।''

सा.बाबा 24.11.05 रिवा.

''ज्ञानी तू आत्मा अर्थात् पहले सोचे फिर कर्म करे। ज्ञानी-योगी तू आत्मा को समय प्रमाण टच होता है और वह फिर कैच करके प्रैक्टिकल में लाता है। एक सेकेण्ड भी पीछे सोचा तो ज्ञानी तू आत्मा नहीं कहेंगे।'' अ.बापदादा 31.12.91

कर्मों का फल कर्मभोग ही है। परन्तु बुरे कर्मों अर्थात् विकर्मों के फल स्वरूप आत्मा दुख भोगती है, जिसको ज्ञान मार्ग में कर्मभोग कहा जाता है। उस कर्मभोग से मुक्त होने के लिए भी आत्मा को कर्म करना होगा, उस कर्म को सुकर्म कहा जाता है, उसका आधार है परमात्मा की याद मे कर्म करना अर्थात् सुकर्म का मूलाधार है योग अर्थात् परमपिता परमात्मा की स्नेहीयुक्त याद में कर्म करना। उस कर्मयोग से आत्मा सहज ही कर्मभोग से मुक्त हो जाती है। जैसे बैंक का किसी व्यक्ति पर ओवरड्रॉन है तो उससे मुक्त होने के लिए बैंक में जमा करना ही होगा। यदि जमा नहीं करते हैं तो ओवरड्रॉन पर ब्याज बढ़ता रहता है और ओवरड्रॉन बढ़ता जाता है। ऐसे ही आत्मा को कोई कर्मभोग आया है तो वह कर्मयोग अर्थात् सुकर्मों से ही चुवतू होगा। यदि कर्मयोग का अभ्यास नहीं करते तो कर्मयोग के बिना कर्मभोग की वेदना बढ़ती ही जायेगी। इसके लिए बाबा ने कहा है - कर्मभोग का वर्णन नहीं करो, उसके विषय में अधिक सोचो नहीं परन्तु कर्मयोग से उसको खत्म करो। योग अर्थात् बाबा की याद भी एक कर्म ही है, जो सबसे श्रेष्ठ कर्म हे और कोई भी कर्म करते परमपिता परमात्मा की याद करेंगे तो वह कर्म श्रेष्ठ होगा, उसका फल आत्मा को कर्मभोग की वेदना से सहज मुक्त करेगा। कर्मयोग अर्थात् सुकर्म करने से कर्मभोग वाली आत्मा को दूसरों की दुआयें मिलती हैं, वे दुआयें भी कर्मभोग से मुक्त होने में सहयोगी बनती हैं।

विचारणीय बात ये है कि कर्मभोग के समय आत्मा से कर्मयोग का अभ्यास होता नहीं है। उसके लिए आत्मा को पहले से देह से न्यारे होकर परमात्मा की याद का अभ्यास करना होता है क्योंकि देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप की अभ्यासी आत्मा ही परमात्मा की याद में स्थित हो सकती है अर्थात् कर्मभोग के समय कर्मयोग की स्थिति में स्थित हो सकती है। इसलिए बाबा हमको पहले से कर्मयोग का अभ्यास करने के लिए सदा ही कहते रहते हैं।

ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको योग का ज्ञान दिया है और उसके सब विधि-विधान बताये हैं, जिन सबका मूल है निश्चय। बाबा ने जो योग सिखाया है, वह अमोघ

कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय

कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय और निश्चय

कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय में निश्चय की मूल भूमिका है। आत्मा को जब कर्मयोग के गुण-धर्मों और प्रभाव का यथार्थ ज्ञान होता है और उस पर निश्चय होता है, तब ही आत्मा कर्मयोग का यथार्थ रीति अभ्यास कर सकती है। जब आत्मा कर्मयोग का यथार्थ रीति अभ्यास करती है तो उस अभ्यास से -

कर्मयोग के अभ्यासी आत्मा को परमात्मा की भी दुआयें मिलती हैं, जो कर्मभोग से मुक्त होने में परम सहयोगी होती हैं। कर्मयोगी आत्मा देह से न्यारी होती है, इसलिए उसको कर्मभोग के वेदना की महसूसता नहीं होती है। कर्मयोग की स्थिति में स्थित आत्मा से जो प्रकम्पन पैदा होते हैं, वे जड़ तत्वों को भी प्रभावित करते हैं, जिससे उनकी तरफ से आने वाला कर्मभोग नहीं आता है। कर्मयोग की स्थिति से उत्पन्न प्रकम्पन अन्य आत्माओं को भी शान्ति और सुख की महसूसता कराते हैं, जिससे उनकी दुआयें आत्मा को कर्मभोग से मुक्त होने में सहयोगी होती हैं, इसलिए बाबा ने अनेक बार कहा है कि दुआओं का खाता जमा करो, वह समय पर बहुत काम आयेगा। कर्मयोग के अभ्यासी आत्मा की विकर्मों से अरुचि और शुभ कर्मों में अभिरुचि स्वभाविक होती है, जिससे उसके द्वारा विकर्म नहीं होते हैं, सुकर्म होते हैं, जिससे भविष्य में भी कर्मभोग की सम्भावना नहीं रहती है। कर्मयोग पर निश्चय वाली आत्मा को अपने कर्मों पर निश्चय और विश्वास होता है, इसलिए वह निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प रहता है। भय, चिन्ता, व्यर्थ संकल्प भी एक प्रकार का कर्मभोग ही हैं, जो आत्मा को दुखी बना देते हैं।

ये विश्व कर्मक्षेत्र है और कर्म ही कर्मभोग का कारण और कर्मयोग का आधार है, इसलिए गायन है - कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस कीन्ह, तासु फल चाखा। तुलसी यह तन खेल है, मन्सा भया किसान। पाप-पुण्य दो बीज हैं, जो जस बुवै सो तस लुनै निदान।

कोई भी अच्छे या बुरे अर्थात् सुख या दुख के भोग का आधार कर्म है और उन

''लवलीन अर्थात् बाप और मैं समान, स्नेह में समाये हुए। ... कर्मयोग की स्थिति में ऐसे लीन का अनुभव कर सकते हो या अलग बैठकर लीन हो सकते हो? ... कर्मयोगी को कर्म में भी साथ होने के कारण एक्स्ट्रा मदद मिल सकती है ... बाप साकार शरीरधारी नहीं है, इसलिए जब चाहे, जहाँ चाहे, सेकेण्ड में पहुँच सकते हैं। ऐसे नहीं समझो कि कर्मयोगी जीवन में लवलीन अवस्था नहीं हो सकती है।''

अ.बापदादा 13.2.92

''यहाँ तुम श्रीमत से श्रेष्ठ पुण्यात्मा बन रहे हो। ... बाप कहते हैं कर्म भल करो लेकिन बीच-बीच में यह सब छोड़ अन्तर्मुख हो जाओ। जैसे कि यह सृष्टि है ही नहीं। ... बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो।''

सा.बाबा 22.8.05 रिवा.

''जैसे ब्रह्मा बाप ने साकार जीवन में कर्मातीत होने के पहले न्यारे और प्यारे रहने के अभ्यास का प्रत्यक्ष अनुभव कराया। ... कोई कर्म छोड़ा नहीं लेकिन न्यारे हो लास्ट दिन भी बच्चों की सेवा समाप्त की। न्यारापन हर कर्म में सफलता सहज अनुभव कराता है।''

अ.बापदादा 29.12.89

''जहाँ भी आप कर्मयोगी बन कर्म करते हो, वहाँ का वातावरण, वायुमण्डल औरों को भी सहयोग देगा। जैसे मधुवन का वायुमण्डल ... तो सभी याद रखना कि हम कर्मयोगी हैं, कर्म और योग को सदा साथ रखने वाले हैं।''

अ.बापदादा 16.12.93 पार्टी 3

''बच्चों की बुद्धि में अच्छी तरह से नशा रहना चाहिए। ... इस पढ़ाई से हम विश्व के मालिक बनते हैं तो कितनी खबरदारी से पढ़ना और पढ़ाना चाहिए। हमारे से ऐसी कोई बात न हो, जो निन्दा करा दो। ... अभी तुम आत्माभिमानी और परमात्माभिमानी बनते हो। ... कल्प-कल्प बाप पढ़ाने आते हैं, फिर तुम भूल जाते हो। यह भी ड्रामा में नूँध है।''

सा.बाबा 25.3.06 रिवा.

''तन का भाग्य अर्थात् तन का हिसाब-किताब कभी प्राप्ति वा पुरुषार्थ के मार्ग में विघ्न अनुभव नहीं होगा, तन कभी भी सेवा से वंचित होने नहीं देगा। ... कर्मभोग

को चलायेगा लेकिन कर्मभोग के वश चिल्लायेगा नहीं। ... योगी जीवन कर्मभोग को कर्मयोग में परिवर्तन करने वाला है।'' अ.बापदादा 19.11.89

''अभी तुम बाप के बने हो तो ऐसा कोई कर्म नहीं करना है, जिससे बाप की निन्दा हो। सत्गुरु का निन्दक ठौर न पाये। ईश्वर की सन्तान होकर आसुरी कर्म से डरना चाहिए।'' सा.बाबा 4.9.06 रिवा.

''आप कहेंगे - 'वाह श्रेष्ठ कर्म' ... सदा श्रेष्ठ कर्म हों, साधारण नहीं। कर्मों का कूटना तो खत्म हो गया लेकिन श्रेष्ठ कर्म ही सदा हों - इसमें अण्डरलाइन करना।'' अ.बापदादा 10.1.90

''कर्म का प्रत्यक्ष फल खुशी अनुभव करते जाओ। अगर प्रत्यक्ष फल अनुभव नहीं होता तो चेक करो - क्यों फल नहीं मिला? अगर कर्म में स्वार्थ होगा, सेवा में स्वार्थ होगा तो फल नहीं मिलेगा। योगयुक्त कर्म वा योगयुक्त सेवा का फल खुशी,अतीन्द्रिय सुख अनुभूति जरूर होगी।'' अ.बापदादा10.1.94पार्टी

कर्मभोग, कर्मफल और कर्मयोग के प्रकार

यह विश्व-नाटक एक कर्म-क्षेत्र है, जहाँ आत्मायें परमधाम से आकर कर्म करती हैं और कर्मानुसार उसका फल भोगती हैं। विश्व-नाटक और प्रकृति के विधि-विधान अनुसार हर चीज और आत्मा की स्थिति सतोप्रधान से तमोप्रधान होती जाती है, उस अनुसार आत्मा के कर्मों में भी परिवर्तन होता है और उस अनुसार आत्मा उसका फल भोगने के लिए बाध्य होती है। आधे कल्प तक आत्मा संगमयुग पर किये गये श्रेष्ठ कर्मों का फल भोगती है, और आधे कल्प के बाद आत्मा अच्छे एवं बुरे दोनों प्रकार के कर्म करती है और उसके फल स्वरूप सुख-दुख दोनों भोगती है परन्तु आत्मिक शक्ति के ह्रास के कारण अच्छे की अपेक्षा बुरे अधिक होते हैं, जिससे बुरे कर्मों का फल कर्मभोग और कर्मबन्धन के रूप में भोगना होता है, जिससे आत्मा की और समग्र विश्व की सतत उतरती कला होती है। कितने प्रकार के कर्मभोग, कर्मफल होते हैं और कर्मयोग के अभ्यास के कितने प्रकार होते हैं।

व्यर्थ चिन्तन से,
दूसरों के प्रति दुर्भावना रखने,
राग-द्वेष पूर्ण व्यवहार से,
ईर्ष्या-घृणा रखने से,

गन्दी आदत पड़ जाना भी एक कर्मभोग है, जिससे मन में उल्झन या हीनता आती है। दृढ़ संकल्प से उसका निदान कर सकते हैं।

Q. किन कर्मों से आत्मा का कर्मभोग का खाता बनता है और किन कर्मों से कर्म-बन्धन का खाता बनता है?

द्वापर से देहाभिमान के वश विकारों के वशीभूत राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा से प्रभावित होकर आत्मा जो कर्म करती है, उससे आत्मा का कर्म-बन्धन का खाता बनता है, जो आत्मा को संगमयुग पर चुक्ता करना होता है। आत्मा स्थूल साधन-सम्पत्ति का जो उपयोग और दुरुपयोग करते हैं, वातावरण को मन्सा, वाचा और कर्मणा से प्रदूषित करते हैं, उससे आत्मा का कर्मभोग का खाता बढ़ता है, उसका फल आत्मा आधे कल्प तो भोगती ही है परन्तु रहा हुआ कल्पान्त में आत्मा को भोगकर पूरा करना होता है। विशेष बात ये कि यथार्थ ज्ञान पाकर, परमात्मा का बनकर आत्मा देहाभिमान के वशीभूत राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा से युक्त कर्म करती है, उसका कर्मभोग का खाता साधारण समय से कई गुणा बनता है।

ये कर्मभोग और कर्म-बन्धन का हिसाब-किताब व्यक्तिगत रूप से भी बनता है तो संगठित रूप से भी बनता है और उसका भोग व्यक्तिगत और संगठित रूप से भोगना होता है, चुक्ता करना होता है।

''दो शब्द हैं एक साक्षी और साथी। एक तो साथी सदैव साथ रखो। दूसरा साक्षी बनकर हर कर्म करो। तो साथी और साक्षी ये दो शब्द प्रैक्टिस में लायो। तो यह बन्धनमुक्त की अवस्था बहुत जल्दी बन सकती है।''

अ.बापदादा 13.3.71

''ऐसे बहुत हैं, जो शादी करना पसन्द नहीं करते हैं ... ऐसे बहुत यहाँ भी आते हैं, जो 40 साल हो गये ब्रह्मचारी रहते हैं, इसके बाद वे क्या शादी करेंगे। स्वतन्त्र रहना पसन्द करते हैं। तो बाप उनको देख खुश होते हैं। वे तो हैं ही बन्धन-मुक्त, बाकी रहा शरीर का बन्धन, उसमें देह सहित सबको भूलना है और एक बाप को याद करना है।''

सा.बाबा 29.06.09 रिवा.

''निकट सम्बन्ध में आने वाली आत्माओं को आते ही अपनापन महसूस होगा ... जो जितना समीप सम्बन्ध में आने वाले होंगे, वे स्पष्ट अनुभव करेंगे। ऐसी अनुभवी आत्माओं को कर्म-बन्धन तोड़ने में देरी नहीं लगेगी।''

अ.बापदादा 21.1.71 पार्टी

कर्मभोग के कारण

कर्मभोग के कारणों का पता होगा तो हम नये कर्मभोगों से बच जायेंगे और पुराने कर्मभोगों को सहज चुक्ता कर सकेंगे। कर्मभोग का मूल कारण अज्ञानता है। अज्ञानता से देहाभिमान और देहाभिमान से विकार और विकारों से विकर्म होते हैं, जो कर्मभोग को जन्म देते हैं अर्थात् कर्मभोग का कारण बनते हैं। ये कारण क्या-क्या हैं, उनमें से निम्नलिखित मुख्य हैं -

भूतकाल में किये गये अपने विकर्म,
साधन और सत्ता के दुरुपयोग से,
व्यवहार में अशुद्धि के कारण,
प्रकृति के तत्वों के दुरुपयोग से या अनावश्यक उपभोग से,
तत्वों में प्रदूषण करने से,
अनुचित या क्रत्रिम मैथुन से,

कर्मभोग के विभिन्न प्रकार

कर्मभोग दो प्रकार का होता है। एक होता है कर्म-बन्धन के रूप में, जो आत्माओं के साथ विकारी कर्मों के साथ बनता है और दूसरा है प्रकृति अर्थात् तत्वों के साथ देहाभिमान के कारण किये गये कर्मों के फल स्वरूप आने वाला कर्मभोग, जो दैहिक रोग-शोक और उससे होने वाली वेदना के रूप में आता है। इसलिए गायन है - दैहिक, दैविक, भौतिक तापा रामराज्य काहू नहिं व्यापा। कर्मभोग के प्रकारों में-

A.
1. दैहिक,
2. दैविक,
3. भौतिक,

B.
1. दैहिक कर्मभोग
2. मानसिक कर्मभोग
3. सामाजिक कर्मभोग अर्थात् कर्म-बन्धन
4. भौतिक कर्मभोग

C.
1. दैहिक कर्मभोग
2. कर्म-बन्धन का कर्मभोग

D.
1. व्यक्तिगत कर्मभोग
2. सामूहिक कर्मभोग

दैहिक कर्मभोग

दैहिक कर्मभोग अर्थात् दैहिक व्याधि अर्थात रोग-शोक आदि के रूप में दैहिक वेदना

1. व्याधि बड़ी शरीर भी छूट सकता परन्तु वेदना कम
2. व्याधि छोटी अर्थात् शरीर छूटने का प्रश्न नहीं परन्तु वेदना अधिक

बुद्धि का यथार्थ काम न करना

कर्मभोग अर्थात् दैहिक-मानसिक बीमारियों के द्वारा प्राप्त दुख या वेदना

दुर्घटना आदि में अंग-भंग होना

दैविक कर्मभोग

अचानक कोई प्राकृतिक आपत्ति का आ जाना

प्राकृतिक आपदायें - बाढ़, सूखा, ओले, सुनामी, आंधी-तूफान आदि के रूप में आने वाले कर्मभोग

प्राकृतिक संसाधनों की कमी

मानसिक कर्मभोग

मानसिक कर्मभोग का मूल कारण राग-द्वेष, भय-चिन्ता, ईर्ष्या-घृणा, इच्छायें-आकाक्षायें आदि हैं, जिसके कारण आत्मा को मानसिक दुख-अशान्ति होती है और अनेकानेक मानसिक व्याधियाँ अर्थात् कर्मभोग पैदा हो जाते हैं।

मानसिक व्याधि अर्थात् भय, चिन्ता, व्यर्थ संकल्प, राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा आदि

चिन्ता करके दुखी होना भी एक मानसिक कर्मभोग है।

अशुभ की आशंका करके दुखी होना भी मानसिक कर्मभोग।

भय भी मानसिक कर्मभोग है।

मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख भी एक मानसिक कर्मभोग है।

चिन्ता करके दुखी होना भी एक मानसिक कर्मभोग है।

सम्बन्ध होते हैं, वे दुखदायी ही होते हैं, इसलिए उनको कर्म-बन्धन कहा जाता है। अभी फिर परमात्मा देही-अभिमानी होकर सुखदायी कर्म-सम्बन्धों का बीज बोने की श्रीमत दे रहा है, रास्ता दिखा रहा है। जो करेगा, वह पायेगा।

''बांधेलियाँ हैं। वास्तव में उनमें अगर ज्ञान की पराकाष्ठा हो जाये तो कोई भी उनको पकड़ न सके। परन्तु मोह की रग बहुत है। ... शरीर सहित सबको भूल जाना है, अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करना है।''

सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

''जो सच्चे बच्चे होते हैं, उनकी अवस्था पक्की रहती है, ज़रा भी विकार की तरफ ख्याल नहीं जाता है। ऐसे बच्चों पर अगर कोई जबरदस्ती जुलुम करते हैं तो उसका पाप उन पर नहीं चढ़ता है। ... जितना जास्ती मारेंगे, तुम और ही नष्टोमोहा होती जायेंगी। मार भी अच्छा पद बना लेती है। ... ये सितम भी कर्मभोग हैं। पुरुष, स्त्री को मारता है, ऐसे ही कोई मार सकता है क्या? तुमने भी उनको मारा होगा, वह हिसाब-किताब चुक्तू हो रहा है। यह सब कर्मों का हिसाब-किताब है। ... अब तुम श्रीमत पर श्रेष्ठ कर्म कर रहे हो। सबसे श्रेष्ठ कर्म है सबको बाप का परिचय देना।''

सा.बाबा 30.6.02 रिवा.

''तीसरे नेत्र में कमजोरी आने की भी वही दो बातें हैं ... एक लगाव और दूसरा पुराना स्वभाव। ... अगर अपनी किसी विशेषता में भी लगाव है तो वह भी बन्धन-युक्त कर देगा, बन्धन-मुक्त नहीं करेगा क्योंकि लगाव अशरीरी बनने नहीं देगा।''

अ.बापदादा 15.7.73

''अनेक संकल्पों की समाप्ति होकर एक शुद्ध संकल्प रह जाये, इस स्थिति का अनुभव कर रही हो? इस स्थिति को ही शक्तिशाली, सर्व कर्म-बन्धनों से न्यारी और अति प्यारी स्थिति कहा जाता है।'' अ.बापदादा 22.6.71

''जब बन्धनमुक्त हो जायेंगे तो जैसे टेलीफोन में एक दो का आवाज़ कैच कर सकते हैं, वैसे कोई के संकल्प में क्या है वह भी कैच करेंगे।''

अ.बापदादा 13.3.71

''जब बन्धनमुक्त हैं तो मन के वश अर्थात् व्यर्थ संकल्पों के वश नहीं होंगे। व्यर्थ संकल्पों पर पूरा कन्ट्रोल होगा। परिस्थितियों के वश भी नहीं होंगे परिस्थितियों को सामना करने की सम्पूर्ण शक्ति होगी। ...जो बन्धनमुक्त होगा वह सदैव योगयुक्त होगा।''

अ.बापदादा 13.3.71

''स्थूल कर्म भी कर्मयोगी की स्टेज में परिवर्तन करो। सिर्फ कर्म करने वाले नहीं लेकिन कर्मयोगी हो। कर्म अर्थात् व्यवहार और योग अर्थात् परमार्थ। परमार्थ अर्थात् परमपिता की सेवा अर्थ कर्म कर रहे हैं। ... इसको कहा जाता है श्रीमत पर चलने वाले कर्मयोगी।''

अ.बापदादा 31.12.70

कर्म बन्धन और कर्म सम्बन्ध में कर्मयोग का स्थान

बन्धन दुख का कारण है अर्थात् प्रतीक है और सम्बन्ध सुख का आधार अर्थात् प्रतीक है। कर्म ही आत्मा के बन्धन अर्थात् दुख का कारण बनता है और कर्म ही आत्मा के सुखदायी सम्बन्ध का आधार है। कर्मों के आधार पर ही दुखदायी या सुखदायी सम्बन्ध बनते हैं। कल्प के हिसाब से सतयुग-त्रेता कर्मफल और कर्म-सम्बन्ध की दुनिया है तथा द्वापर-कलियुग कर्मभोग और कर्म-बन्धन की दुनिया है। सतयुग-त्रेता में आत्मा स्वतन्त्र होकर शरीर के द्वारा कर्म करती है, इसलिए बन्धन की बात नहीं लेकिन द्वापर-कलियुग में आत्मा देहाभिमान के वश होकर अर्थात् बन्धन में कर्म करती है इसलिए वे कर्म बन्धन अर्थात् कर्म दुख का कारण बन जाते हैं। कलियुग और सतयुग का संगमयुग है कर्मयोग का युग, जिस समय आत्मा परमात्मा के साथ के योग द्वारा कलियुग के पापों से मुक्त होती है और सतयुग के लिए पुण्य का खाता जमा करती है। सतयुग-त्रेता में कर्म-सम्बन्ध सुखदायी होते हैं क्योंकि इन कर्म-सम्बन्धों का बीज संगमयुग पर परमात्मा की श्रीमत के आधार पर बोया हुआ है अर्थात् संगमयुग पर परमात्मा की याद में किये गये सुकर्मों का फल है। द्वापर से देहाभिमान के कारण विकारों के वशीभूत कर्म आत्मा के बन्धन का कारण बनते हैं अर्थात् उस समय जो भी

अपने या दूसरे के कर्मभोग अर्थात् रोग-शोक को देखकर अपने लिए आशंका करना भी मानसिक कर्मभोग है। जीवघात - प्राय: मानसिक कर्मभोग के कारण ही आत्मायें जीवघात आदि करती हैं।

''इन्द्रियों के सुख का आकर्षण, सम्बन्ध का आकर्षण ... ये भिन्न-भिन्न आकर्षण अतीन्द्रिय सुख वा हर्ष का अनुभव करने में बन्धन डालते हैं। ... एक ठिकाने बुद्धि टिक जाने से एकरस अवस्था रहती है, इसलिए सदैव बुद्धि को एक ठिकाने में टिकाने की जो युक्ति मिली है, वह स्मृति में रखो। हलचल में नहीं आने दो।''

अ.बापदादा 19.07.09 रिवा.

सामाजिक कर्मभोग अर्थात् कर्म-बन्धन

1. परतन्त्रता रूप में यथा पति आदि का बन्धन, जिससे बाबा से मिलने में भी कठिनाई
2. बच्चों आदि के बन्धन, कुल-मर्यादा, लोक-लाज आदि के कारण सेवा नहीं कर सकते।
3. आर्थिक, देश-काल परिस्थितियों के कारण बाबा से मिलने और सेवा करने में बन्धन।
4. अतीन्द्रिय सुख संगमयुग की विशेष प्राप्ति है, जो सुर-दुर्लभ है परन्तु बच्चों आदि के बन्धन, पति के बन्धन, सम्बन्धियों की बीमारी आदि के बन्धन के कारण अनुभव नहीं कर पाना भी कर्मभोग है
5. सम्बन्ध-सम्पर्क में कटुता।
6. कर्म-बन्धन अर्थात् आत्माओं के द्वारा प्राप्त होने वाला शारीरिक और मानसिक दुख।
7. अपना कोई कर्मभोग न होते भी अनेक आत्माओं के साथ सम्बन्धों के वशीभूत होकर दुखी होना अर्थात् कर्म-बन्धन है, वह भी आत्माओं का कर्मभोग है।

8. सामाजिक उपेक्षा

9. सामाजिक लोकलाज का बन्धन

''कर्म में आना और फिर न्यारा हो जाना - यह अभ्यास बहुत पक्का चाहिए। ऐसे न हो कि आप अशरीरी बनने चाहो और शरीर का बन्धन, कर्म का बन्धन, व्यक्तियों का बन्धन, वैभवों का बन्धन, स्वभाव-संस्कारों का बन्धन अपनी तरफ आकर्षित करे। कोई भी प्रकार का बन्धन अशरीरी बनने नहीं देगा।''

अ.बापदादा 29.12.89

''बाप कितना सहज समझाते हैं, फिर भी आप समान बना नहीं सकते, बच्चों आदि के बन्धन के कारण कहाँ निकल नहीं सकते। यह भी ड्रामा ही कहेंगे। बाप कहते हैं हफ्ता 15 दिन कोर्स लेकर फिर आप समान बनाने में लग जाना चाहिए। ... चारो ओर जोर से घेराव डालो तो फिर बहुत आयेंगे।''

सा.बाबा 20.07.09 रिवा.

भौतिक कर्मभोग

गरीबी

घाटा होना, देवाला मारना

कर्म-सम्बन्ध और कर्म-बन्धन

सम्बन्ध सुख का आधार है और बन्धन दुख का कारण है, दोनों का मूलाधार कर्म ही है।

इस सृष्टि का सारा खेल कर्म और फल पर आधारित है। आधा कल्प आत्मायें कर्मयोग का फल भोगती हैं और आधा कल्प देहाभिमान के वशीभूत सुकर्म-विकर्म करके उनका फल सुख-दुख के रूप में भोगती हैं। कर्म के विधि-विधान अनुसार संगमयुग पर परमात्मा आकर कर्मयोग का ज्ञान देकर कर्मयोग सिखाते हैं, जिससे आत्मायें आधे कल्प के विकर्मों का संचित खाता खत्म करती हैं और भविष्य आधे कल्प के नया सुख का खाता जमा करती हैं। कर्मभोग शब्द प्रयोग

लगी रहे तो फिर बन्धन भी टूटते जायें।'' सा.बाबा 29.05.09 रिवा.

''ज्ञान-योग से अपने को पूर्व जन्म के कर्म-बन्धन, हिसाब-किताब से मुक्त करना है। ... कर्मभोग का हिसाब-किताब ज्ञान-योग से भोग कर पूरा करना है। ... किसका सहारा लेकर या किनारा करके नहीं चलना है लेकिन साथ में रहते न्यारा होकर चलना है।'' दादी जानकी 31.05.09

''पुरुषोत्तम संगमयुग पर बाप से पढ़ना होता है। तुम इस दुख से छूटकर सुख में जाते हो। यहाँ तमोप्रधान होने के कारण तुम बीमार आदि होते हो। अभी तुम्हारे यह सब रोग मिट जाने हैं। ... अब देही-अभिमानी बनकर बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों, इसको याद की यात्रा कहा जाता है। योग कहने से यात्रा सिद्ध नहीं होती है।'' सा.बाबा 15.06.09 रिवा.

''तुमको कमाई करके बहुत खुशी से हर्षितमुख होकर शरीर छोड़ना है। घूमते फिरते भी बाप की याद में रहो तो तुमको कभी थकावट नहीं होगी। ... और ही पाप कट जायेंगे, हल्के हो जायेंगे। तुम बच्चों को इससे कितना फायदा है, यह और कोई तो जान न सके।'' सा.बाबा 16.06.09 रिवा.

एक बार मैंने बाबा को किसी के बारे में कोई बात कही। बाबा ने हमको कहा - तुम्हारा उसमें क्या जाता है, वह जाने, बाबा जाने, उसके कर्म जाने। हर आत्मा का अपना पार्ट है, जो वह बजा रहा है। हमको किसके कर्म-बन्धन में नहीं जाना है।

दादी जानकी 19.06.09

मेरे पाप कट गये कैसे समझें? ... पाप कट गये, आत्मा फ्री हो गयी, वह सदा उड़ता रहेगा, सदा अतीन्द्रिय सुख में रहेगा। उसको कभी चिन्ता-फिकर नहीं होगी, बेफिकर बादशाह होगा। दादी जानकी 19.06.09

''जिन्होंने भी हाथ उठाया वह कभी संकल्पमात्र भी संकल्प वा शरीर के परिस्थितियों के अधीन वा संकल्प में थोड़े समय के लिए भी परेशानी व उसका थोड़ा भी लेशमात्र अनुभव करते हैं वा उससे भी परे हो गये हैं? जब बन्धनमुक्त हैं तो मन के वश अर्थात् व्यर्थ संकल्पों के वश नहीं होंगे।'' अ.बापदादा 13.3.71

इस सब में निश्चय और विश्वास का विशेष महत्व है। दुनिया में यथाशक्ति सम्पन्न आत्मिक शक्ति वाली आत्मायें भी अपनी विल पॉवर से अपने अनेक रोगों का और दूसरों के रोगों का निदान कर देती हैं, फिर ये तो सर्वशक्तिवान परमात्मा की शक्ति है आदि-आदि।

''श्रीमत जो कहे, सो करते रहो। ... निश्चय पूरा बैठ जाये तो कर्मातीत अवस्था हो जाये। ... वह अवस्था होगी अन्त में। ... शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा की मुरली को भी बड़ा अच्छी रीति समझना है। ... मुख्य बात है ही शिवबाबा की याद की।''

सा.बाबा 19.01.06 रिवा.

'''करन-करावनहार' ... 'करावनहार' शब्द की डबल रूप से स्मृति चाहिए। एक तो 'करावनहार' बाप है और दूसरा मैं आत्मा भी इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाली हूँ। इस स्मृति से कर्म करते भी कर्म के अच्छे-बुरे प्रभाव में नहीं आयेंगे। इसको कहते हैं कर्मातीत अवस्था।''

अ.बापदादा 10.3.96

''बीमारी आदि होती है तो वह है कर्मभोग। खुद भी समझते हैं कि जब तक यहाँ हैं, कुछ न कुछ होता रहेगा। भल यह रथ है फिर भी कर्मभोग तो पिछाड़ी तक भोगना ही है। ऐसे नहीं कि मैं इन पर आशीर्वाद करूँ। इनको भी अपना पुरुषार्थ करना है। हाँ, रथ दिया है, उसके लिए कुछ इज़ाफा दे देंगे।''

सा.बाबा 28.05.09 रिवा.

''बाँधेलियों के लव से तो किसकी भी भेंट नहीं कर सकते हैं। ... बाँधेलियों का योग कोई कम थोड़ेही है। ... भल वे खुद सर्विस नहीं कर सकती हैं परन्तु याद का भी उनको बहुत बल मिलता है। याद में ही सब कुछ समाया हुआ है। ... बाबा बच्चों को धीरज देते हैं - बच्चे, तुम बाप को याद करते रहो तो यह सब बन्धन खत्म हो जायेंगे।''

सा.बाबा 28.05.09 रिवा.

''तुम बच्चे प्रदर्शनी देखकर आते हो तो सारा दिन वह नॉलेज बुद्धि में रहनी चाहिए, तब ही ज्ञान सागर के बच्चे तुम मास्टर ज्ञान सागर कहला सकते हो। अगर ज्ञान ही बुद्धि में न रहे तो ज्ञान सागर थोड़ेही कहेंगे। सारा दिन बुद्धि इसमें ही

विकर्मों के संचित खाते के फलस्वरूप आने वाले दुखदायी भोग के लिए किया जाता है। अब ये आधे कल्प के विकर्मों के संचित खाते के फल स्वरूप जो कर्मभोग आता है, उससे मुक्ति कैसे पायें, उसका विधि-विधान भी बाबा ने बताया है।

D. आत्मा अनेक कर्म व्यक्तिगत रूप में करती हैं और कई कर्म संगठित रूप में करती हैं, इसलिए उनकी भोगना भी व्यक्तिगत भी भोगनी पड़ती है और कभी-कभी संगठित रूप में भी भोगनी होती है।

व्यक्तिगत कर्मभोग अर्थात् जिसका दुख एक ही व्यक्तिगत रूप में भोगता है।

सामूहिक कर्मभोग अर्थात् जिसका दुख संगठित रूप में भोगना पड़ता है।

कर्मभोग और कर्म-बन्धन दोनों ही आत्माओं को अपने कर्मों के फलस्वरूप दुख के रूप में भोगने होते हैं और दोनों में बड़ा गहरा सम्बन्ध है परन्तु किसी में कर्मभोग प्रधान होता है और किसी में कर्म-बन्धन प्रधान होता है। कर्म-बन्धन व्यक्तियों के द्वारा या अपनी कर्मेन्द्रियों के वशीभूत, किसी आदत के वशीभूत आता है और कर्मभोग दैहिक-मानसिक व्याधि के रूप में आता है।

कर्मफल के प्रकार

कर्मफल अर्थात् कर्मयोग अर्थात् परमात्मा की याद में किये गये श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा निर्मित सुखदायी फल, जिससे आत्मा को - स्वस्थ तन, स्वस्थ मन, स्वस्थ धन, स्वस्थ जन अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क, कर्म-सम्बन्ध अर्थात् श्रेष्ठ कर्मों अर्थात् परमात्मा की याद में किये गये कर्मों के द्वारा निर्मित सुखदायी सम्बन्ध।

Q. किन कर्मों से कर्मफल का निर्माण होता है और किन कर्मों से कर्म-सम्बन्ध का निर्माण होता है?

जिन कर्मों से जड़-जंगम प्रकृति प्रभावित होती है, पावन बनती है, उनसे कर्मफल का निर्माण होता है और जिन कर्मों से चेतन आत्मायें सुख-शान्ति पाती हैं, उनसे कर्म-सम्बन्धों का निर्माण होता है।

कर्मयोग के प्रकार

कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय प्राप्त करने के लिए कर्म और योग का यथार्थ ज्ञान अति आवश्यक है, जिस ज्ञान को परमात्मा ही देते हैं। कर्मयोग के भी विभिन्न प्रकार हैं, जिनके विषय में बाबा ने मुरली में बताया है अर्थात् किस-किस तरह से हम योग का अभ्यास करें, जिससे प्रथम तो कोई कर्मभोग या कर्म-बन्धन हमारे ऊपर आये ही नहीं और आ भी जाता है तो हम अपने कर्मभोग पर किस तरह विजय प्राप्त कर सकते हैं और भविष्य के लिए भी श्रेष्ठ कर्मफल का संचय कर सकते हैं, जिससे आधे कल्प तक हमारे ऊपर कोई कर्मभोग वा कर्म-बन्धन न आये और हम तन, मन, धन, जन से सुख-शान्ति का अनुभव करते रहेंगे। वर्तमान समय कलियुग का अन्त है और सतयुग की आदि होने वाली है अर्थात् दोनों के संगम का समय है, जिसमें एक तो हमको आधे कल्प का कर्मभोग और कर्म-बन्धन का रहा हुआ खाता खत्म करना है और भविष्य आधे कल्प के लिए श्रेष्ठ कर्मफल का खाता संचित करना है, इसलिए कर्मभोग या कर्म-बन्धन का आना अवश्य सम्भावी है परन्तु हमको उस पर विजय पाने के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ अर्थात् कर्मयोग का अभ्यास पहले से ही करना है क्योंकि जब पहले से अभ्यास होगा, तब ही कर्म-भोग या कर्म-बन्धन के समय हम उस पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में ज्ञान सागर बाबा ने कर्मयोग के अनेक प्रकार, विधि-विधान बताये हैं, जिन पर विचार करके हम यथार्थ पुरुषार्थ करके अपने कर्मभोग व कर्म-बन्धन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। उन विभिन्न प्रकारों पर यहाँ विचार करेंगे और उसके क्या विधि-विधान हैं, उन पर भी आगे विचार करेंगे। कर्म-भोग और कर्म-बन्धन पर विजय पाने के लिए कर्मयोग के विभिन्न प्रकारों में विशेष रूप से बाबा ने जो बताये हैं, वे हैं -

विशेष योग का अभ्यास

श्रीमत अनुसार दिनचर्या का पालन

समय पर क्लास

विशेष मुरली का अध्ययन

खान-पान के समय योगयुक्त स्थिति

व्यवहार में योगयुक्त स्थिति

ईश्वरीय सेवा

ज्ञान की सेवा

मन्सा-सेवा

यज्ञ की कर्मणा-सेवा

योगयुक्त स्थिति में निद्रा

कर्मभोग के समय परमात्मा पर निश्चय और दृढ़ विश्वास रखकर उनसे रूहरुहान करना। ऐसे कई अनुभव हैं, जिन्होंने ऐसे निश्चय और विश्वास के साथ बाबा से रूह-रुहान की और बापदादा ने स्वप्न में आकर उनको दृष्टि दी, जिससे उनका कर्मभोग खत्म हो गया या बापदादा ने उनके सिर पर हाथ रखा और जागे तो कर्मभोग का निदान हो गया।

बाबा के साथ योगयुक्त होकर अपने को देह से न्यारा करके अपने ही सूक्ष्म रूप को इमर्ज करके उसके द्वारा कर्मभोग या जहाँ वेदना है, वहाँ उससे निदान के लिए दृष्टि को केन्द्रित करना।

बापदादा का हाथ अपने सिर पर अनुभव करना और संकल्प करना कि उससे निकलने वाले प्रकम्पन हमारे कर्मभोग का निदान कर रहे हैं या उनकी दृष्टि हमारे कर्मभोग का निदान कर रही है।

निराकार शिवबाबा को याद कर ऐसा दृश्य इमर्ज करना कि उनकी किरणें हमारे ऊपर पड़ रही हैं, उनसे हमारे कर्मभोग का निदान हो रहा है।

यज्ञ के आदि में कर्मयोग से अर्थात निश्चय और विश्वास रखने के कारण साकार बाबा के द्वारा भी अनेक रोगों का निदान हो जाता था, उसके अनेक उदाहरण है, जो समय प्रति समय यज्ञ के पुराने भाई-बहनों ने सुनाये हैं।

अमृत-धारा

''जिनकी बुद्धि में यह नॉलेज टपकती रहेगी, उनको अपार खुशी होगी ... सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे।'' सा.बाबा 3.10.01 रिवा.

यह अटल सत्य है कि जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वत: होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का नाम-निशान नहीं होता है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना अवश्य होती है।

विश्व एक नाटक है, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया है। न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

इस सत्य पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास तथा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मंजिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम वरदान है, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

यह बात भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है - ड्रामा का ज्ञान और आत्मिक स्थिति रूपी दोनों पहिये साथ होंगे और उनके बीच में परमात्मा रूपी धुरी होगी तब ही गाड़ी सफलतापूर्वक चलेगी।

''ब्राह्मण अर्थात् निश्चयबुद्धि और निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी। तो हर एक ब्राह्मण निश्चयबुद्धि कहाँ तक बने हैं और विजयी कहाँ तक बने हैं। क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय।''

अ.बापदादा 15.4.92

''तुम बच्चों को अपनी इस लाइफ से कभी तंग नहीं होना चाहिए क्योंकि यह हीरे जैसा जन्म गाया हुआ है। इसकी सम्भाल भी करनी होती है। ... बीमारी में भी नॉलेज सुन सकते हैं, बाप को याद कर सकते हैं। जितने दिन जियेंगे कमाई होती रहेगी, हिसाब-किताब चुक्तू होता रहेगा।... कर्मातीत बनना है।''

सा.बाबा 10.2.05 रिवा.

बिना कर्म के आत्मा को कोई भी प्रकार की भोगना हो नहीं सकती और कोई भी कर्म बिना फल के हो नहीं सकता अर्थात् आत्मा को कोई भी सुख या दुख उसके कर्म के फल स्वरूप ही मिलता है। कर्मभोग शब्द का प्रयोग बहुधा दुख की भोगना के लिए ही प्रयोग किया जाता है परन्तु यदि उसकी सत्यता पर विचार करें तो सुख या दुख दोनों ही कर्मभोग के रूप हैं। एक है सुख का भोग और दूसरा है दुख का भोग। दुख का कर्मभोग आत्मा का दुख या विकर्मों का खाता कम करता है और सुख का भोग आत्मा का श्रेष्ठ कर्मों के जमा का खाता कम करता है। इसीलिए तो सतयुग के 1250 साल में आत्मा की दो कलायें कम हो जाती हैं। कोई भी आत्मा अपने कर्म के भोग से बच नहीं सकती, इसलिए अच्छा यही है कि हम स्वेच्छा और शान्ति से उसको भोग कर पूरा करें, यही ज्ञान है। जैसे कर्मभोग आत्मा का विकर्मों का खाता खत्म करता है, सुख का भोग आत्मा का श्रेष्ठ कर्म के जमा का खाता कम करता है, ऐसे ही कर्मयोग आत्मा के श्रेष्ठ कर्म का खाता जमा करने का आधार है। कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय पाने के लिए इसके सम्बन्ध में ज्ञान सागर शिवबाबा ने क्या-क्या स्पष्टीकरण दिये हैं, उन पर विचार करना, उनको समझना अति आवश्यक है।

Q. कर्मभोग किन-किन बातों को सिद्ध करता है?

कर्मभोग का कारण हमारे भूतकाल में किये गये पाप-कर्म हैं, जिनके फलस्वरूप आत्मा को कर्मभोग होता है अर्थात् भोगना भोगनी होती है। बाबा ने इस सत्य को बताया है कि किसी भी आत्मा को उसके पाप-कर्म के बिना कोई कमभोग हो नहीं

सकता है।

हर आत्मा को अपने ही पाप-कर्मों का फल कर्मभोग के रूप में भोगना होता है। किसी आत्मा को किसी अन्य आत्मा के कर्मों के फलस्वरूप कर्मभोग नहीं आ सकता है।

जब तक आत्मा का कर्मभोग है, तब तक कोई आत्मा परमधाम वापस नहीं जा सकती है क्योंकि कर्मभोग का आना सिद्ध करता है कि आत्मा के पाप-कर्मों का खाता बाकी है अर्थात् आत्मा कर्मातीत नहीं बनी है अर्थात् आत्मा पावन नहीं बनी है।

Q. कर्मयोग की यथार्थता क्या है और उसके प्रति हमारा दृष्टिकोण क्या होना चाहिए?

यथार्थ रीति हम विचार करें या देखें तो कर्मभोग आत्मा के ऊपर एक बोझा है या ऋण है, जो उतरने से या चुक्तू होने से आत्मा हल्की हो जाती है। इसलिए हमको कर्मभोग से कब घबराना नहीं चाहिए। जो भी कर्मभोग आये, उसे शान्ति से सहन करना चाहिए परन्तु बिडम्बना यह है कि जब कर्मभोग आता है तो उसकी वेदना आत्मा को परेशान कर देती है, जिससे आत्मा अपने विवेक को खो बैठती है और विवेक खोने से आत्मा दुखी हो जाती है। कब-कब आत्मा अपने कर्मभोग का कारण दूसरों को समझकर विकर्म करके नये कर्मभोग को को जन्म दे देती है।

कर्मभोग में भी हमारा अनेक आत्माओं के साथ हिसाब-किताब चुक्तू होता है, आत्मा का बोझा उतरता है। जिस कर्मभोग से आत्मा को वेदना होती है और उस वेदना को सहते हुए वह पूरा हो जाता है, वह कर्मभोग आत्मा के ऊपर बोझा है, जो उतर गया। यदि वेदना हुई और उसके फलस्वरूप दूसरी आत्माओं के साथ व्यवहार हुआ तो उससे हिसाब-किताब चुक्तू हुआ। जैसे बीमारी में डाक्टरों से चिकित्सा आदि कराने में खर्चा आदि होता है।

''ग्रहचारी जब बैठती है तो 8 रत्न की अंगूठी पहनते हैं। इस समय भारत पर राहू की ग्रहचारी है। पहले वृक्षपति अर्थात् बृहस्पति की दशा थी। तुम सतयुगी देवता थे, विश्व पर राज्य करते थे। ... वृक्षपति की दशा थी तो विश्व के मालिक थे, अभी राहू की दशा बैठी है तो हम कौड़ी मिसल बन गये हैं।''

सा.बाबा 15.08.09 रिवा.

कर्मभोग से मुक्त स्थिति, निर्माण और कर्मयोग

अनेक समय ऐसा कर्मभोग आता है, जिसके वशीभूत कर्म करके आत्मा अनेक नये कर्मभोग को जन्म देता है। कर्मयोग ही पिछते कर्मभोग से मुक्त करता है और नये कर्मभोग का खाता बनने से बचाता है।

संगमयुग पर बाबा का बनकर योग न लगना, झुटका अना, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव न होना भी कर्मभोग ही है।

संगमयुग पर किसी कारण से परमात्मा से मिलन न मना पाना, दूर हो जाना कर्म-बन्धन है।

भल ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है और सब ड्रामा में पहले से ही नूँध है परन्तु इस सबके होते भी कर्मयोग के प्रति रुचि रखना, भावना रखना, उससे मुक्ति होकर कर्मयोग के अनुभव के लिए प्रयत्नशील रहने वाले सफलता अवश्य प्राप्त करते हैं। यही कर्मयोग का पुरुषार्थ है।

''अपने को आत्मा समझकर मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जायें। बाप तुमको जन्म-जन्मान्तर के पापों से छुड़ाते हैं। इस समय तो दुनिया में सभी पाप करते रहते हैं, कर्मभोग है ना। अगले जन्मों में कितना पाप किया है, 63 जन्मों का हिसाब-किताब है।'' सा.बाबा 11.08.09 रिवा.

''इस जन्म में जो पाप किये हैं, वे सब अविनाशी सर्जन के आगे रखो तो हल्के हो जायेंगे। बाकी जन्म-जन्मान्तर के पाप जो सिर पर हैं, उनको योग से उतारना है। योग से पाप भी कटेंगे और खुशी भी रहेगी।'' सा.बाबा 12.08.09 रिवा.

''बाप के साथ-साथ धर्मराज भी है, हिसाब-किताब चुक्तू कराने वाला। ट्रिबुनल बैठती है ना। पापों की सजायें तो जरूर मिलनी हैं। जो अच्छी रीति मेहनत करते हैं, वे थोड़े ही सजायें खायेंगे। पाप की सज़ा मिलती है, जिसको कर्मभोग कहा जाता है।'' सा.बाबा 14.08.09 रिवा.

कर्मभोग, कर्मभोग की आशंका और उससे बचने का विधि-विधान

Q. कर्मभोग और कर्मभोग की आशंका से बचने का विधि-विधान क्या है?

कर्मभोग की वेदना तो आत्मा को दुखी करती ही है परन्तु प्राय: आत्मायें कर्मभोग न होते हुए भी कर्मभोग आने की आशंका से दुखी रहती हैं। इस कर्मभोग न होते भी उसकी आशंका से दुखी होने का कारण क्या है, जब तक उसका ज्ञान नहीं है तब तक आत्मा इस दुख से मुक्त नहीं हो सकती है। अज्ञानता इस कर्मभोग का मूल कारण है। अज्ञानता के वशीभूत कर्मभोग की आशंका जो आत्मायें दुखी रहती हैं, वे उस आशंका के कारण अनेक प्रकार के विकर्म करके भी अपने भविष्य के लिए कर्मभोग का निर्माण कर लेते हैं। दुनिया में तो अज्ञानी मनुष्य कर्मभोग की आशंका से दुखी होते ही हैं परन्तु ज्ञानियों में भी अनेक आत्मायें ऐसी आशंका करके अनेक विकर्म करते हैं, जिसके कारण वे वर्तमान में तो इस परम सुखमय जीवन के आनन्द से तो वंचित रह ही जाते हैं, साथ में मानसिक चिन्ताओं के कारण भविष्य के लिए भी कर्मभोग का निर्माण कर लेते हैं। अब इस आशंका जनित कर्मभोग से बचने का उपाय क्या है, उस पर विचार करना अति आवश्यक है। इस आशंका जनित कर्मभोग का मूल कारण अज्ञानता है। इस कर्मभोग से बचने के लिए बाबा ने अभी हमको जो इस विश्व-नाटक का सत्य ज्ञान दिया है, उसके विधि-विधान, नियम-सिद्धान्त बताये हैं, उन पर चिन्तन करके उनको अनुभव करके, उन पर निश्चय करके जीवन में धारण करके ही इस कर्मभोग का निदान हो सकता है। बाबा ने हमको कर्म और फल का विधि-विधान बताया है, आत्मा की गुण-शक्तियों का ज्ञान दिया है, इस सब पर विचार करें तो हमको ऐसी किसी प्रकार की आशंका की आवश्यकता नहीं है। परमात्मा की छत्रछाया हमारे ऊपर है, परमात्मा का साथ है, समय का भी हमको सहयोग है, इन सब बातों पर विचार करके, उनको अनुभव करके, उनको बुद्धि में रखकर यथार्थ रीति योग साधना करेंगे तो हम इस कर्मभोग की आशंका से मुक्त हो सकते हैं। अभी हमको बाबा ने सुकर्मों का ज्ञान दिया है और उनको करने

की शक्ति अर्जित करने का विधि-विधान बताया है, उस पर चलकर हम सुकर्म करते रहेंगे तो हमारे से विकर्म होंगे ही नहीं और जब विकर्म नहीं होंगे, सुकर्म का खाता जमा होगा तो हमारे ऊपर विकर्म क्यों आयेगा! पूर्व के कर्मों के फलस्वरूप यदि आता भी है तो क्या हम जो कर रहे हैं, वह हमको उससे मुक्ति दिलायेगा? इस पर विचार करना अति आवश्यक है। यथार्थ ज्ञान की धारणा और अपने इस ब्राह्मण जीवन के अनुरूप कर्म ही हमको समय पर किसी भी कर्मभोग से मुक्ति दिलायेंगे और समय पर हमको आवश्यक सहयोग अवश्य मिलेगा, ये अटल सत्य है।

''मन के मालिक हो ना! तो सेकेण्ड में स्टॉप, तो स्टॉप हो जाये। ... फौरन ब्रेक लगनी चाहिए। यही अभ्यास कर्मातीत अवस्था के समीप लायेगा। संकल्प करने के कर्म में भी फुल पास।... आर्डर दिया मन बुद्धि को कि न्यारे होकर खेल देखो तो परिस्थिति आपके इस अचल स्थिति के आसन के नीचे दब जायेगी।''

अ.बापदादा 6.3.97

कर्मभोग से मुक्त होने का विधि-विधान

कर्मभोग का कारण क्या है और उससे मुक्त होने का विधि-विधान क्या है, उसके सम्बन्ध में भी बाबा ने विस्तार से बताया है। ये कर्मक्षेत्र हैं, यहाँ आत्मा जो भी कर्म करते हैं, उसका फल आत्मा को भोगना ही पड़ता है और कल्पान्त में समस्त कर्मों का भोग भोगकर पूरा करना होता है। अच्छे कर्मों का फल तो आत्मा सुख के रूप में भोगती ही है परन्तु बुरे कर्मों के कर्मभोग को भोगने और उससे मुक्त होने का विधि-विधान इस सृष्टि में है, उसके सम्बन्ध में यहाँ कुछ विचार करते हैं। इसमें -

* दैहिक-मानसिक भोगना के रूप में - आत्मा को अपने बुरे कर्मों का अधिकांश भाग तो दैहिक और मानसिक भोगना के रूप में आधे कल्प से ही भोगकर पूरा करना होता है।

Q. कर्मभोग का आधार क्या?

Q. कर्मफल का आधार क्या है?

Q. किसकी धन-सम्पत्ति को उसकी इच्छा और प्यार से लेकर सेवा में लगाते, अपने निजी उपयोग में लगाते, विलासिता पूर्वक उपभोग करते, तो उसका क्या हिसाब-किताब बनता है या बनेंगा?

कर्मभोग और बाह्य सहयोग

कर्म-सम्बन्ध और कर्म-बन्धन

Q. क्या कर्मयोग के द्वारा कर्मभोग पर विजय पायी जा सकती है और यदि पायी जा सकती है तो किस सीमा तक और किस रूप में?

Q. क्या किन्हीं अन्य आत्माओं की विल-पॉवर से आत्मा अपने कर्मभोग से मुक्त हो सकती है? यदि हो सकती है तो किस सीमा तक?

Q. क्या अपनी विल पॉवर अर्थात् योग शक्ति से अपने कर्मभोग पर विजय पायी जा सकती है? यदि पायी जा सकती है तो किस सीमा तक और कैसे?

कर्मभोग और कर्मयोग एवं कर्मभोग से मुक्ति

Q. कर्मभोग किन-किन बातों को सिद्ध करता है?

Q. कर्मयोग की यथार्थता क्या है और उसके प्रति हमारा दृष्टिकोण क्या होना चाहिए?

Q. कर्मभोग और कर्मभोग से बचने का विधि-विधान क्या है?

Q. किन कर्मों से आत्मा का कर्मभोग का खाता बनता है और किन कर्मों से कर्म-बन्धन का खाता बनता है?

Q. किन कर्मों से कर्मफल का निर्माण होता है और किन कर्मों से कर्म-सम्बन्ध का निर्माण होता है?

Q. किस तरह के कर्मयोग के द्वारा किस तरह से कर्मभोग और कर्म-बन्धन का खाता चुक्तु होता है और किस तरह से कर्मफल और कर्म-सम्बन्ध का निर्माण होता है?

विविध ईश्वरीय महावाक्य

''दूसरों को देना, वह खर्चा नहीं है। यह तो एक देना फिर लाख पाना है। ...जब अपने विघ्नों के प्रति शक्ति का प्रयोग करते हो, वह होता है खर्च। ...अब बचत की स्कीम बनाओ। खर्चे को फुल स्टॉप लगाओ। अभी तो देते रहो, अभी लेने को कुछ रहा है क्या? अगर रहा हुआ है तो सिद्ध होता है कि बाप ने पूरा वर्सा दिया नहीं है। बाप ने अपने पास कुछ रखा नहीं है। वह तो एक सेकेण्ड में ही पूरा वर्सा दे देते हैं। जो कुछ लेने को रहता ही नहीं है।'' अ.बापदादा 8.7.73

''अभी के समय प्रमाण मास्टर रचयिता को कौनसा पोतामेल देखना है? क्या-क्या गलती की - यह तो बचपन का पोतामेल है ... आप मास्टर रचयिता हर शक्ति को सामने रखते हुए यह पोतामेल देखो कि आज के दिन सर्व शक्तियों में से कौनसी शक्ति और कितनी परसेन्टेज में जमा की।'' अ.बापदादा 8.7.73

''कट चढ़ती है आहिस्ते आहिस्ते, जैसे आटे में लून। फिर द्वापर में बहुत कट चढ़ती है। विकारों की कलायें आहिस्ते-आहिस्ते बढ़ती हैं। 16 कला से 14 कला होने में 1250 वर्ष लग जाते हैं।'' सा. बाबा 16.1.72 रिवा.

''अगर कोई भी कमजोर वा पतित वायुमण्डल का वर्णन भी करते हैं तो यह भी पाप है। क्योंकि उस समय बाप को भूल जाते हैं।... वायुमण्डल का वर्णन करना - यह भी व्यर्थ हुआ ना। जहाँ व्यर्थ है वहाँ समर्थ की स्मृति नहीं। ... कितना भी कोई माफी ले लेवे लेकिन जो कोई पाप कर्म वा व्यर्थ कर्म भी हुआ तो उसका निशान मिटता नहीं। निशान पड़ ही जाता है।'' अ.बापदादा 10.5.72

Q. परमात्मा कर्मभोग या कर्म-बन्धन से मुक्त होने में जो उनको याद करते हैं, उनको मदद करता है और जो याद नहीं करते, उनको मदद नहीं करता है तो क्या ये उनकी कामना नहीं कही जायेगी कि जो उनको याद करें, उनको मदद करे और जो न याद करें, उनको मदद नहीं करे?

Q. कर्म-बन्धन का आधार क्या है?

Q. कर्म-सम्बन्ध का आधार क्या है?

* कर्मयोग के पुरुषार्थ द्वारा - वास्तविकता तो ये है कि योग भी एक प्रकार का भोग ही है, जो स्वेच्छा से भोगा जाता है और उसमें हमको कर्मभोग के कारणों का भी ज्ञान होता है, परमात्मा का साथ होता है, उनकी मदद होती है, इसलिए वह भोगना भी अतीन्द्रिय सुख देने वाली होती है।

''इस जन्म में कोई पाप कर्म तो नहीं किये हैं? ... इस जन्म के पाप बाप को बता दो तो हल्के हो जायेंगे, नहीं तो दिल अन्दर खाता रहेगा। ... हमारा बच्चा बनकर फिर भूल करने से सौगुणा वृद्धि हो जाती है।'' (सौगुणा दण्ड पड़ जाता है)

सा.बाबा 10.11.04 रिवा.

''बहुतों को बहुत खराब ख्यालात आते हैं, फिर इनकी सज़ा भी बहुत कड़ी है।... अवस्था गिर जाती है। अवस्था का गिरना ही सज़ा है।''

सा.बाबा 7.12.04 रिवा.

* अन्त में धर्मराज की सज़ाओं के रूप में - कल्पान्त में रहा हुआ कर्मभोग धर्मराज की सजाओं के रूप में भोगना होता है, जो अन्त में बहुत दुखदायी होता है, वह न भोगना पड़े अर्थात् धर्मराज की सजायें हमको न खानी पड़ें, उनसे बचने का विधि-विधान भी बाबा ने बताया है।

बाबा ने ये भी ज्ञान दिया है कि धर्मराज पुरी की सज़ायें क्या हैं और कैसे धर्मराज की सज़ाओं से बच सकते हैं, उसके लिए क्या पुरुषार्थ करना चाहिए। अन्त समय आत्मा को अपने जीवन के सभी पाप कर्मों का साक्षात्कार होता है और आत्मा उस समय पश्चाताप करती है, वह पश्चाताप और दुख की महसूसता ही धर्मराज की सज़ायें हैं।

धर्मराज की ट्रिबुनल

कर्म का फल तो हर आत्मा को मिलता ही है, यह इस विश्व-नाटक का अनादि नियम है परन्तु जो आत्मा जानते हुए, परमात्मा के मना करने पर भी कोई गलत कर्म करता है, उसके लिए ट्रिबुनल बैठती है और उसका कई गुणा दण्ड मिलता है। जिसके लिए बाबा ने कई बार कहा है कि ट्रिबुनल उन बच्चों के लिए बैठेगी, जिनको बाबा ने ज्ञान दिया है, सावधान किया है फिर भी वे विकर्म करते हैं, बाप का नाम बदनाम करते हैं। बाबा ने ये भी कहा है कि उस समय धर्मराज ये सब साक्षात्कार करायेगा कि तुमको ब्रह्मा द्वारा अमुख रूप से, अमुख स्थान पर सावधान किया, फिर भी तुमने पाप कर्म किये, अब उन कर्मों की सज़ा खानी ही पड़ेगी। कर्म के विधि-विधान अनुसार विधान को जानते हुए विकर्म करना, परमात्मा के मना करने पर भी विकर्म करना, उसकी सज़ा अधिक मिलती है, यह राज़ भी ड्रामा में नूँधा हुआ है कि ऐसे कर्मों का अन्त समय साक्षात्कार होता है, जिससे पश्चाताप की महसूसता बढ़ जाती है।

''तुम्हारे लिए तो ट्रिब्युनल बैठेगी। खास उन बच्चों के लिए जो सर्विस लायक बनकर फिर ट्रेटर बन जाते हैं। ... दान देकर फिर बहुत खबरदार रहना है। फिर ले लिया तो सौगुणा दण्ड पड़ जाता है।'' सा.बाबा 3.11.04 रिवा.

''बाप कहते हैं - एक-दो से सेवा मत लो। कोई अहंकार नहीं आना चाहिए। दूसरे से सेवा लेना, यह भी देह-अहंकार है। बाबा को समझाना तो पड़े ना। नहीं तो जब ट्रिबुनल बैठेगी तब कहेंगे, हमको पता थोड़ेही था कायदे-कानून का। इसलिए बाप समझा देते हैं, फिर साक्षात्कार कराये सज़ा देंगे।''

सा.बाबा 5.3.2001 रिवा.

''श्रीमत पर न चलते तो नाम बदनाम करते हैं। भल बच्चे हैं परन्तु बच्चों को ऐसे थोड़ेही छोड़ेंगे। हाँ ट्रिबुनल बैठती है बच्चों को तो और ही कड़ी सज़ा मिलती है क्योंकि धोखा देते हैं।... बाप तो उस समय मुस्कराते हैं। कहते हैं इनको कुल्हाड़ी से टुकड़ा-टुकड़ा करो। फाँसी की सज़ा देने वाले रोते हैं क्या? ऐसे

''बाप कहते हैं - जब तक तुम पवित्र नहीं बनेंगे, तब तक तुमको वापस ले नहीं जा सकता हूँ। अब मैं तुम आत्माओं को लेने आया हूँ परन्तु तुम्हारे ऊपर विकर्मों का बहुत बोझा है। ... पावन तब बनेंगे, जब अपने को अशरीरी समझेंगे, देह सहित देह के सब सम्बन्धों को भूलकर एक मुझ बाप को याद करेंगे।''

सा.बाबा 22.9.08 रिवा.

''तुम बच्चों को बाप को, घर को और सुखधाम को याद करना है। यहाँ तुम जितना-जितना इस अवस्था में बैठते हो, तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म होते हैं। इसको कहा जाता है - योग-अग्नि। सन्यासी कोई सर्वशक्तिवान से योग नहीं लगाते हैं। वे तो रहने के स्थान ब्रह्म से योग लगाते हैं।''

सा.बाबा 29.07.09 रिवा.

Q. क्या हम ब्राह्मण आत्माओं को परमधाम जाने की उतावली होनी चाहिए? यदि होनी चाहिए तो क्यों और यदि नहीं तो क्यों? परमधाम में जल्दी जाने से हमको क्या लाभ होगा?

Q. यदि हमारा इस ब्राह्मण जीवन में सही पुरुषार्थ है तो हमको परमधाम में जल्दी जाने की उतावली हो नहीं सकती। क्योंकि अभी जैसा सुख हमको त्रिलोक में कहाँ भी नहीं मिल सकता है या मिलता है। यदि किसी को कर्मभोग के भय से परमधाम में जाने की उतावली है तो प्रश्न उठता है कि क्या जब तक कर्मभोग है, तब तक हम परमधाम में जा सकते हैं, क्या परमधाम में हमारा कर्मभोग का खाता चुक्ता होगा? परमधाम में तो सुख-दुख, शान्ति-अशान्ति के अनुभूति का या कर्मभोग के चुक्तू होने का कोई प्रश्न ही नहीं है। ये सब कर्मभोग का खाता हमको यहाँ ही चुक्तू करना होगा और जब हमारा कर्मभोग का खाता चुक्तू हो जायेगा तो हमको यहाँ ही परमानन्द की अनुभूति होगी, जिससे आत्मा को परमधाम जाने का संकल्प भी नहीं आयेगा। इसलिए हमको परमधाम जाने के लिए उतावला न होकर, अपने पाप-कर्मों का खाता चुक्तू करके कर्मातीत बनकर बाप समान बनने की उतावली होनी चाहिए। इस सम्बन्ध में बाबा ने अनेक बार महावाक्य उच्चारे हैं।

श्रेष्ठ शक्तियों का, श्रेष्ठ गुणों का खाता जमा करते हो।''

अ.बापदादा 06.01.86

''मुख्य यह तीनों खजाने - संकल्प, समय और श्वांस आज्ञा प्रमाण सफल होते हैं? व्यर्थ तो नहीं जाते? ... जमा का खाता इस संगम पर ही जमा करना है। ... सारे कल्प के लिए जमा इस संगम पर ही करना है। ... इस छोटे से जन्म के संकल्प, समय और स्वांस कितने अमूल्य हैं!'' अ.बापदादा 15.11.99

''जमा करने की विधि बहुत सहज है। सिर्फ बिन्दी लगाते जाओ। ... आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में जो बीत चुका, वह भी फुल-स्टॉप अर्थात् बिन्दी। ... जमा का खाता बढ़ाने की विधि है 'बिन्दी' और गँवाने का रास्ता है क्वेश्चन मार्ग, आश्चर्य की मात्रा लगाना।'' अ.बापदादा 30.11.99

''इस समय जो कुछ करते हैं, वह ईश्वरीय सर्विस में शिवबाबा को देते हैं। ब्रह्मा को नहीं देते हो। तुम शिवबाबा को देते हो। बाबा कहते हैं - इनको देने से तुम्हारा कुछ भी जमा नहीं होगा। जमा वह होता है, जो तुम शिवबाबा को याद कर इनको देते हो।''

सा.बाबा 17.9.04 रिवा.

''जन्म-जन्मान्तर का पापों का बोझा सिर पर रहा हुआ है, यह कैसे पता पड़े। ... देखना है - बाप से हमारी दिल लगती है या देहधारियों से। कर्म सम्बन्धियों आदि की याद आती है तो समझना चाहिए हमारे विकर्म बहुत हैं। ... बाप को याद कर अपने सिर से पापों का बोझा उतारना है।'' सा.बाबा 30.4.05 रिवा.

Q. आत्मा पर किस-किस प्रकार का बोझा है, जो खत्म हो तब आत्मा पावन बनें और घर जा सके?

आत्मा पर देहभान की कट तो सतयुग आदि से ही चढ़ना आरम्भ हो जाती है परन्तु विकर्म तो द्वापर से आरम्भ होते हैं, जब आत्मा देहाभिमान के वशीभूत विकर्म करती है तो विकर्मों अर्थात् पापों का बोझा आत्मा पर चढ़ता है। अभी हमको आधा कल्प का विकर्मों का अर्थात् पापों का बोझा भी उतारना है और सारे कल्प की देहभान की कट भी उतारनी है, तब ही आत्मा पावन बनेंगी और घर जा सकेगी।

थोड़ेही बच्चों पर दया कर देंगे।'' सा.बाबा 22.11.73 रिवा.

''अभी है ही क़यामत का समय। सबका हिसाब-किताब चुक्तू होता है। ... यह बना-बनाया अनादि ड्रामा है, जिसको साक्षी होकर देखते हैं कि कौन अच्छा पुरुषार्थ करते हैं। ... माया का तूफान अथवा कुसंग पीछे हटा देता है, खुशी गुम हो जाती है।''

सा.बाबा 20.1.05 रिवा.

''भारत में ही रामराज्य था, भारत में ही रावण राज्य है। रावण राज्य में 100 परसेन्ट दुखी बन जाते हैं। यह खेल है।... ड्रामा में जो नूँध है, वह फिर भी होगा। हम किसकी ग्लानि नहीं करते हैं। यह तो बना-बनाया अनादि ड्रामा है।''

सा.बाबा 20.1.05 रिवा.

''यह है कयामत का समय, सभी का पुराना हिसाब-किताब चुक्तू होना है और नया जन्म होना है। चोपड़ा होता है धन का, यहाँ फिर चोपड़ा है कर्मों के खाते का। आधा कल्प का खाता है। मनुष्य जो पाप कर्म करते हैं, वह खाता चलता आया है।''

सा.बाबा 20.8.02 रिवा.

''समझते नहीं कि बाप के साथ में धर्मराज भी है। अगर कुछ ऐसा करते हैं तो हमारे ऊपर बहुत भारी दण्ड पड़ता है। ... जब समय आयेगा तो बाप इन सबसे हिसाब लेंगे। क़यामत के समय सबका हिसाब-किताब चुक्तू होता है ना।''

सा.बाबा 25.4.05 रिवा.

''मूसलाधार वरसात, अर्थ-क्वेक आदि सब होना है। अभी तुम बच्चों ने ड्रामा का सब राज़ समझा है। ... तुम बच्चों को अच्छी रीति समझकर औरों को भी समझाना है, खुशी में भी रहना है। ... भल कितने भी दुख, मौत आदि होंगे, तुम उस समय खुशी में होंगे। तुम जानते हो मौत तो होना ही है। कल्प-कल्प का यह खेल है, फिकरात की कोई बात नहीं।'' सा.बाबा 24.7.04 रिवा.

''बाप ने याद की यात्रा सिखलाई है, जिससे हम कर्म-बन्धन से न्यारे हो कर्मातीत हो जायेंगे। ... अन्त में सब साक्षात्कार होंगे, फिर कुछ कर नहीं सकेंगे। अफसोस करेंगे, फिर भी सज़ा तो खानी ही पड़ेगी।'' सा.बाबा 6.5.05 रिवा.

धर्मराज की सज़ाओं से बचने का पुरुषार्थ

अन्त में मिलने वाली धर्मराज की सजायें आत्मा को अति दुखदायी होती हैं, उनसे बचने का एकमात्र उपाय कर्मयोग का अभ्यास ही है। इस सम्बन्ध में भी बाबा ने अनेकानेक प्रकार से महावाक्य उच्चारे हैं और हमको सावधान किया है।

''पुरुषार्थ सज़ाओं से बचने का करना है। नहीं तो बाप के आगे सज़ा खानी पड़ेगी। बाप के साथ धर्मराज भी तो है ना। वह तो जन्मपत्री जानते हैं। ... बाप का बनने के बाद यह विचार हर बच्चे को आना चाहिए कि हम बाप का बने हैं तो स्वर्ग में चलेंगे ही परन्तु हम स्वर्ग में क्या बनेंगे।'' सा.बाबा 1.3.05 रिवा.

''स्वयं ही स्वयं का जज बनो। धर्मराजपुरी में जाने से पहले जो स्वयं, स्वयं का जज बनता है, वह धर्मराजपुरी की सज़ाओं से बच जाता है।... सोच-समझ कर कर्म करो।... कर्म से पहले संकल्प उत्पन्न होता है। यह संकल्प बीज है।... यह संकल्प जीवन का श्रेष्ठ खज़ाना है।'' अ.बापदादा 27.9.75

''शरीर तो जड़ है, उसमें जब चेतन्य आत्मा प्रवेश करती है, उसके बाद गर्भ में सज़ा खाने लगती है। आत्मा सज़ा खाती है। सज़ायें भी कैसे खाती है? भिन्न-भिन्न शरीर धारण कर जिन-जिन को जिस रूप से दुख दिया है, वह साक्षात्कार करते जाते हैं और दण्ड मिलता जाता है। त्राहि-त्राहि करते हैं, इसलिए गर्भ जेल कहते हैं। ड्रामा कैसा अच्छा बना हुआ है।'' सा.बाबा 19.5.72 रिवा.

''जन्म-जन्मान्तर का बोझा सिर पर है। साक्षात्कार कराते सज़ा देते जायेंगे। बहुत सज़ायें हैं, जिनका पारावार नहीं। एक-एक जन्म के पापों का साक्षात्कार कराकर सज़ा देते हैं। वह तो जैसे जन्म-जन्मान्तर की सज़ायें हो गई। होता बिजली मुआफिक है परन्तु उसकी भासना ऐसी होती है जैसे कि सेकण्ड में हजारों वर्ष की सज़ा खाते हैं।'' सा.बाबा 5.12.73 रिवा.

''ऊंच से ऊंच बाप है, उनके साथ धर्मराज भी है। धर्मराज द्वारा बहुत कड़ी सज़ा खाते हैं।... बाबा के पास पूरा हिसाब रहता है।... धर्मराज पूरा हिसाब लेंगे।''

सा.बाबा 4.7.05 रिवा.

प्रश्न उठता है और आत्माओं का पाप बढ़ता जाता है, जिससे आत्मा कल्प के अन्त में पूरी पापात्मा बन जाती हैं। संगमयुग पर परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलता है, जिस ज्ञान प्रकाश में आत्मा सुकर्म करके पापात्मा से पुण्यात्मा बनती हैं। संगमयुग पर आत्मा जब अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है, तो उसके विचार, स्वभाव-संस्कार सदा श्रेष्ठ और सर्व के कल्याणार्थ होते हैं, इसलिए आत्मा ओरिजिनली पुण्यात्मा है।

''तुम जानते हो हम ही पहले पुण्यात्मा थे, फिर पापात्मा बने, अब फिर पुण्यात्मा बनते हैं। यह तुम बच्चों को नॉलेज मिल रही है, फिर तुम औरों को दे आप समान बनाते हो।... अभी तुमको सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है।''

सा.बाबा 2.11.04 रिवा.

''स्मृति से है फायदा और विस्मृति से है घाटा। अपनी यह चांच करनी है। ... चेक करो हमने जीवन में क्या-क्या किया, कोई भी बात दिल अन्दर खाती तो नहीं है? ... यहाँ तो पाप होते ही हैं। मनुष्य जिसको पुण्य का काम समझते हैं, वह भी पाप ही है। यह है ही पापात्माओं की दुनिया। यहाँ तुम्हारी लेन-देन भी पापात्माओं के साथ ही है।'' सा.बाबा 18.11.04 रिवा.

''सन्यासियों को कहेंगे पवित्र-आत्मा और जो दान आदि करते हैं, उनको कहेंगे पुण्यात्मा। ... आत्मा निर्लेप नहीं है।'' सा.बाबा 12.7.05 रिवा.

यथार्थ रीति देखा जाये तो सारे कल्प में खाता जमा करने का समय अभी संगमयुग ही है और तो सारे कल्प खाता खत्म ही होता जाता है। भल भक्ति मार्ग अर्थात् द्वापर-कलियुग में आत्मायें पुण्य करने का पुरुषार्थ करती हैं परन्तु पुण्य से पाप अधिक होने के कारण पुण्य का संचित खाता कम ही होता जाता है, जो कलियुग के अन्त में ना के बराबर रह जाता है।

''सारे कल्प में श्रेष्ठ खाता जमा करने का समय सिर्फ यही संगमयुग है। ... इस युग और इस जीवन की विशेषता है कि अब ही जो जितना जमा करना चाहे, वह कर सकते हैं। ... इस समय ही श्रेष्ठ कर्मों का, श्रेष्ठ ज्ञान का, श्रेष्ठ सम्बन्ध का,

पुराना शरीर छोड़कर दूसरे शरीर में प्रवेश करते हो, इसलिए तुमको अभी आत्माभिमानी बनना है।''

सा.बाबा 1.05.09 रिवा.

''योग में रहेंगे तो दर्द आदि भी कम होगा। योग नहीं तो बीमारी आदि कैसे छूटे? ख्याल करना चाहिए - मात-पिता जो नम्बरवन पावन बनते हैं, वे ही फिर सबसे जास्ती नीचे उतरते हैं। उनको तो बहुत भोगना भोगनी पड़े परन्तु योग में रहने के कारण बीमारी हटती जाती हैं। नहीं तो इनको सबसे जास्ती भोगना होनी चाहिए।... बहुत खुशी में रहते हैं - बाबा से हम स्वर्ग के सुख घनेरे लेते हैं।''

सा.बाबा 22.11.08 रिवा.

''कहाँ भी जाओ बाप को याद करते रहो। सिर पर विकर्मों का बोझा बहुत है, सारा कर्मभोग चुक्तू करना होता है ना। पिछाड़ी तक यक कर्मभोग छोड़ेगा नहीं।... अनेक बार यह पार्ट बजाया है, फिर बजाते रहेंगे। इसको ही वण्डर कहा जाता है।''

सा.बाबा 7.11.08 रिवा.

''पिछले हिसाब को भी खुशी से चुक्तू करो, चिन्ता से नहीं... अन्त में अगर बन्धन याद रहा तो गर्भ-जेल में जाना पड़ेगा और खुशी-खुशी से जायेंगे तो एडवान्स पार्टी में सेवा के लिए जायेंगे। ... सदा अतीन्द्रिय सुख अर्थात् आत्मिक सुख में रहो।''

अ.बापदादा 5.12.89 पार्टी 2

''इस ज्ञान की खुशी में तुम्हारे गम, दुख आदि सब मर्ज हो जाते हैं। ... खुशी की दुनिया याद रहने से गम-दुख आदि सब भूल जाने चाहिए।... कर्मभोग का हिसाब-किताब चुक्तू होना है। खुशी में यह सब मर्ज करते जाओ।''

सा.बाबा 24.8.06 रिवा.

Q. आत्मा में अविनाशी संस्कार हैं - तो आत्मा ओरिजिनली पुण्यात्मा है या पापात्मा? और है तो कैसे है?

आत्मा परमधाम से सतयुग में आती हैं, जहाँ पवित्र होती हैं परन्तु वहाँ पुण्य-पाप का कोई प्रश्न ही नहीं उठता और परमधाम में भी पुण्य-पाप का प्रश्न नहीं है। द्वापर से जब आत्मायें देहाभिमान के वशीभूत होती हैं, तब ही पुण्यात्मा-पापात्मा का

''बेकायदे चलन से नुकसान बहुत होता है। हो सकता है फिर कड़ी सज़ायें भी खानी पड़े। अगर अपने को सम्भालेंगे नहीं तो बाप के साथ-साथ धर्मराज भी है, उनके पास बेहद का हिसाब-किताब रहता है।''

सा.बाबा 7.12.04 रिवा.

''अभी थोड़े समय में धर्मराज का रूप प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करेंगे। ... फिर अनुभव करेंगे कि एक संकल्प की भूल से एक का सौगुणा दण्ड कैसे मिलता है।''

अ.बापदादा 22.10.70

''जरा भी सम्पूर्ण आहुति की कमी रह गयी तो सम्पूर्ण सफलता नहीं होगी। जितना और इतना का हिसाब है। हिसाब करने में धर्मराज भी है। उनसे कोई भी हिसाब रह नहीं सकता। ... सिर्फ निश्चय और हिम्मत चाहिए। निश्चय वालों की विजय कल्प पहले भी हुई थी और अभी भी हुई पड़ी है।''

अ.बापदादा 25.1.70

''लगाव वाले को धर्मराज को सलाम भरना ही पड़ेगा। लगाव वाले सम्पूर्ण फर्स्ट जन्म का राज्यभाग्य पा न सकें। इसी प्रकार पुराने स्वभाव वाले नये जीवन, नये युग का सम्पूर्ण और सदा सुख का अनुभव नहीं कर पाते। ... अब सभी प्रकार के लगाव और स्वभाव को समाप्त करो।''

अ.बापदादा 15.7.73

Q. दोषी अर्थात् उत्तरदायी कौन?

इस जगत में यह एक बड़ी पहेली है कि किसी दुर्घटना या व्यक्ति की दुख-अशान्ति के लिए दोषी कौन है? क्योंकि हर व्यक्ति अपनी दुख-अशान्ति का कारण दूसरे को ही बताता है। इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान, कर्मों की गहन गति अर्थात् कर्मों के विधि-विधान पर विचार करें और इस पहेली का हल सोचें, तो उसका क्या उत्तर निकलता है। किसी दुर्घटना से पीड़ित व्यक्ति की उस समय की परिस्थिति को ही देखते हैं तो अनुभव होता है कि विरोधी पक्ष ही दोषी है परन्तु इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान, कर्म-सिद्धान्त और आत्माओं के अनेक जन्मों के हिसाब-किताब को विचार करें तो यही परिणाम निकलता है कि पीड़ित आत्मा स्वयं ही दोषी है।

''एक की याद ही अनेक बन्धनों को तोड़ने वाली है। ... एक बाप के सिवाए,

दूसरा न कोई। जब ऐसी अवस्था हो जायेगी, फिर यह बन्धन आदि सभी खत्म हो जायेंगे। जितना बाप के साथ अटूट स्नेह होगा, उतना ही अटूट सहयोग मिलेगा। सहयोग नहीं मिलता है तो उसका कारण स्नेह में कमी है।''

अ.बापदादा 26.1.70

''अपनी अवस्था की आपही जाँच करनी है। देखना है - हम कितना बाबा की सर्विस करते हैं, कितना आज्ञाकारी, वफादार हैं। देही-अभिमानी बन बाप को याद करो तो तुम्हारी निरोगी काया बन जायेगी।'' सा.बाबा 29.9.08 रिवा.

''सवेरे उठते नहीं, याद नहीं करते तो विकर्म भी विनाश नहीं होते हैं। बाबा बतलाते हैं - इतनी मेहनत करता हूँ तो भी कर्मभोग चलता रहता है क्योंकि एक जन्म की तो बात नहीं है ना। अनेक जन्मों का हिसाब-किताब है।''

सा.बाबा 2.10.08 रिवा.

''आज के दिन ब्रह्मा बच्चे ने सारे कल्प के कर्मों के हिसाब-किताब से मुक्त होने का सबूत दिया। ... सेवा में हद की रॉयल इच्छायें भी हिसाब-किताब के बन्धन में बांधती हैं। लेकिन सच्चे सेवाधारी इस हिसाब-किताब से भी मुक्त हैं। इसी को ही कर्मातीत स्थिति कहा जाता है।'' अ.बापदादा 18.1.87

''ऐसे ही समझकर चलो कि अभी-अभी अल्पकाल के लिए नीचे उतरे हैं कार्य करने अर्थ लेकिन सदाकाल की ओरिजिनल स्थिति वही है। फिर कितना भी कार्य करेंगे लेकिन कर्मयोगी के समान कर्म करते हुए भी अपनी निजी स्थिति और स्थान को भूलेंगे नहीं। यह स्मृति ही समर्थी दिलाती है।... सर्व शक्तियां ही मास्टर सर्वशक्तिवान का जन्मसिद्ध अधिकार हैं।'' अ.बापदादा 22.6.71

कर्मभोग से मुक्ति में कर्मयोग का स्थान और विधि-विधान

''यह पुराना शरीर है, कुछ न कुछ कर्मभोग चलता रहता है। इसमें बाबा मदद करे, यह उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। ... बाप कहेंगे यह तुम्हारा हिसाब-किताब है। अपनी आप ही मेहनत करो, कृपा मांगो नहीं। जितना बाप को याद करेंगे, इसमें ही कल्याण है।'' सा.बाबा 18.1.05 रिवा.

कर्मों का हिसाब-किताब पिछाड़ी में चुक्तू होना है। इसमें डरना नहीं है।''

सा.बाबा 14.03.09 रिवा.

''पुण्यात्माओं की दुनिया अलग है। जहाँ पाप आत्मायें रहती हैं, वहाँ पुण्यात्मायें नहीं रहती हैं। यहाँ पापात्मायें, पापात्माओं को ही दान-पुण्य करती हैं। पुण्यात्माओं की दुनिया में दान-पुण्य आदि करने की दरकार ही नहीं रहती है।'' (पुण्यात्माओं की दुनिया में जाने के लिए दान-पुण्य का लेन-देन अभी संगमयुग पर होता है)

सा.बाबा 27.03.09 रिवा.

''यह 84जन्मों की सीढ़ी है ही नीचे उतरने की। ... अभी यह है संगमयुग। मामेकम् याद करो तो इस योग अग्नि से तुम्हारे पाप भस्म होंगे। ... बाप तुमको ऐसा बनाते हैं, जो तुम 21 जन्म कभी रोगी नहीं बनेंगे।'' सा.बाबा 2.04.09 रिवा.

''तुम पुरुषार्थ करते हो बाप को याद करने का, जिससे तुम एवरहेल्दी बनते हो। ... मैं आया हूँ, तुम्हारी आत्मा को साफ करने, जिससे फिर शरीर भी पवित्र मिलेगा।''

सा.बाबा 17.04.09 रिवा.

''याद रखो - हम आत्मा हैं, शरीर लेते हैं पार्ट बजाने के लिए। एक शरीर से पार्ट बजाये, फिर दूसरा लेते हैं। किसका पार्ट 100 वर्ष का, किसका 80 वर्ष का ... कोई तो जन्म लेने से पहले गर्भ में ही खत्म हो जाते हैं। अब यहाँ के पुनर्जन्म और सतयुग के पुनर्जन्म में रात-दिन का फर्क है।''

सा.बाबा 20.04.09 रिवा.

''बच्चे यहाँ देही-अभिमानी होकर बैठना है। किसको याद करना है? बाप को। ... देही-अभिमानी बनो और देहाभिमान को छोड़ते जाओ। आधा कल्प तुम देहाभिमानी होकर रहे हो, फिर आधा कल्प देही-अभिमानी होकर रहना है।''

सा.बाबा 1.05.09 रिवा.

''सतयुग त्रेता में तुम देही-अभिमानी थे। वहाँ मालूम रहता है कि हम आत्मा हैं, अब यह शरीर बूढ़ा हुआ, अब उसको छोड़ते हैं। इसको चेन्ज करना है। तुम भी

चाहिए। जब हम इस सत्य को जीवन में धारण करेंगे, तब ही हम भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता से मुक्त रहेंगे और जब हम इस व्यर्थ चिन्तन और चिन्ता से मुक्त होंगे, तब ही वर्तमान में श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ होंगे, जो हमारे उज्ज्वल भविष्य का आधार है। दुनिया में भी कहा गया है कि श्रेष्ठ कर्म का संकल्प आये तो तुरन्त करना चाहिए और किसी अकृत्य का संकल्प आये तो धैर्य से उस पर विचार करना चाहिए।

''जो कुछ होता है हू-ब-हू ड्रामा अनुसार रिपीट होता ही रहता है। ... कर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू होना तो अच्छा ही है। ... बाप भी कहते हैं - रहा हुआ हिसाब-किताब सब चुक्तू करना है। या तो योग से या फिर सज़ाओं से चुक्तू करना पड़ेगा। सज़ायें तो बहुत कड़ी हैं, उनसे बीमारी आदि में चुक्तू होता तो बहुत अच्छा। ... ज्ञान पूरा नहीं है तो बीमारी में कुड़कते रहते हैं।''

सा.बाबा 15.04.09 रिवा.

''उठते-बैठते, चलते-फिरते बाप को याद करने की प्रैक्टिस करो। मैं आत्मा इस शरीर से चलती हूँ। ... विकर्मों का बोझा सिर पर बहुत है। योग से ही विकर्म विनाश हो सकते हैं। सारे विकर्म विनाश होना मासी का घर नहीं है। अजुन कुछ न कुछ हिसाब-किताब रहा हुआ है, तब तो भोगना पड़ता है।''

सा.बाबा 26.9.08 रिवा.

''बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। विकर्म तो जन्म-जन्मान्तर के सिर पर बहुत हैं। तुम जानते हो मम्मा-बाबा, जिनको ब्रह्मा-सरस्वती कहते हैं, जो नम्बरवन में हैं, वे भी खुद कहते हैं - इतना योग लगाते हैं, मेहनत करते हैं तो भी अनेक जन्मों के पाप कटे नहीं हैं, कुछ न कुछ भोगना पड़ता है। अन्त में इस भोगना से छूट कर्मातीत अवस्था को पाना है।'' सा.बाबा 24.9.08 रिवा.

''तुम्हारे लिए मुख्य है ही याद की यात्रा। ... इन बातों से मेरा कोई वास्ता नहीं है। मेरा तो सिर्फ काम है सबको रास्ता बताना। याद से तुम्हारे सब दुख दूर हो जायेंगे। इस समय तुम्हारे कर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू होता है।... रहे हुए

''जब कर्मभोग का जोर होता है। कर्मेन्द्रियां बिल्कुल कर्मभोग के वश अपने तरफ आकर्षण करें, जिसको कहा जाता है बहुत दर्द है। ... ऐसे समय कर्मभोग को कर्मयोग में परिवर्तन करने वाले, साक्षी हो कर्मेन्द्रियों को भोगवाने वाले जो होते हैं, उनको ही अष्ट रत्न कहा जाता है, जो ऐसे समय विजयी बन दिखाते हैं।''

अ.बापदादा 4.12.72

''इस अलौकिक जीवन में आत्मा और प्रकृति दोनों की तन्दुरुस्ती आवश्यक है। जब आत्मा स्वस्थ है तो तन का हिसाब-किताब वा तन का रोग शूली से से कांटा बन जाता है। ... उसके लिए वरदान अर्थात दुआ दवाई का काम कर देती है। ... तन की शक्ति आत्मिक शक्ति के आधार पर सदा अनुभव कर सकते हो।''

अ.बापदादा 29.10.87

''बीमारी का वर्णन भी बीमारी की वृद्धि करने का कारण बन जाता है। ... कर्मयोगी परिवर्तन की शक्ति से कष्ट को सन्तुष्टता में परिवर्तन कर सन्तुष्ट रह औरों में भी सन्तुष्टता की लहर फैलायेगा। ... अर्जी डालने वाले कभी भी सदा राजी नहीं रह सकते हैं।'' अ.बापदादा 29.10.87

''निराकार और साकारी दोनों स्वरुप की स्मृति से स्वत: ही समर्थी-स्वरुप बन जायेंगे अर्थात् हेल्थ, वेल्थ और हैपीनेस का अनुभव हर समय होगा। चाहे शरीर का कर्मभोग सूली से कितना भी बड़े रुप में हो लेकिन सदा अपने को साक्षी समझने से कर्मभोग के वश नहीं होंगे। हर कर्मभोग सूली से कांटे समान अनुभव होगा।''

अ.बापदादा 27.1.76

Q. कर्मभोग की वेदना से मुक्त होने के साधन और साधना क्या है?

यथार्थ ज्ञान की धारणा और कर्मयोग का सफल अभ्यास अर्थात् परमात्मा की याद में देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास ही दैहिक और मानसिक वेदना से मुक्त होने का यथार्थ साधन और साधना है। अन्य जो भी साधन हैं वे अस्थाई हैं।

''आपेही देखना है - हम कितना याद करते हैं, जो पुराना खाता खत्म हो नया जमा हो। ... इस जन्म की जीवन कहानी सुनाने से कोई जन्म-जन्मान्तर के पाप नहीं कट जायेंगे। सिर्फ इस जन्म की हल्काई हो जाती है। बाकी जन्म-जन्मान्तर का पाप का खाता खत्म करने के लिए बहुत मेहनत करनी है।''

सा.बाबा 27.01.09 रिवा.

कर्मभोग, कर्म-बन्धन, कर्मयोग और परमात्मा

परमात्मा सर्वशक्तिवान ज्ञान का सागर है, इसलिए वह इस विश्व-नाटक के विधि-विधान को जानता है परन्तु वह इसके विधि-विधान को किसी भी रूप में तोड़ नहीं सकता है क्योंकि वह धर्मराज भी है। वह आकर हमको भी इसके विधि-विधान को बताता है परन्तु वह रहमदिल, प्रेम का सागर भी है, इसलिए आत्माओं को कर्मभोग और कर्म-बन्धन से दुखी देखकर उनके निदान का मार्ग भी बताता है, जिसको ही कर्मयोग कहा जाता है। परमात्मा के साथ यथार्थ रीति सम्बन्ध रखने वाली आत्मा सहज देह से न्यारे होकर अपने कर्मभोग और कर्म-बन्धन से मुक्ति पा लेती है, इसलिए ही कर्मभोग और कर्म-बन्धन के समय सर्वात्मायें उनको याद करती हैं। कर्मभोग आत्मा के अपने किये हुए विकर्मों अर्थात पाप-कर्मो का फल है, जो हर आत्मा को भोगना ही पड़ता है। परमात्मा उस कर्मभोग से सहज मुक्त होने का रास्ता बताता है, जो उस पर चलता है, वह उससे सहज मुक्त हो जाता है। परमात्मा डायरेक्ट किसके कर्मभोग को खत्म नहीं करता है। वह हर आत्मा को उसके कर्मभोग के विषय में कारण और उसके निवारण के उपाय बताता है, उसके पुरुषार्थ अनुसार युक्ति टच करता है परन्तु उसके लिए पुरुषार्थ हर आत्मा को अपना करना होता है।

परमात्मा निराकार है, इसलिए वह स्वयं कर्म और फल के विधि-विधान से मुक्त है, इसलिए उसका कोई कर्मभोग होता नहीं है क्योंकि एक तो उनको

दुख के कारण अनेक तन से स्वस्थ लोग जीवघात कर लेते हैं।

2. शरीरिक वेदना बड़ी कड़ी सज़ा है, जिससे आत्मा को गहरा दुख होता है।

3. यदि कोई बड़ा रोग है परन्तु आत्मा को मानसिक या शारीरिक वेदना नहीं है, तो उसको कड़ा दण्ड नहीं कहा जायेगा क्योंकि आत्मा उससे दुख का अनुभव नहीं करती है। अच्छे हठयोगियों में और राजयोगियों में ऐसे अनेक उदाहरण हैं। अभी जो सच्चे पुरुषार्थी हैं और जिन्होंने बाबा की श्रीमत पर अच्छी रीति पुरुषार्थ किया है, वे शारीरिक कर्मभोग होते भी उसकी वेदना से मुक्त रहते हैं।

Q. दादी जानकी अष्ट रत्नों में है, उसका आधार क्या है?

आदि से लेकर दृढ़ निश्चय, अथक पुरुषार्थ, निस्वार्थ और विश्व-कल्याण की सेवा और सेवा-भावना, दैवी और ईश्वरीय गुणों की धारणा, नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप की स्थिति और वर्तमान स्थिति को देखने से बुद्धि कहती है कि उनका अष्ट रत्नों में नम्बर अवश्य होगा। साकार बाबा ने भी उनकी अष्ट रत्नों के रूप में महिमा की है।

Q. बाबा ने कहा है - कोई कर्म करते तो उसके आदि-मध्य-अन्त को विचार कर कर्म करो तो पछताना नहीं पड़ेगा। तो कर्म के आदि-मध्य-अन्त के विषय में क्या विचार करना है?

विश्व-नाटक की वास्तविकता को देखें तो हर आत्मा का वर्तमान जीवन भूतकाल के कर्मों के फलस्वरूप मिला है और भविष्य जीवन वर्तमान के कर्मों के आधार पर ही मिलेगा अर्थात् आत्मा जो वर्तमान में कर्म कर रही है, उसका फल उसको सुख या दुख के रूप में अवश्य भोगना होगा। जिन आत्माओं के साथ हम वर्तमान में अच्छा या बुरा व्यवहार करेंगे, उस अनुरूप उनके व्यवहार का सामना हमको करना ही होगा। इसलिए वर्तमान में जो कर्म हम करने जा रहे हैं, उसका भविष्य फल क्या होगा, उस बात का हमको विचार अवश्य करना चाहिए और अगर किसी आत्मा ने हमारे प्रति हमारे मन के विपरीत कर्म किया है तो अपने भूत काल के कर्म के फल को समझकर धैर्य रखकर उस पर प्रतिक्रिया नहीं करनी

स्थापना में। उनके पैसे ऐसे ही बरबाद भी नहीं करने चाहिए। वे तुम्हारी परवरिश करती हैं तो तुम्हारा काम है, उनकी परवरिश करना। नहीं तो सौगुणा बोझा सिर पर चढ़ता है।'' सा.बाबा 1.07.09 रिवा.

Q. धर्मराज की मार अर्थात् सज़ाओं का स्वरूप क्या है या होगा? उससे बचने का उपाय क्या है?

वास्तव में तो आत्मा को जो भी कर्मभोग के रूप में दुख-अशान्ति होती है, स्थूल या सूक्ष्म रूप में शारीरिक-मानसिक वेदना होती है, वह सब धर्मराज की सज़ायें ही हैं परन्तु अन्त समय अर्थात् देह त्याग के समय या कल्पान्त में मृत्यु के समय होने वाला पश्चाताप विशेष धर्मराज की सज़ाओं के रूप में अनुभव होगा क्योंकि उस समय सारे कल्प का हिसाब-किताब चुक्तू होना है और हमको अभी बाबा ने ज्ञान दिया है, वह भी हमारी बुद्धि में होगा ही, जिसके लिए बाबा विशेश ध्यान खिंचवाता है। द्वापर-कलियुग में भी मृत्यु के समय आत्मा को पश्चाताप होता है और प्राय: धर्मराज की याद आती है।

देह में रहते देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल अभ्यास ही इन सज़ाओं से बचने का एकमात्र उपाय है अर्थात् साधन और साधना है। पहले से इस प्रकार का अभ्यास करने वाले के कर्म अवश्य ही श्रेष्ठ होंगे, जिसका सुखमय फल भी अवश्य ही आत्मा के साथ होगा, जिससे यदि कोई सज़ा मिलेगी भी तो उसकी महसूसता कम हो जायेगी। ये अभ्यास स्वत: में बड़ा श्रेष्ठ कर्म है, जो आत्मा को धर्मराज़ की सजाओं से मुक्त होने में सहयोगी होता है।

Q. अभी अनेक महारथी या जिन्हें हम अष्ट रत्नों में गिरती करते हैं, वे अन्त तक बीमारी कहें या हिसाब-किताब कहें पूरा करते हैं और अनेक ऐसे हैं, जिन्हें हम महारथी नहीं समझते हैं, वे सहज शरीर छोड़ देते हैं, तो जो बाबा कहते हैं 8 रत्न ही हैं, जो बिल्कुल सज़ा नहीं खाते हैं, वह किस समय का गायन है?

1. पश्चाताप सबसे कड़ी सज़ा है, जिससे आत्मा को मानसिक दुख होता है, जिससे आत्मा को असहनीय वेदना होती है। लौकिक दुनिया में इस मानसिक

अपनी देह नहीं है और दूसरे वे कोई विकर्म नहीं करते हैं। वे तो सर्वात्माओं के कल्याणार्थ ज्ञान देते हैं, जिस ज्ञान के आधार पर आत्मायें कर्म करके अपने कर्मभोग से मुक्त कर्मातीत बनती हैं और सुकर्म करके भविष्य के लिए श्रेष्ठ कर्मफल का खाता जमा करती हैं।

''यह सुख-दुख का खेल है। इस समय सभी पतित दुखी हैं, पवित्र बनने से सुख जरूर मिलता है। सुख की दुनिया बाप स्थापन करते हैं। बच्चों को बुद्धि में यह रखना है कि हमको बाप समझाते हैं, नॉलेजफुल एक बाप ही है। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान बाप ही देते हैं।'' सा.बाबा 14.01.09 रिवा.

''यह पढ़ाई है। तुम कल्प-कल्प ऐसे ही पढ़ते हो, बाप भी कल्प-कल्प ऐसे ही पढ़ाते हैं। जो टाइम पास हुआ, वह ड्रामा। ड्रामा अनुसार ही बाप और बच्चों की एक्ट चली। ... बाप नॉलेजफुल है, वह सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं।''

सा.बाबा 15.01.09 रिवा.

''कल्प पहले जो हुआ, वह रिपीट होता रहेगा। बच्चे भी वृद्धि को पाते रहेंगे। ड्रामा बिगर कुछ होने का नहीं है। यह जो लड़ाइयां आदि लगती हैं, इतने मनुष्य आदि मरते हैं, यह सब ड्रामा में नूँध है। ... मनुष्य भल क्या भी विचार करें लेकिन मैं तो वही पार्ट बजाऊंगा, जो मेरा नूँधा हुआ है। ड्रामा में कम-जास्ती हो नहीं सकता।''

सा.बाबा 15.01.09 रिवा.

''ड्रामा में जो कुछ नूँध है, उसे साक्षी होकर देखना होता है। ... इसमें रोने-रुसने की कोई बात नहीं है। कोई नई बात थोड़ेही है। अफसोस उनको होता है, जो ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को रियलाइज़ नहीं करते। ... ये बड़ी आश्चर्यवत् विचार सागर मन्थन करने की बातें हैं। ... तुम थोड़ेही कहेंगे कि हम रचता-रचना को नहीं जानते।'' सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''तुमको कोई भी बात में अफसोस करने की जरूरत नहीं है। सदैव हर्षित रहना है। ... यह तो बेहद का अविनाशी ड्रामा है। ऐसी-ऐसी बातों पर विचार कर पक्का कर लेना चाहिए। ... पार्ट बजाते-बजाते हम सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हैं, फिर

सतोप्रधान बनना है।'' सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''बाप आकर बेहद का सन्यास कराते हैं क्योंकि यह पुरानी दुनिया खत्म होने वाली है, इसलिए बाप कहते हैं - इस कब्रिस्तान से बुद्धि निकाल मुझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। अब क़यामत का समय है, सबका हिसाब-किताब चुक्तू होने वाला है।'' सा.बाबा 27.02.09 रिवा.

''यह सब वायदे बाप के पास चित्रगुप्त के रूप में हिसाब के खाते में नूँधे हुए हैं। ... पत्र जो लिखकर दिया वह पत्र वा संकल्प सूक्ष्मवतन में बापदादा पास सदा के लिए रिकार्ड में रह गया।'' अ.बापदादा 31.3.86

''मैं निराकार रूप में तो कुछ देख नहीं सकता हूँ। आरगन्स बिगर आत्मा कुछ भी कर न सके। यह तो अन्धश्रृद्धा है, जो कहते हैं ईश्वर सब कुछ देखता है। अच्छा या बुरा काम हर एक ड्रामा अनुसार करते हैं। मैं थोड़ेही बैठ इतने करोड़ों मनुष्यों का हिसाब रखूँगा। मुझे शरीर है तब सब कुछ करता हूँ। करन-करावनहार भी तब कहते हैं, जब शरीर में आते हैं। नहीं तो कह न सकें। पार्ट बिगर कोई कुछ कर न सके। शरीर बिगर आत्मा कुछ कर नहीं सकती।'' सा.बाबा 1.2.05 रिवा.

''बच्चे जानते हैं स्वीटेस्ट बाबा हमको मोस्ट स्वीटेस्ट बना रहे हैं। बाबा बार-बार बच्चों को कहते हैं - मीठे बच्चे अपने को अशरीरी आत्मा समझ मुझे याद करो तो मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि इस याद से तुम्हारे सब क्लेष मिट जायेंगे।''

सा.बाबा 29.01.09 रिवा.

''मन्सा में तूफान जरूर आयेंगे। तुम भल सच बताओ वा न बताओ परन्तु बाप खुद जानते हैं कि माया के बहुत विकल्प आयेंगे परन्तु कर्मोन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना। ... अभी तुम जो बाप द्वारा यह गीता सुनते हो, उससे तुम 21 जन्मों के लिए सद्गति को पाते हो।'' सा.बाबा 28.01.09 रिवा.

उसका कारण हमारे विकर्म हैं, इस सत्य को समझकर हमको और विकर्मों से बचने और सुकर्म करने का पुरुषार्थ अवश्य करना चाहिए।

Q. कर्मफल का आधार क्या है?

हम जो आत्माओं को सुख देते हैं, प्रकृति को पावन बनाने में योगबल का सहयोग देते हैं या अपना तन-मन-धन लगाते हैं, उससे हमारा कर्मफल का खाता जमा होता है, जो हमारे लिए सुख का आधार बनता है। इसके सम्बन्ध में बाबा ने अनेक बार अव्यक्त मुरलियों में बताया है कि श्रेष्ठ कर्मफल का खाता कैसे जमा होता है या जमा करना है। कर्म ही कर्मफल का और कर्मभोग का आधार है। श्रेष्ठ कर्मों से श्रेष्ठ कर्मफल का खाता जमा होता है, जो आत्मा के सुख का आधार है।

Q. किसकी धन-सम्पत्ति को उसकी इच्छा और प्यार से लेकर सेवा में लगाते, अपने निजी उपयोग में लगाते, विलासिता पूर्वक उपभोग करते, तो उसका क्या हिसाब-किताब बनता है या बनेंगा?

यज्ञ में किन्हीं आत्माओं से यज्ञ सेवा अर्थ मिली साधन-सम्पत्ति को अन्य आत्माओं की सेवा में लगाते तो उससे हमारा कर्मफल का खाता जमा होता है अर्थात् हम अन्य आत्माओं से मिली साधन-सम्पत्ति को सफल करते हैं तो हमको उससे कमीशन मिलता है अर्थात् हमारा कर्मफल का खाता जमा होता है। उस मिले साधन और सम्पत्ति को हम अपने निजी उपयोग में लगाते हैं तो उन आत्माओं से हमारा कर्म-बन्धन और कर्म-सम्बन्ध का खाता बनता है और यदि हम उसको विलासिता पूर्वक अर्थात् विलासिता के साधनों में उपयोग करते हैं तो हमारा कर्मभोग और कर्म-बन्धन दोनों का खाता बनता है, जो अन्त तक हमको चुक्ता करना ही पड़ता है। सतयुग नई दुनिया के लिए कर्मफल का और कर्म-सम्बन्ध का खाता अर्थात् हिसाब-किताब ही जाता है, जिसके आधार पर कोई राजा बनता है और कोई दास-दासी बनता है।

''फालतू खर्चा नहीं करना चाहिए क्योंकि अबलायें ही मदद करती हैं स्वर्ग की

प्रकृति द्वारा प्रदत्त साधन-सामग्री, जिसका हम दुरुपयोग करते हैं, आवश्यकता से अधिक उपभोग करते हैं, प्रकृति के नियम-संयम का उलंघन करते हैं, उनसे हमारा कर्मभोग का खाता बनता है और जाने-अन्जाने प्रकृति द्वारा हमको उसका फल मिलता है, जो कर्मभोग अर्थात् दैहिक व्याधि के रूप में आता है। इस बात का ध्यान भी रखना अति आवश्यक है कि प्रकृति और व्यक्तियों कं साथ आत्मा का साथ-साथ हिसाब चलता है। किसी में व्यक्तियों के साथ के हिसाब-किताब की प्रधानता होती है और किसी में प्रकृति के साथ के हिसाब-किताब की प्रधानता होती है।

भगवान के बच्चे बनकर दुखी होना या रोना भी सुखदाता बाप का नाम बदनाम करना है। दुखी होना या रोना भी विकर्म बन जाता है। इसलिए बाबा की श्रीमत है- बच्चे तुमको कब रोना नहीं है। रोना प्रत्यक्ष भी होता है तो अप्रत्यक्ष भी होता है अर्थात् कोई बाहर से रोते हैं और कोई मन से रोते हैं। दोनों प्रकार से रोना नहीं है। ''बापदादा आये हुए बच्चों को एक वरदान देता है ... वरदान है - अगर आपको कोई दुख दे तो भी आप दुख लेना नहीं। ... लेने वाला ज्यादा दुखी होता है। ... आप उसको दुख के बजाये सुख देंगे तो आपको दुआयें मिलेंगी। तो खुशी भी रहेगी और दुआओं का खज़ाना भी भरपूर होता जायेगा।'' अ.बापदादा 4.9.05

वास्तविकता ये है कि दुख लेते हैं, तब ही दुख देने का संकल्प उठता है या फिर उदण्डता के वशीभूत किन्ही निरीह असहाय जीवों को दुख देते हैं या फिर अपने सुख के लिए निरीह प्राणियों की हत्या करते हैं। इन सबका हमारे सुख-दुख से क्या सम्बन्ध है, इस सबका ज्ञान भी दिया है और इससे बचने के लिए बाबा ने श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है - यदि तुम किसको दुख देंगे तो तुमको भी दुख अवश्य मिलेगा, तुम दुखी होकर मरेंगे। बाबा ये कोई श्राप नहीं देते हैं परन्तु कर्म का लॉ बतलाते हैं। इस सत्य का ज्ञान भी बुद्धि में अवश्य रखना चाहिए कि इस सृष्टि में कोई भी क्रिया बिना कारण के नहीं होती है। यदि हमको किसी भी प्रकार दुख हो रहा है तो

कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय और विश्व-नाटक

कर्मयोग का पुरुषार्थ, कर्मभोग और कर्म-बन्धन की समाप्ति और विश्व-नाटक दृश्य तीनों समानान्तर चलते हैं। आत्मा विश्व-नाटक के अनुसार समय आने पर विकर्मी बनकर विकर्म करती हैं, जिसके फल स्वरूप आत्मा को कर्मभोग और कर्म-बन्धन के रूप में उनका फल भोगना होता है और विश्व-नाटक के विधि-विधान के अनुसार ही पुरुषोत्तम संगमयुग पर परमात्मा आकर विश्व-नाटक का सत्य ज्ञान देते हैं, जिससे आत्मायें अपने मूल स्वरूप को, परमात्मा के स्वरूप को और विश्व-नाटक के विधि-विधान को समझकर परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर अपने कर्मभोग और कर्म-बन्धन पर विजय पाती हैं। विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा की याद में अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती हैं।

विश्व-नाटक के ज्ञान की वास्तविकता पर विचार करें तो विश्व-नाटक में विकर्म करने, कर्मभोग और कर्म-बन्धन आने और कर्मयोग के पुरुषार्थ द्वारा कर्मभोग और कर्म-बन्धन पर विजय पाने की अनादि-अविनाशी नूँध है, इसलिए वह सब होना ही है, उसमें कुछ भी परिवर्तन नहीं हो सकता है। आत्मा को कर्मभोग और कर्म-बन्धन के कारण दुख भोगना ही है और कर्मफल और कर्म-सम्बन्ध के द्वारा सुख भी भोगना ही है, इसलिए दोनों के लिए कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है कि अभी जब बाबा ने सत्य ज्ञान दिया है तो उसको धारण करके अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर कर्मयोग का सफल अभ्यास करके इस विश्व-नाटक के दिग्दर्शन का सुख अनुभव करने और परमात्म-मिलन का सुख अनुभव करने की। इस कर्मयोग के द्वारा कर्मभोग और कर्म-बन्धन स्वत: ही खत्म हो जायेंगे। परन्तु इस सबको जानकर पुरुषार्थहीन नहीं बन जाना है। वैसे तो विश्व-नाटक का विधि-विधान पुरुषार्थहीन होने नहीं देगा क्योंकि हमारे पुरुषार्थ की जो नूँध है, वह हमको बजानी ही होगी। इस सबको जानकर इस विश्व-नाटक का परम सुख अनुभव करना है।

आत्मिक स्वरूप में स्थित होने से आत्मा को शान्ति की अनुभूति हो सकती है, विश्व-नाटक का ज्ञान बुद्धि में रख साक्षी होकर पार्ट बजाने से सुख की अनुभूति हो सकती है परन्तु चढ़ती कला नहीं हो सकती है। चढ़ती कला तब ही होगी, जब आत्मा परमपिता परमात्मा को बुद्धि में रख अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी या आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा को याद करेगी, विश्व-नाटक में पार्ट बजायेगी। अन्य आत्माओं के सम्पर्क में आते समय परमात्मा की याद होगी अर्थात् दोनों के बीच में परमात्मा होगा तब ही आत्मा की अपनी चढ़ती कला होगी और अन्य आत्माओं का भी कल्याण होगा। बाबा ने कहा है - जहाँ बाप है, वहाँ पाप हो नहीं सकता और जहाँ बाप नहीं है, वहाँ पाप अवश्य होगा और जब पाप होगा तो चढ़ती कला का प्रश्न ही नहीं, उतरती कला ही होगी।

दुनिया में भी कहा गया है - Events can't be changed, but we can change our attitude towards events. अर्थात् जो कल्प पहले हुआ है वह होगा ही, उसमें परिवर्तन नहीं किया जा सकता है परन्तु कर्मयोग के सफल पुरुषार्थ से हम अपने दृष्टिकोण और स्थिति (आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर) के द्वारा कर्मभोग या कर्म-बन्धन से प्राप्त होने वाले दैहिक और मानसिक वेदना की महसूसता को कम कर सकते हैं, उसके कारण को जानकर उससे सहज पार हो सकते हैं।

''कल्प पहले जो हुआ, वह रिपीट होता रहेगा। बच्चे भी वृद्धि को पाते रहेंगे। ड्रामा बिगर कुछ होने का नहीं है। यह जो लड़ाइयां आदि लगती हैं, इतने मनुष्य आदि मरते हैं, यह सब ड्रामा में नूँध है। ... मनुष्य भल क्या भी विचार करें लेकिन मैं तो वही पार्ट बजाऊंगा, जो मेरा नूँधा हुआ है। ड्रामा में कम-जास्ती हो नहीं सकता।''

सा.बाबा 15.01.09 रिवा.

''मूल बात है काम कटारी की। यह भी ड्रामा है ना। ऐसे भी नहीं कहेंगे कि ऐसा ड्रामा क्यों बना? यह अनादि खेल है, इसमें मेरा भी पार्ट है। ड्रामा कब बना, कब पूरा होगा - यह भी नहीं कह सकते। ... आत्मा अविनाशी है, उसमें पार्ट भी

जिसके आधार पर आत्मा का भविष्य का सुख-दुख निर्भर करता है। इसलिए बाबा कहते हैं - न दुख दो न दुख लो, सुख दो सुख लो। दुआयें दो और दुआयें लो। बाबा ने श्रीमत दी है अभी तुमको योग द्वारा अपना पुराना कर्म-बन्धन का हिसाब-किताब चुक्ता करना है और कोई ऐसा कर्म नहीं करना है, जिससे नया कर्म-बन्धन का हिसाब-किताब बनें। अभी तुमको श्रेष्ठ कर्मों द्वारा सतयुग के लिए श्रेष्ठ कर्म-सम्बन्ध का हिसाब-किताब बनाना है।

''कयामत का समय भी इसको कहा जाता है। आसुरी बन्धन का सब हिसाब-किताब चुक्तू कर फिर वापस चले जाते हैं। ... तुम ही इस चक्र में आते हो। बुद्धि में यह नॉलेज सदैव रहनी चाहिए और फिर समझाना भी है। धन दिये धन न खुटे। ... जो कुछ होता है, कल्प पहले मुआफिक। ऐसे समझ शान्त रहना होता है।''

सा.बाबा 13.11.05 रिवा.

''एक-दो के प्रति दिल में बिल्कुल सफाई हो। ... जहाँ सच्चाई-सफाई होती है, वहाँ समीपता होती है। ... वहाँ भी आपस में समीप सम्बन्ध में कैसे आयेंगे? जब यहाँ दिल समीप होगी।''

अ.बापदादा 9.10.71

''शक्तियों के भक्त और बाप के भक्त अलग-अलग हैं। ... जिन आत्माओं को जिन श्रेष्ठ आत्माओं वा निमित्त बनी हुई आत्माओं के द्वारा कुछ-न-कुछ प्राप्ति का अनुभव होता है, उन द्वारा साक्षात्कार होता है या कोई वरदान प्राप्ति का अनुभव होता है, उस आधार पर वे उनकी प्रजा वा भक्त बनते हैं।''

अ.बापदादा 14.7.74

''पिछले हिसाब को भी खुशी से चुक्तू करो, चिन्ता से नहीं ... अन्त में अगर बन्धन याद रहा तो गर्भ-जेल में जाना पड़ेगा और खुशी-खुशी से जायेंगे तो एडवान्स पार्टी में सेवा के लिए जायेंगे। ... सदा अतीन्द्रिय सुख अर्थात आत्मिक सुख में रहो।''

अ.बापदादा 5.12.89 पार्टी 2

Q. कर्मभोग का कारण क्या?

को चुक्ता करने की शक्ति आती है और कर्म-बन्धन से मुक्त होने की युक्ति टच होती है। जो परमात्मा को याद कर श्रेष्ठ कर्म करते हैं, उनके कर्मों का श्रेष्ठ फल जमा होता है, इसलिए वे किसी दुर्घटना आदि के समय भी बच जाते हैं या पार्ट अनुसार देह भी त्याग कर देते हैं। परमात्मा किसी को बचाये और किसी को न बचाये तो ये तो उनके निष्कामपन पर दोष आ जाये। परमात्मा को याद करने वाली आत्मायें अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के कारण उनके शुभ-कर्मों का फल भी जमा होता है और आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के कारण उनको सदा ही कल्याण की युक्ति टच होती है, उनसे सदा ही कल्याण का कर्तव्य होता है। परमात्मा तो सर्वात्माओं का कल्याणकारी है और वह सदा ही निष्काम भाव से सर्वात्माओं के कल्याणार्थ कर्म करता है, अपनी शक्तियों को विखेरता करता है।

Q. कर्म-बन्धन का कारण क्या है और कर्म-सम्बन्ध का आधार क्या है?

कर्म-बन्धन का कारण हमारे वे कर्म हैं, जिनसे अन्य आत्माओं को दुख होता है, उनका अहित होता है। वे कर्म ही आत्मा के कर्म-बन्धन का कारण बनते हैं।

हमारी जिन कर्मों से अन्य आत्माओं को सुख मिलता है, उनका कल्याण होता है। वे कर्म ही कर्म-सम्बन्ध का आधार बनते हैं। अन्य आत्माओं के कर्म, जिनसे हम सुख अनुभव करते हैं और उनसे वैसे कर्मों की अपेक्षा रखते हैं, वे भी कर्म-सम्बन्ध का निर्माण करते हैं परन्तु वह स्थिति हमारा दास-दासी या नौकर-चाकर के रूप में सम्बन्ध बनता है क्योंकि जिन आत्माओं के कर्मों से हम सुख पाते हैं तो उसका हिसाब-किताब तो चुक्ता करना ही होगा, जो इस विश्व-नाटक का विधान है। हमारे हर कर्म का कैसे हिसाब-किताब बनता है और उसका शुभाशुभ परिणाम क्या होता है, उसके विषय में भी ज्ञान दिया है और हमारा सबके साथ सुखदायी हिसाब-किताब बने, उसके लिए भी श्रीमत दी है। आत्मा जो भी कर्म करती है, उसका प्रभाव अन्य आत्माओं और प्रकृति को अवश्य ही प्रभावित करता है। आत्मा का प्रभाव वातावरण पर और वातावरण का प्रभाव आत्मा पर पड़ता है,

अविनाशी है, ड्रामा भी अविनाशी है।'' सा.बाबा 9.02.09 रिवा.

''भगवान से पवित्र बनने की प्रतिज्ञा कर फिर तोड़ते हो तो तुम्हारा क्या हाल होगा। ... देहाभिमान में आने से ही वृत्ति खराब होती है, इसलिए बाप कहते हैं - देही-अभमानी भव। ... यह बेहद का ड्रामा है। बनी-बनाई बन रही ... होना ही है, फिर हम चिन्ता क्यों करें?।'' सा.बाबा 10.02.09 रिवा.

''ड्रामा में जो कुछ नूँध है, उसे साक्षी होकर देखना होता है।... इसमें रोने-रुसने की कोई बात नहीं है। कोई नई बात थोड़ेही है। अफसोस उनको होता है, जो ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को रियलाइज़ नहीं करते। ... ये बड़ी आश्चर्यवत् विचार सागर मन्थन करने की बातें हैं। ... तुम थोड़ेही कहेंगे कि हम रचता-रचना को नहीं जानते।'' सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''तुमको कोई भी बात में अफसोस करने की जरूरत नहीं है। सदैव हर्षित रहना है। ... यह तो बेहद का अविनाशी ड्रामा है। ऐसी-ऐसी बातों पर विचार कर पक्का कर लेना चाहिए। ... पार्ट बजाते-बजाते हम सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हैं, फिर सतोप्रधान बनना है।'' सा.बाबा 17.02.09 रिवा.

''यह भी बाप जानते हैं कि ड्रामा अनुसार जो कुछ चलता है, वह ठीक है। फिर भी पुरुषार्थ कराते रहते हैं। ... कब-कब बाप भी किसमें प्रवेश कर मदद करते हैं। ... फिर कोई को तो अपना अहंकार आ जाता है। यह मदद करना भी ड्रामा में उनका पार्ट नूँधा हुआ है। ड्रामा बड़ा विचित्र है, इसे समझने में भी बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए।'' सा.बाबा 18.02.09 रिवा.

''बहुत बच्चियाँ पुकारती हैं - हमको नग्न होने से बचाओ। अब बाप क्या करेंगे। बाप सिर्फ कह देंगे - ड्रामा की भावी। यह तो बना-बनाया ड्रामा है। ... बहुतों को संशय आता है - अगर भगवान के बच्चे हैं तो क्या भगवान भी अपने बच्चों को नहीं बचा सकते! ... जो ड्रामा में नूँध है, वही होता है। बाप भी कुछ नहीं कर सकता।''

सा.बाबा 3.03.09 रिवा.

''जो भी धर्म स्थापन करने आते हैं, उनके पीछे उनके धर्म वालों को नीचे उतरना

है। वे किसको चढ़ायेंगे कैसे ? सबको सीढ़ी नीचे उतरनी ही है। पहले सुख, पीछे दुख होता है। यह नाटक बड़ा फाइन बना हुआ है। इस पर विचार-सागर मन्थन करने की जरूरत है।'' सा.बाबा 13.02.09 रिवा.

''बाप का फरमान बहुत सहज भी है तो बहुत कड़ा भी है। कितना भी माथा मारे फिर भी भूल जायेंगे क्योंकि आधा कल्प का देहाभिमान है ना। ... अगर सारा दिन याद में रहे तो कर्मातीत अवस्था हो जाये। ... कल्प पहले जिसने जितना पुरुषार्थ किया है, उतना ही करेंगे।'' सा.बाबा 28.01.09 रिवा.

कर्मभोग और सृष्टि-चक्र

सतयुग-त्रेता है कर्मयोग के फल का उपभोग करने का युग और संगमयुग है कर्मयोग का समय अर्थात् कर्मयोग के द्वारा अपने भूतकाल के विकर्मों के खाते अर्थात् कर्मभोग को खत्म करने और श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा श्रेष्ठ कर्मफल का खाता जमा करने का समय। पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही परमपिता परमात्मा आकर कर्मयोग सिखलाते हैं।

द्वापर-कलियुग में होता है कर्मभोग क्योंकि आत्मायें देहाभिमान के कारण विकर्म करती हैं, जिसके फलस्वरूप दुख-अशान्ति की भोगना होती है, जिसको कर्मभोग के रूप में जाना जाता है। द्वापर-कलियुग में आत्मायें कर्म भी करती हैं और विकर्म भी करती हैं, जिससे उनको सुख और दुख दोनों का फल मिलता है परन्तु विकर्म अधिक होते हैं, इसलिए कर्मभोग अर्थात् दुख-अशान्ति की भोगना अधिक होती है, सुख नाममात्र मिलता है।

वास्तव में कर्मभोग तो सारे कल्प चलता है कयोंकि ये विश्व-नाटक कर्म और फल पर आधारित है। सारे कल्प आत्मायें कर्म करती हैं और उसका ही फल भोगती हैं। सतयुग-त्रेता की प्रालब्ध भी आत्माओं को अपने कर्मानुसार ही मिलती है, जो कर्म संगमयुग पर परमात्मा सिखलाते हैं।

मुख्य भूमिका है क्योंकि कई बार देखा गया है शरीर कमजोर होते भी आत्मा बड़े-बड़े कर्म करती है और अपने को सुखी अनुभव करती है और कोई-कोई शरीर स्वस्थ एवं धन-धान्य होते भी जीवघात कर लेते हैं। वास्तव में सच्चे स्वास्थ के लिए जीवन में तन-मन-धन-जन सबका स्वस्थ होना अति आवश्यक है, जो कर्मयोग से ही सम्भव है, जिसका अनुभव आत्मा अपने पुरुषार्थ अनुसार अभी भी करती है और भविष्य में भी करेगी।

सच्चा स्वास्थ्य लाभ होने की मुख्य प्रक्रिया है - पहले तो रोगों का कारण जानना और उसके उपचार के लिए सफल अभ्यास करना। बाबा ने हमको अभी सर्व प्रकार का ज्ञान दिया है, जिससे हमको रोगों का, कर्मभोग का, कर्म-बन्धन का कारण समझ में आया है और बाबा ने उसके निदान के लिए भी ज्ञान दिया है, जिसको कर्मयोग कहा जाता है। जो इस कर्मयोग का यथार्थ रीति अभ्यास करते हैं, वे अवश्य ही सच्चे स्वास्थ्य को अभी भी अनुभव करते हैं और भविष्य में स्वस्थ तन-मन-धन-जन प्राप्त करते हैं। इस कर्मयोग के अभ्यास का प्रथम सोपान है - यथार्थ ज्ञान को समझकर देह से न्यारे होकर अपने मूल स्वरूप होने की स्थिति में स्थित होना और परमात्मा को उनके यथार्थ स्वरूप में जानकर प्यार से याद करना। उसके बाद सारा काम स्वत: हो जाता है अर्थात् होता रहता है।

Q. यदि परमात्मा कर्मभोग या कर्म-बन्धन से मुक्त होने में जो उनको याद करते हैं, उनको मदद करता है और जो याद नहीं करते, उनको मदद नहीं करता है तो क्या ये उनकी कामना नहीं कही जायेगी कि जो उनको याद करें, उनको मदद करे और जो न याद करें, उनको मदद नहीं करे ?

वास्तव में परमात्मा तो ज्ञान-गुण-शक्तियों का सागर है और सदा निष्काम है। उनकी ज्ञान-गुण-शक्तियों के प्रकम्पन सदा सर्वात्माओं के लिए सतत फैल रहे हैं परन्तु जो उनको याद करते हैं तो वे जरूर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होते हैं और जो अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होता है, उसमें उन प्रकम्पनों के आधार पर परमात्मा की मदद का अनुभव होता है और उसमें स्वत: ही कर्मभोग

मुखारविन्द से सुनते भी हैं कि उन्होंने कैसे अप्रत्याशित रूप से आयी हुई परिस्थितियों पर और आये हुए अपने कर्मभोग पर कर्मयोग के द्वारा विजय पायी और उसका उदाहरण के रूप में न केवल इस यज्ञ में बल्कि देश-विदेश में प्रस्तुत किया और कर रही हैं। इतनी बड़ी आयु होते भी उनका उमंग-उत्साह, विश्व-कल्याण की भावना, कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय का पुरुषार्थ, कर्मयोगी स्थिति हम सबके लिए प्रेरणा स्रोत है, अनुकरणीय है।

इस प्रकार इस विश्व-नाटक के विधि-विधान पर हम गहराई से विचार करें तो अपने श्रेष्ठ कर्मफल का संचय ही सर्वश्रेष्ठ संचय है, जो आत्मा को सदा, सर्वदा और सर्वत्र सहयोग करता है अर्थात् आत्मा के काम आता है। यह अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक है, जिसकी हर घटना अप्रत्याशित है क्योंकि हमको किसी भी होने वाली घटना के विषय में स्पष्ट ज्ञान नहीं है और ये ज्ञान न होना ही इसकी विशेषता है, जो इसको मनोरंजक बनाती है। इन्ही सब बातों के आधार पर कहा गया है - नर चाहत कछु और है, प्रभु चाहत कछु और, और की और ही भई। इन सबके होते हुए भी ये विश्व-नाटक परम कल्याणमय है, सुखी और शान्त जीवन के लिए उस कल्याणमयता को समझना हमारा परम कर्तव्य है। बाबा ने हमको इसके भविष्य के सम्बन्ध में तो बताया है परन्तु किसी घटना के विषय में बाबा ने कभी नहीं बताया है और न ही बतायेगा। बाबा ने कहा है - यदि बाबा पहले से बता दे तो ये आर्टिफिशियल हो जाये, इसलिए वह सब अप्रत्याशित रूप से ही होना है, जिसके लिए बाबा ने हमको अचानक और एवर-रेडी का पाठ पढ़ाया है और कूट-कूट कर पक्का कराया है और करा रहा है।

प्रश्नावली अर्थात् प्रश्न और सम्भावित उत्तर

Q. क्या कर्मयोग के द्वारा इस जीवन में स्वास्थ्य लाभ किया जा सकता हे और यदि किया जा सकता है तो कैसे और कितने तक तथा उसकी क्या प्रक्रिया है?

किया जा सकता है क्योंकि सच्चे स्वास्थ्य की अनुभूति में मानसिक स्थिति की

आत्मा, कर्म और स्वर्ग

कर्मभोग और स्वर्ग

सतयुग-त्रेता आधा कल्प स्वर्ग होता है, जहाँ आत्मायें संगमयुग पर किये गये कर्मों के श्रेष्ठ कर्मफल का उपभोग करती हैं। आत्माओं में आत्मिक शक्ति होती है, जिसके कारण आत्माओं से कोई विकर्म होता नहीं, इसलिए किसी प्रकार के कर्मभोग अर्थात् दुख-अशान्ति की भोगना नहीं भोगनी होती है। सारा जीवन सुख-शान्ति सम्पन्न होता है। सतयुग-त्रेता में विकार नहीं होते, इसलिए उसको स्वर्ग कहा जाता है।

आत्मा, कर्म और नर्क

कर्मभोग और नर्क

द्वापर युग से आत्माओं की आत्मिक शक्ति कम हो जाती है, जिससे देहाभिमान उस पर हावी हो जाता है, जिसके फलस्वरूप आत्मायें विकारों में प्रवृत्त होकर विकर्म करती हैं, जिसकी भोगना कर्मभोग अर्थात् रोग-शोक, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति के रूप में भोगनी होती है। द्वापर-कलियुग में भी जो आत्मायें परमधाम से नई आती हैं, उनको आते ही कर्मभोग नहीं होता है। अपने पार्ट का आधा समय सुख-शान्ति से रहती हैं और आधा समय कर्मभोग आदि की भोगना भोगनी होती है। द्वापर-कलियुग में विकार होते हैं, इसलिए उसको नर्क कहा जाता है।

''अभी साधू-सन्त आदि ढेर निकल पड़े हैं। उनकी भी महिमा होती है। पवित्र हैं तो उनकी महिमा जरूर होनी चाहिए। अभी नये उतरे हैं। ... पुराने तो सुख भोग तमोप्रधान बन गये हैं। ... इस बेहद के झाड़ को कोई जानते नहीं हैं।''

सा.बाबा 6.08.09 रिवा.

आत्मा, कर्म और संगमयुग

कर्मभोग और संगमयुग

संगमयुग है कर्मयोग का युग, जहाँ आत्मायें कर्मयोग के द्वारा अपने आधे कल्प का विकार्मों का खाता भस्म करती हैं और आधे कल्प के लिए सुकर्मों का खाता जमा करती हैं। कर्मयोग का ज्ञान और उसका विधि-विधान परमात्मा आकर बताते हैं। इसलिए संगमयुग है कर्मभोग से मुक्त होने और कर्मफल को जमा करने का समय।

''संगम पर ही ब्राह्मण, धर्म और कर्म को कम्बाइण्ड करते हैं ... धर्म का अर्थ है - दिव्य गुण धारण करना। ... धर्म भी हो और कर्म भी हो, इसका ही अभ्यास परमात्मा सिखलाते हैं।... धर्म और कर्म का प्रवृत्ति मार्ग कहो या कर्म और योग का प्रवृत्ति मार्ग कहो, बात एक ही हो जाती है।'' अ.बापदादा 3.2.76

''अभी फिर भी कोई व्यर्थ अथवा अशुद्ध संकल्प चलने की प्रत्यक्ष रुप में कोई सज़ा नहीं मिल रही है, लेकिन थोड़ा आगे चलेंगे तो कर्म की तो बात ही छोड़ो लेकिन अशुद्ध वा व्यर्थ जो संकल्प हुआ, किया उसकी सज़ा का भी अनुभव करेंगे।''

अ.बापदादा 3.5.72

समर्पित जीवन, कर्मभोग और कर्मयोग

Q. ज्ञान में आने और तन से समर्पित होने के बाद जो परस्पर सम्बन्धों में कटुता आ जाती, जिससे व्यवहार आदि में विकृति आ जाती, जिससे आत्मा को दुख होता, अनैतिक और अमर्यादित कार्य करने के लिए आत्मायें प्रेरित होती या बाध्य होती तो ये कर्म-सम्बन्ध हैं या कर्म-बन्धन? यदि कर्म-बन्धन हैं तो उनसे मुक्त होने की साधना क्या है?

वास्तव में वे सभी सम्बन्ध कर्म-बन्धन हैं, जिनसे आत्मा को दुख-अशान्ति की अनुभूति होती है, इसलिए ज्ञान में आने के बाद भी ऐसे सम्बन्ध कर्म-बन्धन ही हैं।

दादा विश्वरतन जी तो सारे यज्ञ के लिए आदर्श हैं ही परन्तु इन चारो ने भी निर्संकल्प होकर एकबल, एक भरोसे, एक आश-विश्वास के आधार पर अपना तन-मन-धन यज्ञ में सफल किया, कोई संचय नहीं किया, यज्ञ सेवा में लगे रहे और उस एकबल, एक भरोसे और एक आश-विश्वास ने अन्त तक उनको सहयोग दिया। अन्त में यहाँ पर ही संकल्प को विराम मिला और आत्मा ने निर्णय किया कि कर्मफल का संचय ही सबसे श्रेष्ठ संचय है, वही जीवन की सर्वश्रेष्ठ सुरक्षा है। अपनी ईश्वरीय प्राप्तियों को सामने रखकर सदा निश्चिन्त, निर्संकल्प, निर्भय होकर रहना और ईश्वरीय सेवा करना ही हमारा परम कर्तव्य है। कर्तव्य अधिकार की प्राप्ति अवश्य कराता है। इस विश्व-नाटक में कर्म और फल का अद्वितीय सन्तुलन है, जिसके फलस्वरूप आत्मा को उसके मन्सा-वाचा-कर्मणा किये गये कर्मों का फल अप्रत्याशित रूप से मिलता ही है। उसके विषय में अंशमात्र भी विचार करने का स्थान नहीं है।

इसके साथ अनेक भाई-बहनें, दादियों का जीवन सामने आया, जिनको भले पूर्व जन्म के कर्मानुसार बीमारी बड़ी थी परन्तु वर्तमान में किये गये अपने पुरुषार्थ के आधार पर उनको सर्वात्माओं का सहयोग मिला और वे उस कर्मभोग की वेदना से मुक्त रहे। इनमें हम सबकी प्यारी आदरणीय दादी प्रकाशमणी जी, ध्यानी दादी, भोली दादी, दादा आनन्द किशोर आदि-आदि मुख्य हैं। ऐसे ही हम सन्तरी दादी जी को देखें तो कैसे अन्त समय कलकत्ते से अपना सारा कारोबार पूरा करके आई और मधुवन में आकर अमृतवेले सहज रीति अपनी इस पार्थिव देह का त्याग किया। अभी भी हम आदरणीया अपनी निर्मशान्ता दादी जी, भूरी दादी जी आदि को देखते हैं, जिनकी इतनी बड़ी आयु है फिर भी सहज ही देखने में आती हैं। ये सब इन आत्माओं के संचित कर्मफल का प्रभाव है, जिसने उनको सहयोग दिया और दे रहा है।

वर्तमान समय इस ईश्वरीय यज्ञ की निमित्त आधारमूर्त और विश्व की उद्धारमूर्त आदरणीया जानकी दादी जी के जीवन को देखते भी हैं और उनके

मेरे जीवन के आदर्श रहे, आदर्श हैं और आदर्श रहेंगे। उन भाइयों में मुख्य हैं यज्ञ के आदि-रतन, जिनको प्यारे बापदादा ने कल्प-वृक्ष की जड़ों में बिठाया है, वे हैं आदरणीय दादा विश्वरतन जी, जिनका जीवन यज्ञ में आने के समय से ही हमारे लिए प्रेरणा-स्रोत रहा है। आदरणीय दादी जी ने भी अनेक बार कुमारों के क्लास में उनको आदर्श के रूप में सामने लाया और उनके गुण-कर्तव्यों का वर्णन किया। जिन्होंने आदि से ही एक भरोसा, एक बल, एक आश-विश्वास के आधार पर अपने जीवन को यज्ञ में समर्पित किया, अपने समय, श्वांस, संकल्प को सफल किया और अन्तिम मन्जिल पर पहुँचने के अन्तिम दिन तक यज्ञ-सेवा की और चलते-फिरते सहज ही देह का त्याग किया।

दादा विश्वरतन के अतिरिक्त वरिष्ट भाइयों में रवीदत्त भाई जी, खन्ना जी, गुरुमुख दादा जी, सन्तराम भाई का जीवन-वृतान्त सामने आया, जिन चारो के अपने परिवार हैं, पुत्र-पोत्रे हैं। चारो ने ही यज्ञ में अपने तन-मन-धन से सेवा की और अन्त तक अपना श्वांस, समय और संकल्प सफल किया परन्तु चारो में अपनी-अपनी विशेषता रही और भिन्नता भी रही। रवीदत्त भाई जी ने अन्त तक यज्ञ में सेवा की और अन्त में मधुवन में ही अपनी देह का त्याग किया। खन्ना जी और गुरुमुख दादा जी ने भी अन्त तक अपना समय-श्वांस-संकल्प यज्ञ सेवा में सफल किया परन्तु अन्त समय देह-त्याग के समय अप्रत्याशित रूप से अपने लौकिक सम्बन्धियों के पास जाना हुआ, वहाँ भी उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम श्वांस सफल किये और यज्ञ से उनको हर प्रकार का सहयोग मिला। सन्तराम भाई जी, जो अन्त तक तन-मन-धन से यज्ञ-सेवा में तो रहे परन्तु लौकिक परिवार के साथ ही रहे। फिर भी उनका संचित कर्मफल अन्त समय अप्रत्याशित रूप से यज्ञ में लेकर आया और अन्त में यज्ञ में ही अपना देह का त्याग किया। यज्ञ से हर प्रकार सहयोग उनको मिला। इन सबके जीवन के विषय में विचार करें तो उनके संचित कर्मफल के आधार पर ही परमात्मा और दैवी परिवार के भाई-बहनों का स्थूल और सूक्ष्म सहयोग मिला।

तन से समर्पित होने के बाद ऐसे कर्म-बन्धन आत्मा को अनैतिक एवं अमर्यादित कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं या बाध्य करते हैं, जिनके वशीभूत आत्मायें कभी-कभी जीवघात करने के लिए भी बाध्य हो जाती हैं। परन्तु यथार्थ ज्ञानी आत्मा का क्या कर्तव्य है, यह विचारणीय है। हमारे इस ईश्वरीय जीवन की सफलता कर्मयोग में ही है, इसलिए यथार्थ ज्ञानी आत्मा को पूर्व जन्मों के कर्मों के फलस्वरूप कर्म-बन्धनों से प्राप्त होने वाली मानसिक या शारीरिक वेदना को सहन करते भी बिचलित नहीं होना चाहिए। विश्व-नाटक की वास्तविकता को बुद्धि में रखकर सर्वात्माओं के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना रखते हुए कर्मयोग का सफल अभ्यास करने का पुरुषार्थ करना ही चाहिए क्योंकि कर्म-बन्धन से मुक्त होने का एकमात्र पुरुषार्थ कर्म-योग ही है, उसके अभ्यास से ही आत्मा को यथार्थ रीति कर्म-बन्धन से मुक्ति मिल सकती है और भविष्य के लिए श्रेष्ठ कर्म-सम्बन्ध स्थापित हो सकते हैं। अज्ञानता के वश हतोत्साहित होकर अपने कर्तव्य पथ से बिचलित होकर कोई अनैतिक या अमर्यादित कर्म तो आत्मा के भविष्य को भी अन्धकारमय बनाते हैं अर्थात् भविष्य के लिए भी कर्म-बन्धन का खाता बनाते हैं और दुख-अशान्ति का खाता जमा करते हैं। विश्व-नाटक का अनादि-अविनाशी अटल सिद्धान्त है कि जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना अपना शत्रु है, दूसरे तो केवल निमित्त कारण हैं। इसलिए यथार्थ ज्ञान की धारणा और कर्मयोग का अभ्यास ही कर्म-बन्धन से मुक्त होने का एकमात्र साधन और साधना है।

''सूक्ष्म सज़ायें सूक्ष्म में मिलती रहती हैं और दिन प्रतिदिन ज्यादा मिलती जायेंगी लेकिन ईश्वरीय मर्यादाओं के प्रमाण कोई भी अगर अमर्यादा का कर्तव्य करते हैं, मर्यादा का उल्लंघन करते हैं तो ऐसी अमर्यादा से चलने वाले को स्थूल सज़ायें भी भोगनी पड़ेंगी।'' अ.बापदादा 3.5.72

''चोरी की, उसका सौगुणा दण्ड हो ही जाता है। बाप जानकर क्या करेंगे। ... ईश्वर का बच्चा बनकर फिर चोरी करता, शिवबाबा जिनसे इतना वर्सा मिलता है,

उनके भण्डारे की चोरी करता है, यह तो बहुत बड़ा पाप है।''

सा.बाबा 7.5.05 रिवा.

''ऐसे ही स्थूल धन भी अगर ईश्वरीय कार्य में, हर आत्मा के कल्याण के कार्य में वा अपनी उन्नति के कार्य में न लगाकर अन्य कोई स्थूल कार्य में लगाया तो व्यर्थ लगाया ना।... यज्ञ निवासियों के लिए यज्ञ की सेवा, यज्ञ की वस्तु की एकानॉमी रुपी धन स्थूल धन से भी ज्यादा कमाई का साधन है।''

अ.बापदादा 15.3.72

कर्मयोग, शारीरिक स्वास्थ्य और अन्य प्रकार के योग एवं पद्यतियाँ

Q. क्या हमारा राजयोग अर्थात् कर्मयोग भविष्य में ही स्वास्थ्य प्रदान करने वाला है या अभी भी हमको स्वास्थ्य लाभ हो सकता है?

राजयोग केवल भविष्य में स्वास्थ्य प्रदान करेगा, ये हमारी भ्रान्ति है। वास्तविकता ये है कि राजयोग के यथार्थ रीति अभ्यास करने वाले को यह अभी भी स्वास्थ्य प्रदान करता है और भविष्य में भी अनेक जन्मों तक इससे सदा काल का स्वास्थ्य प्राप्त होता है। स्वास्थ्य के देह के बलशाली होने को नहीं कहा जाता है परन्तु सच्चा स्वास्थ्य तो वह है, जिसमें देह भी स्वस्थ हो और मन भी स्वस्थ हो। दोनों के स्वस्थ होने पर ही जीवन में सुख की अनुभूति होती है। राजयोग के सही अभ्यास से हमको दोनों प्रकार का स्वास्थ्य प्राप्त होता है परन्तु आत्मा को अपने पूर्व के किये हुए कर्मों का फल भी भोगकर पूरा करना ही होता है, इसलिए कर्मभोग का आना स्वाभाविक है परन्तु यदि मन्सा स्वस्थ है तो दैहिक कर्मभोग होते भी आत्मा अपने को स्वस्थ अनुभव करती है, सुखी अनुभव करती है। जब कि मन्सा अस्वस्थ होने के कारण दैहिक स्वास्थ्य सम्पन्न व्यक्ति दुखी देखे जाते हैं और अनेक जीवघात भी कर लेते हैं। इसलिए सच्चे स्वास्थ्य की अनुभूति राजयोग के सफल अभ्यास से ही सम्भव है।किसी भी योग या पद्यति से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने के लिए उस पर श्रृद्धा और विश्वास होना अति आवश्यक है।

संकल्प की मार्जिन ही नहीं है। मैं कल्प के सर्वोत्तम समय संगमयुग पर खड़ा हूँ, विश्व के सर्वोत्तम समाज और परिवार में हूँ, संस्था के सर्वोत्तम स्थान पर और उसमें भी विशेष पाण्डव भवन में रह रहा हूँ, जिसकी चार धामों के रूप में परमात्मा ने स्वयं ही महिमा की है, फिर भी ये अप्रत्याशित स्वप्न क्यों आया है?

इन विचारों के चलते ही मैं उठकर तैयार होकर रात को 2 बजे बाबा के कमरे में जाकर बैठ गया। इस सम्बन्ध में सोच-विचार चलता रहा और इस विश्व-नाटक के अनेक विधि-विधानों के विषय में चिन्तन चलता रहा और अनुभव किया कि यह विश्व-नाटक कितना रहस्यमय है, इसके विधि-विधान कितने गुह्य और सत्य हैं, जिनके अनुसार हर मनुष्य को उसके मन्सा-वाचा-कर्मणा किये गये कर्मों का फल जाने-अन्जाने अप्रत्याशित रूप से मिलता ही है। मनुष्य का संचित कर्मफल ही उसको अप्रत्याशित स्थान पर ले जाता है। मनुष्य का अपना ही संचित कर्मफल अनेक व्यक्तियों से सहयोग भी दिलाता है तो अपना कर्मफल ही कर्मभोग के रूप में उसको अनेक प्रकार से दुख-अशान्ति की अनुभूति भी कराता है। इसलिए इस विश्व-नाटक को जानने वाले ज्ञानी धीर-वीर पुरुष कब भविष्य की चिन्ता और चिन्तन न करके अपने समय, संकल्प, शक्ति को वर्तमान में श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्त रखते हैं, जिसके फलस्वरूप भविष्य स्वत: ही सुखमय हो जाता है।

हम विचार करें तो देखते हैं - दुनिया में अनेकानेक ऐसे उदाहरण हैं, जिनके पास विपुल धन-सम्पत्ति और समर्थ सम्बन्धी होते भी समय पर कोई काम नहीं आया और उन्होंने दुखी होकर अनाथों की तरह देह का त्याग किया और कई ऐसे भी जिन्होंने अनाथों के रूप में बचपन बिताते हुए भी ऐसे महान बनें कि दुनिया उनको आज भी याद करती है। जैसे कबीर, तुलसीदास आदि ।

साथ ही ऐसे सोच-विचार करते-करते यज्ञ के अनेकानेक आदि रत्नों और वरिष्ट भाई-बहनों के जीवन-वृतान्त भी हमारे सामने आये, जिनके साथ मुझे रहने और सेवा करने का सुअवसर मिला, जो मम्मा-बाबा, दीदी-दादी के साथ-साथ

अप्रत्याशित स्वप्न को उदाहरणार्थ लिखते हैं।

एक दिन एक अप्रत्याशित स्वप्न आया, जिसकी ज्ञानकाल की तो बात ही छोड़ दें, अज्ञानकाल में भी कभी कोई कल्पना ही नहीं की थी और न ही जागृत में उसके विषय में कोई संकल्प था। उस स्वप्न ने स्वप्न में ही मन को उद्वेलित कर दिया, अनेक अप्रत्याशित संकल्पों रूपी प्रश्नों को जन्म दिया और उनका उत्तर भी दिया। सोते हुए स्वप्न आया कि मैंने कोई संचय नहीं किया है, परिवार नहीं बनाया, किन्हीं आत्माओं के साथ कोई विशेष सम्बन्ध बनाकर नहीं रखा तो अन्त समय हमारे जीवन में क्या होगा और कौन सहयोगी बनेंगा?

ये स्वप्न आते ही मैं अपने जीवन-वृतान्त पर विचार करने लगा और देखा कि परमात्मा ने तो मुझको बचपन से ही अप्रत्याशित रूप से सहयोग दिया है। एक अशिक्षित गाँव और परिवार में जन्म लेकर भी मध्यम स्तर तक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया, न चाहते भी अप्रत्याशित रूप में फतेहगढ़ में राजपूत रेजीमेन्ट के रिकार्ड ऑफिस में नौकरी दिलाई, जिसके लिए अनेकानेक योग्य और प्रभावशाली प्रतियोगिता में थे। जीवन में अप्रत्याशित भक्ति-भावना जागृत की, जिससे नौकरी को भी छोड़कर भक्ति का लक्ष्य पूरा करने का पुरुषार्थ किया और अप्रत्याशित रूप में ही भक्ति का फल भगवान मिल गया। भगवान को पाने के बाद भी जीवन में अनेक अप्रत्याशित घटनायें हुई और उनमें अप्रत्याशित सफलता भी मिली। अनेक प्रकार के लौकिक दुनिया में उन्नति के अप्रत्याशित अवसर भी मिले परन्तु मन-बुद्धि कहाँ स्थिर नहीं हुये और अन्त में परमात्मा पिता ने जीवन के सर्वोच्च शिखर पर लाकर खड़ा कर दिया, जहाँ किसी प्रकार की असुरक्षा का संकल्प और प्रश्न ही नहीं है परन्तु फिर भी ये अप्रत्याशित स्वप्न क्यों आया, जिसने यह सोचने और लिखने के लिए मुझे बाध्य कर दिया।

उस अप्रत्याशित स्वप्न में ही अनेकानेक संकल्प और विचार चल रहे थे, जो भविष्य के विषय में चिन्तित भी कर रहे थे कि धीरे-धीरे स्वप्न से जाग्रतावस्था आने लगी तो देखा मैं तो उस स्थान पर बैठा हुआ हूँ, जहाँ किसी प्रकार के ऐसे

इसलिए हमको अपने इस राजयोग पर, जो सर्वशक्तिवान, वैद्यराज परमात्मा ने सिखाया है, उस पर श्रृद्धा और विश्वास चाहिए। यदि पूर्ण श्रृद्धा और विश्वास होगा तो ये योग हमको स्वास्थ जीवन का अभी भी अनुभव करायेगा और भविष्य में तो पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करेगा ही। यदि हम ये सोचते रहेंगे कि इससे भविष्य में ही स्वास्थ्य प्राप्त होगा, तो यह हमारी भ्रान्ति है और उससे वैसा ही फल प्राप्त होगा। वास्तविकता ये है कि ये हमको अभी ही स्वास्थ्य प्रदान करने वाला है और करेगा। ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास और अनुभव है।

यथार्थ ज्ञान की धारणा और देह से न्यारे होने के सफल अभ्यास से अनेकानेक मानसिक रोगों का निदान होता है, जो अनेकानेक दैहिक बीमारियों का मूल कारण हैं। देह से न्यारी स्थिति में जो सुख अनुभव होता है, वह किसी भी योग पद्यति से अनुभव नहीं हो सकता है। कर्मयोग की स्थिति से हमारी ग्रन्थियों से जो रस स्राव होता है, वह दैहिक रोगों से मुक्त करता है और किसी रोग या कर्मभोग से प्राप्त होने वाले दुख को भुला देता है, जो न किसी थैरेपी वाले कर सकते हैं और न किसी अन्य योग वाले। इस राजयोग से ही आत्मा की कर्मेन्द्रियों पर विजय होती है, जिससे आत्मा विकर्मों से बच जाती है अर्थात् आत्मा का पाप कर्म का खाता नहीं बनता है, जिससे भविष्य में तो रोग नहीं ही होगा परन्तु अभी भी यथार्थ ज्ञान होने से आत्मा अनेक रोगों के कारण होने वाले दुख को सहन करने में समर्थ होती है। यह अटल सत्य है कि यदि आत्मा का पाप कर्म का खाता संचित है तो कोई भी योग और थेरापी आत्मा को निरोगी नहीं बना सकती है, उसको जाने-अन्जाने अपने कर्मभोग को चुक्ता करना ही होगा।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि अन्य अनेक प्रकार के हठयोग और थेरापियाँ आत्मा को अस्थाई स्वास्थ्य अवश्य प्रदान करते हैं और कर सकते हैं परन्तु सदा काल का अर्थात् स्थाई स्वास्थ्य प्रदान नहीं कर सकते हैं क्योंकि अस्वस्थता अर्थात् कोई भी कर्मभोग आत्मा के पाप-कर्मों के फलस्वरूप आता है, जिसको पूरा करने के लिए आत्मा को किसी न किसी रूप में पश्चाताप करना ही पड़ता है,

भोगना ही पड़ता है। जो कर्मभोग के समय श्रृद्धा-विश्वास के साथ कर्मयोग का अभ्यास करते हुए किसी हठयोग या थेरापी का प्रयोग करते हैं, वे सहज अपने कर्मभोग से मुक्ति पा लेते हैं। परन्तु जो कर्मयोग के प्रभाव को भूल कर किसी हठयोग या थेरापी से स्वास्थ्य लाभ की आशा रखते हैं, वे और ही अस्वस्थ होते जायेंगे क्योंकि परमात्मा को भूलने के कारण पाप कर्म का खाता बढ़ता ही जायेगा।

शिवबाबा की ज्ञान-गुण-शक्तियों की किरणें तो सूर्य के समान सदा, सर्वदा, सर्वत्र सब पर पड़ती हैं परन्तु जब हम उसकी याद में होते हैं तब वे किरणें हमारे ऊपर प्रभावित होती हैं अर्थात् हमारे मानसिक और दैहिक व्याधियों का निदान करती हैं। जैसे सूर्य की किरणें ग्लास से रिफलेक्ट होकर कागज को या किसी अन्य चीज़ को जला देती हैं, सौर्य-ऊर्जा का काम करती हैं, ऐसे ही परमात्मा की ज्ञान-गुण-शक्तियों की किरणें हमारी मानसिक और दैहिक व्याधियों का निदान करती हैं। परमात्मा की किरणें तो अपना काम करती ही हैं यदि हम परमात्मा की याद में मन-बुद्धि को अपनी व्याधि के ऊपर एकाग्र करके केन्द्रित करते हैं तो हमारी व्याधि अवश्य ही दूर होगी परन्तु हमको निश्चय होना चाहिए। अनेक भाई-बहनों के अनुभव हैं, जिन्होंने परमात्मा की याद से असम्भव से कार्यों को सम्भव किया है, अनेक प्रकार की असाध्य व्याधियों से निदान पाया है।

Q. वास्तविक स्वास्थ्य क्या है, उसका निर्णायक बिन्दु (Critaria) क्या है?

वर्तमान तमोप्रधान दुनिया है, इसमें सर्वांगीण स्वास्थ्य की कल्पना करना भी अल्पज्ञता है परन्तु देश-काल, परिस्थिति के अनुसार जो जीवन हमको मिला है, उसका सदुपयोग करते हुए आन्तरिक खुशी, सुख-शान्ति में रहना ही वास्तविक स्वास्थ्य है। तन का रोग होते भी अगर मन खुश है, तो उसको रोगी नहीं कहा जायेगा अर्थात् वह कर्मभोग नहीं है, वह भी आत्मा का विश्व-नाटक में एक पार्ट है, जो आत्मा कर्मयोगी बनकर बजा रही है। यदि तन स्वस्थ है और मन दुखी है तो

हैं।''

सा.बाबा 11.01.06 रिवा.

Q. आपघात या जीवघात के लिए दोषी कौन अर्थात् करने वाली आत्मा स्वयं या अन्य कोई आत्मा? यह एक विचारणीय प्रश्न है।

कर्मभोग, कर्म-बन्धन, कर्मयोग और संकल्प

कर्मभोग और कर्म-बन्धन आत्मा के विकल्पों का कारण बनते हैं और कर्मयोग आत्मा के शुभ संकल्पों का आधार है। अभी संगम का सुहावना समय विकल्पों से मुक्त हो, शुभ संकल्पों में प्रवृत्त होकर सच्ची मुक्ति-जीवनमुक्ति को अनुभव करने का समय है। इसलिए हमको अपने संकल्पों का बहुत ध्यान रखना है, उनकी बचत करना है और श्रेष्ठ कार्य में लगाकर पुण्य का खाता जमा करना है।

Q. संकल्पों का कर्मभोग और कर्म-बन्धन से क्या सम्बन्ध है और संकल्पों का कर्मयोग में क्या महत्व है?

एक अप्रत्याशित स्वप्न और संकल्प

Q. मनुष्य भविष्य के लिए चिन्तित क्यों है, जीवन में सबसे श्रेष्ठ सुरक्षा क्या है और उसकी गारण्टी क्या है और सबसे श्रेष्ठ संचय क्या है तथा सबसे बड़ा सहयोगी, सम्बन्धी, साथी कौन है एवं सबसे बड़ी प्राप्ति क्या है, जो आत्मा को सदा, सर्वदा और सर्वत्र साथ देती है?

अनुभव और विवेक कहता है कि सबसे श्रेष्ठ सुरक्षा और उसकी गारण्टी है मनुष्यात्मा के अपने श्रेष्ठ कर्म और उनका संचित कर्मफल, जो जाने-अन्जाने अप्रत्याशित रूप से उसकी सदा, सर्वदा और सर्वत्र रक्षा करते हैं, सहयोग देते हैं, उसका अन्त सुहावना करते हैं। वर्तमान को भूलकर भविष्य के लिए भयभीत होना, चिन्ता करना अज्ञानता ही है, जिसका निदान इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान से और परमात्मा के सानिध्य से ही सम्भव है, जिसका ज्ञान हमारे सबसे बड़े प्रिय सम्बन्धी परमपिता परमात्मा ने अभी हमको दिया है। इस सम्बन्ध में एक

चुकता होता है। मुक्ति-जीवनमुक्ति के लिए कोई जीवित समाधि ले लेते, वह भी पाप कर्म है क्योंकि मुक्ति-जीवनमुक्ति की इच्छा भी आत्मा को इस जगत के दुख को देख कर ही जाग्रत होती है।

आपघात और जीवघात से भी आत्मा अपने कर्मभोग से बच नहीं सकती है, उसको आगे जन्म में उसको भोगना ही पड़ेगा। वैसे तो देखें कोई सहज जीवघात नहीं करता है, उससे पहले पश्चाताप के रूप में बड़ी कड़ी भोगना भोगते हैं और वह भोगना असह्य हो जाती है, तब जीवघात करते हैं। कर्मयोग इस आपघात और जीवघात रूप महापाप से बचने का एकमात्र साधन है परन्तु उसके लिए पहले से पुरुषार्थ करना होता है अथवा ऐसे कहें कि कर्मयोगी आत्मा को कब आपघात और जीवघात का संकल्प भी नहीं आ सकता है।

''तीसरे प्रकार की महसूसता है - मन मानता है कि यह ठीक नहीं है, विवेक आवाज भी देता है कि यह यथार्थ नहीं है लेकिन बाहर से ... यह विवेक का खून करना भी पाप है। जैसे आपघात महापाप है, वैसे ही यह भी पाप के खाते में जमा होता है।''

अ.बापदादा 2.11.87

''आत्मा के असली गुण स्वरूप और शक्ति स्वरूप से नीचे आना अर्थात् विस्मृत होना - यह भी पाप के खाते में जमा होता है। इसलिए कहा जाता है आत्मघाती महापापी। ... माया के वश, परमत के वश, कुसंग के वश या परिस्थिति के वश अपने ईश्वरीय विवेक को दबाते हो तो समझो ईश्वरीय विवेक का खून करते हो।''

अ.बापदादा 15.10.75

''सबसे बढ़ा धोखा स्वयं को देते हो कि जो जानते हुए, मानते हुए फिर भी स्वयं को श्रेष्ठ प्राप्ति से वंचित कर देते हो।... अपने को अच्छा पुरुषार्थी सिद्ध करना, कोई भी गलती करके छिपाना - यह भी स्वयं को धोखा देना है वा ठगी करना है।''

अ.बापदादा 15.10.75

''शरीर को खत्म करने के लिए जीवघात करते हैं, समझते हैं शरीर छोड़ने से दुखों से छूट जायेंगे। परन्तु यह भी महापाप है, और भी अधिक दुख भोगने पड़ते

वह रोगी है। यदि तन में थोड़ा रोग है और मन अधिक दुखी हो रहा है, तो वह बड़ा रोग है और अगर बड़ा रोग है और मन खुश में है तो वह बड़ा रोग नहीं कहा जायेगा। उसको बाबा कहते हैं कि वह शूली से कांटा हो जाता है। वास्तविक स्वास्थ्य के लिए तन-मन-धन-जन चारो का स्वस्थ होना आवश्यक है। चारो स्वस्थ होंगे तब ही आत्मा सच्ची सुख-शान्ति का अनुभव करेगी, जो वास्तविक स्वास्थ्य की पहचान है अर्थात् कसौटी है।

कर्मयोग अर्थात् राजयोग और अन्य योगों एवं पद्यतियों द्वारा स्वास्थ्य लाभ का तुलनात्मक अध्ययन

Q. क्या अन्य योगों वाले और पद्यतियों के स्वास्थ्य लाभ की गॉरण्टी करने वाले सदा निरोगी रहते हैं? क्या वे रोगी नहीं होते हैं?

प्राय: सभी प्रकार के हठयोग सिखाने वाले या हठयोग या अन्य थेरापियों से रोगों का निदान करने वाले कहते हैं कि उनके योग या थेरापी द्वारा सब प्रकार के रोगों का निदान हो सकता है परन्तु क्या ये सम्भव है और यदि सम्भव है तो किस सीमा तक सम्भव है। इसके लिए यहाँ हठयोग और अन्य पद्यतियों द्वारा रोगों के निदान और राजयोग के द्वारा स्वास्थ्य लाभ का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं।

* कर्मयोग या हठयोग अथवा अन्य किसी थेरापी से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने के लिए भी उस पर श्रृद्धा-विश्वास होना अति आवश्यक है, तब ही वह सही रीति से काम करेगी। परन्तु ये आशा-आकांक्षा रखना कि किसी प्रकार के हठयोग या थेरापी द्वारा हर प्रकार के रोग का निदान होगा, अल्पज्ञता होगी क्योंकि कलियुग में ये सम्भव नहीं हो सकता है। कर्मयोग के द्वारा स्वास्थ्य लाभ पाने के लिए उसके विधि-विधानों का ज्ञान और उन पर पर निश्चय होना अति आवश्यक है, जिसके बाबा ने स्पष्ट ज्ञान दिया है।

* हमारे जीवन में दो प्रकार की प्रक्रियायें हैं, एक है स्थूल और दूसरी है सूक्ष्म। सुखी निरोगी जीवन के लिए दोनों का बैलेन्स होना अति आवश्यक है। परन्तु

मूल है सूक्ष्म अर्थात् आत्मा और स्थूल है गौण क्योंकि स्थूल प्रक्रिया सूक्ष्म पर आधारित है। जब आत्मा स्वस्थ और बलशाली होती है तो शरीर भी अवश्य ही स्वस्थ और बलशाली होगा और आत्मा के स्वस्थ और बलशाली होने के लिए राजयोग ही एकमात्र साधन और साधना है। स्थूल अर्थात् दैहिक स्वास्थ्य के लिए अनेक प्रकार के हठयोग, पद्यतियाँ, एक्सरसाइज़ आदि हैं, जो भी करना आवश्यक है और उनसे कुछ लाभ अवश्य होता है परन्तु यथार्थ ज्ञान और राजयोग अर्थात् कर्मयोग के प्रभाव को भूलकर उनसे स्थाई स्वास्थ्य की आशा करने वाला सदा काल का स्वास्थ्य कभी भी प्राप्त नहीं कर सकता है। ये विश्व-नाटक का अटल सत्य है।

* कर्मयोग से तत्व भी पावन बनते हैं और जब तत्व पावन होते हैं तो उनसे स्वस्थ देह का निर्माण अवश्य होगा, जो हठयोग से कभी भी सम्भव नहीं है। मनुष्य के कर्मभोग में तत्वों के हिसाब-किताब की भी बड़ी भूमिका है।
* हठयोग से दैहिक स्वास्थ्य तो किसी हद तक मिल सकता है परन्तु उससे जीवन सुखी हो जाये, ये निश्चित नहीं है। कर्मयोग से निश्चित है कि उसके सफल अभ्यास से जीवन अवश्य ही सुखमय होगा।
* हठयोग से आत्मा स्वस्थ नहीं हो सकती है परन्तु किसी कर्मभोग के निदान से कुछ समय के लिए सुख का अनुभव कर सकती है क्योंकि आत्मा के स्वस्थ होने के लिए आत्मा का पावन होना अति आवश्यक है अर्थात् आत्मा के ऊपर से पाप कर्मों का खाता खत्म हो, तब ही आत्मा स्वस्थ हो सकती है। कर्मयोग से जब आत्मा स्वस्थ हो जाती है तो कोई कर्मभोग होता ही नहीं है और शारीरिक स्वास्थ्य अवश्य ही प्राप्त होता है।
* कर्मयोग से आत्मा को गति-सद्गति प्राप्त होती है, हठयोग से कभी गति-सद्गति मिल नहीं सकती। हठयोग से अस्थाई रूप में स्वास्थ्य लाभ होता है परन्तु आत्मा सतत दुर्गति की ओर ही बढ़ती जाती है।
* सभी प्रकार के हठयोगों और पद्यतियों से स्वास्थ्य लाभ होते हुए और

खुशी रह जाती है।'' सा.बाबा 6.07.09 रिवा.

''जन्म-जन्मान्तर का पापों का बोझा सिर पर रहा हुआ है, यह कैसे पता पड़े। ... देखना है - बाप से हमारी दिल लगती है या देहधारियों से। कर्म सम्बन्धियों आदि की याद आती है तो समझना चाहिए हमारे विकर्म बहुत हैं।... बाप को याद कर अपने सिर से पापों का बोझा उतारना है।'' सा.बाबा 30.4.05 रिवा.

आपघात-जीवघात से कर्मभोग और कर्मयोग का सम्बन्ध

आपघात और जीवघात का मूल कारण आत्मा का अपना कर्मभोग ही है। आपघात क्या है और आपघात और जीवघात में क्या अन्तर है, उसका ज्ञान भी बाबा ने दिया है। दुनिया में भी आपघात महापाप कहा जाता है। बाबा ने आपघात की वास्तविकता को भी बताया है और आपघात न हो, उसके लिए श्रीमत भी दी है। दुनिया वाले तो जीवघात को आपघात कहते हैं परन्तु बाबा ने बताया है कि आत्मा तो अजर-अमर है, उसका घात तो कब होता नहीं है, जीवघात होता है और आत्मा एक शरीर छोड़कर दूसरा ले लेती है। बाबा का बनकर, बाबा का हाथ छोड़ देना वास्तव में आपघात महापाप है क्योंकि उससे आत्मा का अपना भी अकल्याण होता है और बाप का नाम भी बदनाम होता है। ज्ञान की यथार्थता को जानने वाला कब आपघात कर नहीं सकता। इससे भी हमारा कर्मभोग का खाता बनता है।

दूसरों को दुख देना तो पाप है ही परन्तु बाबा ने कहा है - अपने को दुख देना भी पाप है। कोई तंग होकर अपना जीवघात कर लेते हैं, वह भी पाप-कर्म है क्योंकि वह भी अपने कर्मों के फल भोगने से विमुख होना है। जबकि विधान है कि हर आत्मा को अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा, वह चाहे इस जन्म में भोगें या अगले जन्म में भोगें। कोई दुख न होते भी भक्ति मार्ग में भावना से बलि चढ़ जाते हैं, उसको भी बाबा ने पाप कहा है परन्तु बाबा ने ये भी कहा है कि उस समय उनकी भावना अच्छी होती है, इसलिए उससे उनके कर्मों का कुछ खाता

और आत्माओं को परमात्मा का परम वरदान है।

आत्मा की निर्णय शक्ति बढ़ जाती है, जिससे कृत्य-अकृत्य के विषय में निर्णय करने में उसको देर नहीं लगती है, कोई उलझन नहीं होती है। उसकी कृत्य में अभिरुचि और अकृत्य में अरुचि स्वत: होती है।

व्यर्थ संकल्प-विकल्प नहीं चलते हैं क्योंकि उसको अपने भविष्य के विषय में कोई आशंका या चिन्ता नहीं रहती है।

उसकी कोई इच्छायें-आशायें नहीं रहती हैं क्योंकि उसके आवश्यकतानुसार और समय पर सब कार्य स्वत: सिद्ध होते हैं।

उसके जीवन में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति की महसूसता नहीं होती है।

मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, लाभ-हानि सब में समान स्थिति रहती है क्योंकि उसको विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान होता है।

उसकी दृष्टि में अपने-पराये, शत्रु-मित्र का भेद भी नहीं रहता है क्योंकि उसके लिए सब अपने हैं या हो जाते हैं।

उसकी सहज आत्मिक स्थिति रहती है और सबके प्रति उसकी आत्मिक दृष्टि रहती है अर्थात् वह सबको आत्मिक स्वरूप में ही देखता है।

उसकी सर्वात्माओं के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना रहती है।

वह जब चाहे, जहाँ चाहे, वहाँ अपनी मन-बुद्धि को सहज स्थिर करने में समर्थ होता है अर्थात् अपने आत्मिक स्वरूप में संकल्प करते ही सहज स्थित हो जाता है और जब चाहे, जहाँ चाहे अपनी मन-बुद्धि को सहज एकाग्र कर सकता है। उसका व्यर्थ चिन्तन में, पर-चिन्तन में समय और संकल्प नहीं जाता है, इसलिए वह सहज ही परमात्मा के विश्व-कल्याण के कर्तव्य में सहयोगी बन जाता है।

''बाप ने बच्चों को समझाया है कि तुम ऐसा अभ्यास करो, जैसे कि तुम इस शरीर में हो ही नहीं। ... फिर बाप की मदद है या इनकी मदद है। मदद मिलती जरूर है और पुरुषार्थ भी करना होता है। ... देखा जाता है कि इस याद में रहने से शरीर के रोग जो तंग करते हैं, वे भी ऑटोमेटिकली ठण्डे हो जाते हैं। वह

स्वास्थ्य लाभ के लिए पुरुषार्थ करते भी आत्मिक शक्ति का सतत ह्रास होता है, आत्मा की उतरती कला ही होती है परन्तु कर्मयोग के सफल अभ्यास से आत्मिक शक्ति का विकास होता है, जिससे परिणाम स्वरूप आत्मा को दैहिक स्वास्थ्य लाभ भी होता है।

* हठयोग से शारीरिक स्वास्थ्य का लाभ तो होता है परन्तु विकारों पर विजय नहीं होती है, जिससे आत्मा दिनोदिन विकारों के वश होती जाती है, जिससे उसकी गिरती कला ही होती है परन्तु कर्मयोग के सफल अभ्यास से आत्मा को विकारों पर विजय प्राप्त होती है, जिससे जीवन निर्विकारी बनता है और निर्विकारी जीवन ही स्वस्थ जीवन का अर्थात् सच्चे सुख-शान्ति मय जीवन का आधार है।

* कर्मयोग के अभ्यास से कर्मभोग के कारणों का ज्ञान भी होता है और उनका निवारण भी होता है परन्तु हठयोग या विभिन्न स्वास्थ्य लाभ के निमित्त बनी पद्यतियों के द्वारा कर्मभोग के कारणों का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, इसलिए उसका स्थाई निदान न होता है और न हो सकता है क्योंकि हठयोग और अन्य पद्यतियों में बाह्य कारणों का ही एक हद तक ज्ञान होता है, आन्तरिक कारणों का नहीं। जबकि आन्तरिक कारण ही बाह्य कारणों का मूल हैं।

* कर्मयोग के अभ्यास से आत्मा कर्मातीत बनती है, जब हठयोग और अन्य पद्यतियों से आत्मा कर्मातीत न बनकर दिनोदिन कर्म-बन्धन में ही बँधती जाती है, जो कर्मभोग के मूल कारण हैं।

* कर्मयोग से आत्मा मायाजीत बनती है, जबकि हठयोग या अन्य पद्यतियों से उपचार करते भी आत्मा मायाजाल में ही फँसती जाती है। माया अर्थात् देहाभिमान जनित विकार और उनके वशीभूत कर्म, जो कर्मभोग या कर्म-बन्धन के मूल कारण हैं।

* कर्मयोग से आत्मिक और दैहिक स्वास्थ्य लाभ का विधि-विधान ज्ञान सागर सर्वशक्तिवान, परमपिता परमात्मा सिखाते हैं, जबकि हठयोग और अन्य पद्यतियों से स्वास्थ्य लाभ का विधि-विधान मनुष्य सिखाते हैं, जो अल्पज्ञ हैं, इसलिए

उनसे सदा काल के लिए कर्मभोगों का निदान नहीं हो सकता है। एक जाता है, दूसरा आ जाता है।

* हठयोग या अन्य किसी थेरापी से इन्द्रियाँ शान्त नहीं होती है और होती भी हैं तो कुछ समय के लिए होती हैं परन्तु कर्मयोग के सफल अभ्यास से आत्मा इन्द्रीयजीत बन जाती है, जिससे इन्द्रियाँ शान्त हो जाती हैं और वे श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्त होती हैं, जिससे कर्मभोग का खाता तो खत्म होता ही है, साथ-साथ श्रेष्ठ कर्म भी होते हैं, जिससे श्रेष्ठ कर्मों का खाता भी जमा होता है। इन्द्रियों के रस के वशीभूत कर्म ही आत्मा के कर्मभोग और कर्म-बन्धन का कारण हैं।

ये विश्व-नाटक का विधान है कि आत्मा स्वस्थ है तो शरीर भी अवश्य ही स्वस्थ होगा और आत्मा के स्वास्थ्य के लिए कर्मयोग ही एकमात्र साधन और साधना है।

साकार बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है योग से सब कर्मभोग खत्म हो जायेगा। अपने लिए भी बाबा ने कहा है - बाबा से कहता हूँ, बाबा मेरी खांसी ठीक कर दो परन्तु मैं सदा याद में कहाँ रह पाता हूँ, जो खांसी ठीक हो। कहने का तात्पर्य यह है कि सत्यता ये है कि इस कर्मयोग से सारे कर्मभोग और कर्म-बन्धन समाप्त हो सकते हैं और होते भी हैं परन्तु विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार जब तक नाटक पूरा नहीं हुआ, कोई सदा योग में रह नहीं सकता। अशरीरी बन नहीं सकता। अन्त में ब्रह्मा बाबा ने कर्मभोग पर कर्मयोग से ही विजय पायी और आज फरिश्ता रूप में विश्व की सेवा कर रहे हैं।

''कोई कुछ कहे तो सुना-अन्सुना कर देना चाहिए। ... तुमको कहा गया है - सारी दुनिया को भूल जाओ, अपने को आत्मा समझो। आत्मा कानों बिगर सुनेगी कैसे, अशरीरी हो जाओ। जैसे आत्मा रात को अशरीरी हो जाती है, सो जाते हैं तो कोई गला भी काटकर जाये तो भी पता नहीं पड़ता है। ... जब तक अशरीरी नहीं बने हो तब तक कुछ न कुछ माया की चोट लगती ही रहेगी।''

सा.बाबा 13.1.69

का मोटा रूप। ऐसे ही महीन पुरूषार्थ अर्थात् महारथी के सामने पाँच तत्व अपनी तरफ, भिन्न-भिन्न रूप से आकर्षित कर महीन पाप बनाने के निमित्त बनते हैं। पाँच विकारों को समझना और उन्हों को जीतना सहज है लेकिन पाँच तत्वों के आकर्षण से परे रहना, यह महारथियों के लिए विशेष पुरूषार्थ है।''

अ.बापदादा 23.5.74

परमधाम की शान्ति या स्थिति पाप-पुण्य दोनों से परे है, सतयुग-त्रेतायुग की शान्ति और स्थिति सुखमय है और वह भी पाप-पुण्य दोनों से परे हैं। द्वापर-कलियुग की स्थिति पाप-पुण्य दोनों से युक्त है लेकिन उसमें पाप की स्थिति अधिक है, पुण्य की कम। संगमयुग की अर्थात् हमारी वर्तमान स्थिति ही पुण्यमय है। संगमयुग अर्थात् जब हमारी बुद्धि का काँटा परमधाम में परमपिता परमात्मा के साथ लटका हुआ हो और हमारे संकल्प, कर्म विश्व-कल्याण के कार्य में रत हों। उसके अतिरिक्त समय की स्थिति तो कलियुग की ही है अर्थात् पापमय ही है, भल हम अभी संगमयुग पर खड़े हो गये हैं। संगमयुग पर हमारी स्थिति दोनों तरफ चलती रहती है परन्तु परमात्मा से मिले यथार्थ ज्ञान और उनके साथ के कारण हमारी स्थिति चढ़ती कला में अधिक और उतरती कला में कम रहती है अर्थात् पुण्य अधिक और पाप कम होता है, इसलिए पुण्य का खाता बढ़ता जाता है। ये पुरुषोत्तम संगमयुग का समय ही परमानन्दमय है।

''कोई चीज छिपाकर खा लेते हैं। समझते थोड़ेही हैं कि यह भी पाप है। चोरी हुई ना। सो भी शिवबाबा के यज्ञ की चोरी करना बहुत खराब है।''

सा.बाबा 21.7.05 रिवा.

Q. हमारा पाप का खाता खत्म हो गया है या हो रहा है और पुण्य का खाता जमा हो रहा है, उसकी निशानी क्या है?

जब आत्मा का पाप का खाता अर्थात कर्मभोग का खाता खत्म हो जाता है तब - आत्मा अपने को हल्का अनुभव करती है।

आत्मा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है, जो संगमयुग की विशेष प्राप्ति है

याद की यात्रा से अपने पाप काट रहे हैं, गोया अपना कल्याण कर रहे हैं।''

सा.बाबा 16.9.04 रिवा.

Q. पापात्मा बनने का मूल कारण क्या है?

बाबा ने अनेक बार मुरली में कहा है - पापात्मा बनने का मूल कारण काम विकार है। क्रोध भी बड़ा विकार है और उससे आत्मिक शक्ति का बहुत ह्रास होता है लेकिन क्रोधी को पापात्मा नहीं कहेंगे। इसीलिए सन्यासियों में क्रोध होते भी काम विकार को छोड़ने के कारण उनको पतित मनुष्य सिर झुकाते हैं। उनको पतित नहीं कहा जाता है।

''यह भी तुम जानते हो - कब से पाप शुरू किये हैं, जब से काम चिता पर चढ़े हो। तो तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र है। ... तुम बाजोली वा 84 के चक्र को भी जानते हो। ... यह चक्र बुद्धि में सदैव फिरता रहना चाहिए। यह नालेज अभी तुम ब्राह्मणों के पास ही है, न शूद्रों के पास और न देवताओं के पास है।''

सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

''अभी तो अनेक आत्माओं के अनेक जन्मों के बने हुए खाते, जिसको पाप-कर्मों का खाता कहा जाता है, उसको भस्म कराने के आप निमित्त हो। जो अन्य के व्यर्थ खाते को भस्म कराने वाले हैं, वे स्वयं अपना ऐसा खाता बना नहीं सकते। यह तो पुराने खाते हैं। आप तो पुराने खाते समाप्त कर नया जन्म, नये खाते बनाने वाले हो। पुराने खाते सब खत्म हो रहे हैं - ऐसा अनुभव होता है?''

अ.बापदादा 4.2.75

''जैसा संकल्प वैसा स्वरूप बनने वाले सच्चे वैष्णव हो, ऐसे सच्चे वैष्णवों को क्या कोई छू सकने का साहस कर सकता है? अगर छू लेते हैं, तो छोटे मोटे पाप बनते जाते हैं। ऐसे सूक्ष्म पाप, आत्मा को ऊंच स्टेज पर जाने से रोकने के निमित्त बन जाते हैं क्योंकि पाप अर्थात् बोझा, वह फरिश्ता बनने नहीं देते बीज रूप स्थिति व वानप्रस्थ स्थिति में स्थित नहीं होने देते।'' अ.बापदादा 23.5.74

''पाँच विकारों के वश किये हुए कर्म, विकर्म या पाप कहे जाते हैं - यह है पापों

कर्मभोग और बाह्य सहयोग

कोई भी व्यक्ति को किसी कर्मभोग के समय किसी व्यक्ति या संगठन से उतना ही सहयोग मिल सकता है, जितना उसने अपने कर्मों से उनके पास अपना कर्मफल का खाता जमा किया है या भविष्य में उसके द्वारा उसका रिटर्न मिल सकता है अर्थात् वह आत्मा उसको चुकाने में सफल हो सकती है। ये विश्व-नाटक का अदृश्य विधान है। यदि कोई व्यक्ति उससे अधिक की किसी से अपेक्षा करता है तो वह उसकी भूल है, जो उसको निराशा ही प्रदान करेगी। सच्चा योगी अर्थात् जिसका परमात्मा से यथार्थ योग है, वे कब किसी व्यक्ति या संगठन से ऐसी अपेक्षा नहीं करते हैं। वे परमात्मा पर विश्वास रखकर सदा निश्चिन्त रहकर अपनी साधना करते हैं, जिससे उनका निरन्तर सत्कर्मों का खाता जमा होता रहता है, जो समय पर उनका सहयोग स्वत: ही करता है। परमात्मा उनकी समय पर आवश्यक आवश्यकतायें स्वत: पूर्ण करता है अर्थात् उनका योगबल ही उनको सहयोग करता है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार होना तो इस विश्व-नाटक का विधि और विधान है। बाबा ने भी स्पष्ट शब्दों में कहा है - तुमको कब दूसरे की कमाई में आंख नहीं रखना है, अपनी कमाई करनी है और उसमें ही ऑख रखनी है।

यद्यपि यज्ञ एक ज्वाइन्ट प्रॉपर्टी है परन्तु विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार हर आत्मा को उतना ही मिलेगा, जितना उसने व्यक्तिगत रूप से तन-मन-धन से सेवा करके जमा किया है या कर सकता है।

कर्मभोग, योगबल और सहयोग

योग भी एक कर्म, जिसका बल आत्मा को मिलता है और कर्म में योग अर्थात् परमात्मा के साथ सम्बन्ध होने से आत्मा में बल आता है अर्थात् शक्ति

निर्माण होती है, जो आत्मा को कर्म-बन्धन एवं कर्मभोग से मुक्त होने में सहयोग करती है।

जब आत्मा, परमात्मा की मधुर याद में होती है तो उसकी मन-बुद्धि एकाग्र होती हे, जिससे बुद्धि में यथार्थ टचिंग होती है, यथार्थ निर्णय होता है, जिस अनुसार आत्मा पुरुषार्थ करके कर्मभोग और कर्म-बन्धन से सहज मुक्त हो जाती है।

जब आत्मा में आत्मिक शक्ति होती है और यथार्थ ज्ञान होता है तो उसको परमात्मा की याद स्वत: आती है और जब आत्मा को सर्वशक्तिवान परमात्मा की याद आती है तो उसकी आत्मिक शक्ति बढ़ती है, जो आत्मा को कर्मभोग के समय उससे मुक्त होने में सहयोगी बनती है। अपना योगबल ही आत्मा को कर्मभोग के समय सहयोग करता है और अन्य को भी सहयोगी बनाता है।

कर्मभोग, कर्मातीत स्थिति और कर्मयोग

कर्मातीत स्थिति कर्मभोग और कर्म-बन्धन से मुक्त स्थिति है, जिस स्थिति का अनुभव कर्मयोगी ही कर पाते हैं क्योंकि उनको ज्ञान सागर परमात्मा द्वारा कर्मातीत स्थिति और कर्मयोग का यथार्थ ज्ञान मिलता है और उसके अभ्यास के लिए विधि-विधान भी परमात्मा ही बताते हैं।

कर्मातीत स्थिति अर्थात् कर्मभोग, कर्म-बन्धन और कर्म-सम्बन्ध, कर्मफल से मुक्त स्थिति, जो आत्मा की परमधाम में ही होती है परन्तु आत्मा कर्मयोग का पुरुषार्थ करके संगमयुग पर उस स्थिति का यहाँ अनुभव अवश्य करती है और जो उसका जितना अधिक समय तक और अधिक अच्छा अनुभव करता है, वह उतना ही कर्मभोग और कर्म-बन्धन से सहज मुक्त हो जाता है तथा भविष्य के लिए श्रेष्ठ कर्मफल और कर्म-सम्बन्ध का खाता जमा करने में समर्थ होता है।

यथार्थ और सदाकाल की कर्मातीत स्थिति तो आत्मा की अन्त में ही होती है, जब आत्मा परमधाम जाती है। उससे पहले उस स्थिति का अनुभव आत्मायें अशरीरीपन के सफल अभ्यास से कर सकती हैं। ये देह में रहते देह से न्यारी कर्मातीत स्थिति

''विकार में जाने से ही पापात्मा बनते हैं। ... मनुष्यों को पता नहीं है कि देवतायें, जो पुण्यात्मा हैं, वे ही फिर पुनर्जन्म में आते-आते पापात्मा बनते हैं। ... तुम बच्चों को यह बात सबको समझानी है, सर्विस करनी है।''

सा.बाबा 1.11.04 रिवा.

पुण्य क्या है और पाप क्या है, पुण्यात्मायें कहाँ होती हैं और पापात्मायें कहाँ होती है। पुण्यात्मा कैसे बनते हैं, पापात्मा कैसे बनते हैं, ये सब राज़ भी परमात्मा ने अभी बताये हैं। सतयुग में भल आत्मा पवित्र होती है, सुख-शान्ति में होती है, फिर भी आत्मा की उतरती कला तो होती ही है परन्तु वहाँ पाप या पुण्य की बात नहीं है, इसलिए देवताओं को पाप-पुण्य शब्दों का भी ज्ञान नहीं है। ये शब्द द्वापर से ही निकलते हैं, जब आत्मा देहाभिमान के वशीभूत पाप-कर्म में प्रवृत्त होती है। पाप के कारण आत्मा को दुख होता है और पापों से मुक्त पुण्यात्मा बनने के लिए पुरुषार्थ भी करते हैं परन्तु फिर भी दिनोंदिन पापात्मा ही बनते जाते हैं क्योंकि जो भी कर्म करते, उसमें देहाभिमान के कारण विकारों का अंश होता ही है। पांच विकारों के वशीभूत आत्मा जो भी कर्म करती है, वह पाप ही होता है और उससे आत्मा की गिरती कला की गति तीव्र होती है। पतित-पावन परमात्मा की याद में जो भी कर्म करते हैं वे ही पुण्य कर्म होते हैं क्योंकि उससे ही आत्माओं की चढ़ती कला होती है, उससे दूसरी आत्माओं का भी कल्याण होता है। केवल आत्मिक स्थिति में जो कर्म होते हैं, वे पाप और पुण्य दोनों से परे होते हैं, जो सतयुग-त्रेता युग में ही होते हैं, इसलिए ही सतयुग-त्रेता में आत्माओं के कर्मों को अकर्म कहा जाता है क्योंकि उनसे न पाप होता है और न ही पुण्य होता है। भक्ति-मार्ग में जो दान-पुण्य, साधना आदि करते हैं, उनसे अल्पकाल के लिए पुण्य तो होता है परन्तु अन्तिम परिणाम पाप का ही होता है क्योंकि उनमें विकारों का अंश होता है, जिससे आत्मा की गिरती कला ही होती है। ''अभी बच्चे चलते-फिरते अथवा यहाँ बैठे-बैठे जन्म-जन्मान्तर के जो पाप सिर पर हैं, उन पापों को याद की यात्रा से विनाश करते हैं। ... बच्चे समझते हैं - हम

... ये विचार सागर मन्थन करने की युक्तियाँ हैं। ... जब तक योग लगाकर आत्मा पवित्र नहीं बनी है, कर्मातीत अवस्था नहीं बनी है तब तक वापस जा नहीं सकते हैं। ये ख्यालात अज्ञानी मनुष्यों को नहीं आ सकते, तुम बच्चों को ही आयेंगे।''

सा.बाबा 12.03.09 रिवा.

''आत्मा का शरीर में ममत्व हो गया है। नहीं तो हम आत्मायें वहाँ की रहने वाली हैं। अब फिर पुरुषार्थ करते हैं, वहाँ जाने के लिए। ... ये 5 तत्व भी खींचते हैं, ऊपर से नीचे आकर पार्ट बजाने के लिए। प्रकृति का आधार तो जरूर लेना पड़ता है। नहीं तो खेल चल न सके। यह सुख और दुख का खेल बना हुआ है।''

सा.बाबा 12.03.09 रिवा.

''अभी तुम जानते हो कि हमारी आत्मा ऐसे शरीर छोड़ेगी, जैसे मक्खन से बाल। बैठे-बैठे बाप की याद में देह का त्याग कर देंगे। बाप के पास तो खुशी से जाना है। पुराना शरीर खुशी से छोड़ना है। जैसे सर्प का मिसाल है।''

सा.बाबा 2.07.09 रिवा.

कर्मयोग, कर्मभोग, कर्म-बन्धन और पाप-पुण्य

Q. हमारे सिर पर पापों का बोझा कितना है, उसकी कसौटी क्या है? आत्मा पर पापों का बोझा कितने जन्मों से चढ़ा है और आत्मा पर जंक कितने जन्मों से चढ़ी है?

आत्मा पर देहभान और देहाभिमान की जंक तो 5000 वर्ष की चढ़ी हुई, जो अभी उतारनी है परन्तु पापों का बोझा अर्थात् कर्मभोग और कर्म-बन्धन का बोझ द्वापर से चढ़ा हुआ है क्योंकि द्वापर से ही आत्मा देहाभिमान के वश विकारों में प्रवृत्त होकर पाप करना आरम्भ करती है, जिस पापों के बोझ को भी आत्मा को अभी संगमयुग पर परमात्मा की याद अर्थात् कर्मयोग से भस्म करना है और आत्मा पर जो जंक चढ़ी है, वह भी उतारनी है। साथ ही कर्मयोग के द्वारा आधे कल्प के श्रेष्ठ कर्मफल और कर्म-सम्बन्ध का खाता जमा भी करना है।

का अनुभव परमानन्दमय होता है। द्वापर से लेकर आत्माओं के जो भी कर्म हैं वे कर्म-बन्धन के ही निमित्त बनते हैं क्योंकि उनके फलस्वरूप आत्मायें दुख भोगती हैं। कर्मातीत स्थिति में न सुख का सम्बन्ध होता है और न ही कर्म के बन्धन का दुख होता है तथा न कर्मभोग की वेदना की महसूसता होती है। आत्मा के द्वारा न कोई कर्म होता है और न कर्म का संकल्प होता है। वह निर्संकल्प स्थिति होती है, जिसको हठयोग में निर्संकल्प समाधि के नाम जाना जाता है और ज्ञान मार्ग में बीजरूप स्थिति या कर्मातीत स्थिति के रूप में जाना जाता है

''कर्मातीत अर्थात् 1-लौकिक और अलौकिक कर्म और सम्बन्ध दोनों में स्वार्थ भाव से मुक्त, 2-पिछले जन्मों के कर्मों के हिसाब-किताब और वर्तमान जीवन के कमजोर स्वभाव-संस्कार ... इस बन्धन से भी मुक्त, 3- पुरानी दुनिया में इस पुराने अन्तिम शरीर में किसी प्रकार की व्याधि, जो श्रेष्ठ स्थिति को हलचल में लाये, उससे भी मुक्त।'' अ.बापदादा 18.1.87

''युद्ध के मैदान में तो बच्चे हैं, संकल्प-विकल्प भी इन्हें तंग करेंगे, यह खाँसी भी इनके कर्मों का हिसाब-किताब है, जो इनको भोगना है। बाबा तो मौज में है, इनको कर्मातीत बनना है। ... बाप तो है ही सदा कर्मातीत अवस्था में। हम तुम बच्चों को माया के तूफान, कर्मभोग आदि आयेंगे।'' सा.बाबा 6.07.09 रिवा.

''इस रथ को कुछ होता है तो तुमको फीलिंग आयेगी कि दादा को कुछ हुआ है। बाबा को कुछ नहीं होता है, इनको होता है। ज्ञान मार्ग में अन्धश्रृद्धा की बात नहीं होती है।... दादा भी पुरुषार्थी है, सम्पूर्ण नहीं है।'' सा.बाबा 6.07.09 रिवा.

कर्मातीत और विकर्माजीत स्थिति में अन्तर और उसका कर्मभोग-कर्मयोग से सम्बन्ध

कर्मातीत अर्थात् कर्मो से अतीत, बीजरुप स्थिति अर्थात् मुक्त अर्थात् निर्संकल्प स्थिति। विकर्माजीत अर्थात् जीवन-मुक्त स्थिति अर्थात् निर्विकल्प स्थिति अर्थात् विकर्मो से मुक्त और शुभ कर्मो में प्रवृत स्थिति। अपने आत्मिक

स्वरूप में स्थित आत्मा ही कर्मातीत और विकर्माजीत स्थिति का अनुभव कर सकती है। इसका ज्ञान भी अभी ही परमात्मा ने दिया है और उसको पाने का विधि-विधान भी बताया है। भक्तिमार्ग में मुक्ति-जीवनमुक्ति, निर्संकल्प-निर्विकल्प समाधि आदि के रूप में वर्णन तो है परन्तु उसका यथार्थ ज्ञान और उसके विधि-विधान का ज्ञान नहीं होता है।

''माया पर जीत पाकर कर्मातीत अवस्था में जाना है। पहले-पहले तुम आये हो कर्म सम्बन्ध में। उसमें आते-आते फिर आधा कल्प बाद तुम कर्म बन्धन में आ गये। पहले-पहले तुम पवित्र थे। न सुख का कर्म-बन्धन, न दुख का।... मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप मिट जायेंगे और तुम मेरे पास घर में आ जायेंगे।''

सा.बाबा 11.1.05 रिवा.

''कर्मयोगी के आगे कोई कैसा भी आ जाये लेकिन वह स्वयं सदा न्यारा और प्यारा रहेगा। नॉलेज द्वारा जानेगा कि इसका यह पार्ट चल रहा है। घृणा वाले से स्वयं भी घृणा कर ले, यह हुआ कर्म का बन्धन। ऐसा कर्म के बन्धन में आने वाला एकरस नहीं रह सकता। ... इसलिए अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखो और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी होकर देखो।''

अ. बापदादा 18.4.82

''तुम्हारी याद की यात्रा पूरी तब होगी जब तुम्हारी कोई भी कर्मेन्दियां धोखा न दें। कर्मातीत अवस्था हो जाये। ... तुमको उसके लिए पूरा पुरुषार्थ करना है।''

सा.बाबा 6.7.05 रिवा.

''कर्मातीत अवस्था के समीप पहुँचने की निशानी जानते हो? समीपता की निशानी 'समानता'है। किस बात में? आवाज़ में आना व आवाज़ से परे हो जाना, साकार स्वरूप में कर्मयोगी बनना और साकार स्मृति से परे न्यारे निराकारी स्थिति में स्थित होना, सुनना और स्वरूप होना ... इस सभी बातों में समानता। उसको कहा जाता है - कर्मातीत अवस्था की समीपता।''

अ.बापदादा 1.9.75

परमात्मा पतित-पावन है। कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगमयुग

बच्चों को बाप ने समझाया है कि अब वापस घर चलना है। ... आत्मायें वहाँ अपने घर में रहती हैं। वह है आत्माओं का घर, यह है जीवात्माओं का घर। ... भगवान से मिलने के लिए बहुत खुशी होनी चाहिए।''

सा.बाबा 12.03.09 रिवा.

''आत्मा का इस शरीर में बहुत मोह पड़ गया है, इसलिए आत्मा को डर लगता है कि कहाँ शरीर न छूट जाये। अज्ञान काल में भी डर रहता है। इस समय जबकि संगमयुग है, तुम जानते हो अब वापस जाना है बाप के पास, तो डर की बात नहीं।''

सा.बाबा 12.03.09 रिवा.

Q. कब-कब देखा गया है कि शरीर छोड़ने वाला तो सहज ही चला जाता है परन्तु उसके पीछे रहने वाले दुखी होते रहते हैं तो ऐसी घटना में किसका कर्मभोग अधिक कहा जायेगा अर्थात् जाने वाले का या रहने वालों का?

वास्तव में जो दुखी होता है, उसका ही कर्मभोग अधिक कहा जायेगा क्योंकि हर आत्मा का अपना कर्मभोग ही आत्मा को दुखी करता है। ये दुर्घटना आदि में अल्पायु में ही शरीर छोड़ना भी कलियुग में विश्व-नाटक का विधान है क्योंकि अभी आत्मा को सारे हिसाब-किताब पूरे करने होते हैं, जिसके कारण अचानक शरीर छोड़ना, किसके दुख का कारण बनना आदि आदि होते हैं।

''कोई का प्यार होता है और शरीर छोड़ता है तो मोह में जैसे पागल बन जाते हैं। माताओं को ज्ञान न होने के कारण विनाशी शरीर के पिछाड़ी विधवा बन कितना रोती हैं, याद करती रहती हैं। अभी तुम अपने को आत्मा समझ, दूसरे को भी आत्मा देखते हो तो ज़रा भी दुख नहीं होता है।''

सा.बाबा 6.08.09 रिवा.

''देह की याद आने से रोते हैं। देखते भी हैं कि शरीर खत्म हो गया, फिर उनको याद करने से क्या फायदा। ... अविनाशी चीज़ ने जाकर दूसरा शरीर लिया। यह तो बच्चे जानते हैं कि जो अच्छा कर्म करता है, उनको फिर शरीर भी अच्छा मिलता है।''

सा.बाबा 6.08.09 रिवा.

''यह शरीर बनते हैं 5 तत्वों से, इसलिए 5 तत्व यहाँ रहने के लिए खींचते हैं।

कपड़े वहाँ ही छोड़कर घर के कपड़े पहनकर घर में जाते हैं। तुम्हें भी अब यह चोला यहाँ ही छोड़कर घर जाना है।'' सा.बाबा 7.08.09 रिवा.

''ये सब बातें बच्चों को अच्छी रीति समझकर औरों को भी समझाना है और बहुत खुशी में भी रहना है। अभी हम सदैव के लिए बीमारियों आदि से छूटकर 100 परसेन्ट हेल्दी, वेल्दी बनते हैं। ... तुम जानते हो सबका मौत तो होना ही है। कल्प-कल्प का यह खेल है। फिकरात कोई नहीं होती। जो पक्के योगी हैं, वे कभी हाय-हाय नहीं करेंगे।'' सा.बाबा 29.07.09 रिवा.

इस विश्व-नाटक में किसी भी वस्तु पर किसी एक व्यक्ति का अधिकार नहीं है। इसमें सारी सम्पत्ति सार्वजनिक है और हर आत्मा को उसके पार्ट बजाने केलिए अस्थाई रूप में मिलती है और जब पार्ट पूरा हो जाता है तो उसको छोड़ना ही पड़ता है और दूसरे पार्ट के अनुसार दूसरी साधन-सम्पत्ति मिलती है। जो मिली हुई साधन सम्पत्ति को अपना समझ लेते हैं, उनको वह समय पर छोड़नी तो पड़ती ही है परन्तु उनको उसके वियोग का दुख भोगना होता है, जो मृत्यु-दुख के रूप में अनुभव होता है। जो विश्व-नाटक के इस रहस्य को समझ लेते हैं, वे नष्टोमोहा होकर समय पर उसको त्याग देते हैं और मृत्यु-दुख से बच जाते हैं। ऐसी ही स्थिति व्यक्तियों की भी है। उनमें भी सब पार्ट अनुसार मिलते हैं और विछुड़ते हैं, पार्ट अनुसार कोई मित्र बनता है तो वही पार्ट आने पर शत्रु बन जाता है। वास्तव में इसमें कोई हमारा मित्र या शत्रु नहीं है, अपना-पराया नहीं है। सब पार्ट मात्र ही है।

''अब बच्चों को ज्ञान समझना और समझाना सहज हैं। दूसरों को सुनायेंगे तो खुशी होगी और पद भी ऊंच पायेंगे। ... आत्मा निर्लेप नहीं है, अच्छे या बुरे संस्कार आत्मा में ही रहते हैं, तब ही कर्मों का भोग होता है।... तुम बच्चों को रहमदिल, कल्याणकारी बनना है।'' सा.बाबा 5.03.09 रिवा.

''यहाँ मरने से डर रहता है। आत्मा को शरीर छोड़ने से दुख होता है, डरती है क्योंकि फिर भी दूसरा जन्म ले दुख ही भोगना है। तुम तो हो संगमयुगी। तुम

पर जब परमात्मा आते हैं और आत्माओं को आत्मा, सृष्टि-चक्र, कर्म का ज्ञान देकर राजयोग सिखलाते हैं, तब ही आत्मा के पावन बनने की प्रक्रिया आरम्भ होती है और राजयोग के सतत अभ्यास से आत्मा पावन बनती है। जो आत्मायें राजयोग के द्वारा पावन नहीं बनती, वे कर्मभोग के रूप में सज़ायें खाकर पावन बनती है।

''कोई को खराब रोगी शरीर मिलता है, वह भी कर्मों अनुसार मिलता है। ऐसा नहीं कि किसी ने अच्छा कर्म किया है तो ऊपर चले जायेंगे। नहीं, ऊपर तो कोई जा नहीं सकते। अच्छे कर्म किये हैं तो अच्छा कहलायेंगे, जन्म अच्छा मिलेगा। फिर भी नीचे तो उतरना ही है।'' सा.बाबा 6.08.09 रिवा.

कर्मभोग, कर्मातीत स्थिति और पुरानी दुनिया के विनाश का सम्बन्ध

जब आत्मा पावन होती है तो उसके लिए दुनिया अर्थात् प्रकृति भी पावन चाहिए। जैसे बाबा उदाहरण देते हैं कि जैसा व्यक्ति होता है, वैसा ही उसका फर्नीचर होता है। जब आत्मायें कर्मातीत अर्थात् पावन बन जायेंगी तो वे पतित दुनिया में रह नहीं सकती, उनके लिए दुनिया भी पावन चाहिए। जब दुनिया पावन बनेगी तो पतित दुनिया का विनाश भी अवश्य होगा। इस प्रकार देखें तो कर्मातीत स्थिति ही विनाश का आधार है। जो आत्मायें कर्मयोग के सफल अभ्यास से विनाश के पहले कर्मातीत बनेंगी, वे ही पावन दुनिया में पहले जायेंगी और जो विनाश के आधार पर पावन बनेंगी अर्थात् अन्त समय सजायें खाकर कर्मभोग का खाता पूरा करके कर्मातीत बनेंगी, वे अन्त में जन्म लेंगी।

''अगर ज्ञान की धारणा हो तो वह नशा सदा चढ़ा रहे। नशा कोई को बहुत मुश्किल चढ़ा रहता है। मित्र सम्बन्धी आदि सब तरफ से याद निकालकर एक बेहद की खुशी में ठहर जायें, यह है बड़ी कमाल। हाँ, यह भी अन्त में होगा, पिछाड़ी में सब कर्मातीत अवस्था को पा लेते हैं।'' सा.बाबा 9.2.05 रिवा.

''बाप ने याद की यात्रा सिखलाई है, जिससे हम कर्म-बन्धन से न्यारे हो कर्मातीत

हो जायेंगे। ... अन्त में सब साक्षात्कार होंगे, फिर कुछ कर नहीं सकेंगे। ... अफसोस करेंगे, फिर भी सज़ा तो खानी ही पड़ेगी।'' सा.बाबा 6.5.05 रिवा.

''ऐसा संकल्प इमर्ज होना चाहिए कि अब सर्व-आत्माओं का कल्याण हो। सर्व तड़पती हुई, दुखी और अशान्त आत्मायें वरदाता बाप और बच्चों द्वारा वरदान प्राप्त कर सदा शान्त और सुखी बन जाएं और अब घर चलें। यह स्मृति समय की समीपता प्रमाण तेज़ होनी चाहिए क्योंकि इस संकल्प से ही और इस स्मृति से ही विनाश ज्वाला भड़क उठेगी और सर्व का कल्याण होगा।''

अ.बापदादा 3.2.74

''जो गायन है कि करते हुए अकर्ता। सम्पर्क-सम्बन्ध में रहते हुए कर्मातीत। क्या ऐसी स्टेज रहती है? कोई भी लगाव न हो और सर्विस भी लगाव से न हो लेकिन निमित्तभाव से हो, इससे ही कर्मातीत बन जायेंगे।'' अ.बापदादा 3.2.74

''स्टडी पूरी तब होगी, जब विनाश के लिए सामग्री तैयार होगी। फिर समझ जायेंगे कि आग जरूर लगेगी। ... पिछाड़ी में कर्मातीत अवस्था होनी है। इस समय किसकी कर्मातीत अवस्था होना असम्भव है। कर्मातीत अवस्था हो जाये फिर तो यह शरीर भी न रहे।'' सा.बाबा 29.6.05 रिवा.

''बाप ने बताया है - यह युद्ध का मैदान है, टाइम लगता है पावन बनने में। इतना ही समय लगता है कि जब तक लड़ाई पूरी हो। ऐसे नहीं कि जो शुरू में आये हैं, वे पूरे पावन हो गये।'' सा.बाबा 19.11.04 रिवा.

''जब निराकारी दुनिया से सब आत्मायें आ जायेंगी, तब तुम इम्तहान में नम्बरवार पास हो जायेंगे। ... आत्मा पतित तो शरीर भी पतित मिलता है। ... ज्ञान चिता पर बैठने से तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। ज्ञान सागर बाप के सिवाए ज्ञान चिता पर कोई बिठा न सके।'' सा.बाबा 3.08.09 रिवा.

वर्तमान समय अन्तिम समय है, आत्माओं का सारा हिसाब-किताब चुक्तू होना ही है, इसलिए कर्मभोग का आना अवश्य सम्भावी है, कोई भी उससे बच नहीं सकता परन्तु उस कर्मभोग पर कर्मयोग से विजय पायी जा सकती है, कैसे पायें

है अर्थात् यथार्थ ज्ञान की धारणा और कर्मयोग के सफल अभ्यास से मृत्यु भी आत्मा के लिए एक वस्त्र बदलना है और उसका अगला जन्म चढ़ती कला होने के कारण उसका आत्मा को सुख अनुभव होता है।

''आत्मा अविनाशी है। अविनाशी को ही प्यार करना चाहिए, विनाशी शरीर को थोड़ेही प्यार करना चाहिए। ... आत्मा का प्यार अविनाशी होता है। आत्मा कभी मरती नहीं। ... तुम अविनाशी बाप के बच्चे अविनाशी आत्मा हो, तुमको रोने की दरकार नहीं।'' सा.बाबा 6.08.09 रिवा.

''अभी तुम्हारा प्यार विनाशी शरीर के साथ हो गया है, इसलिए रोना पड़ता है। ... अभी तुम अपने को अविनाशी आत्मा समझते हो तो रोने की बात नहीं क्योंकि तुम आत्माभिमानी बन गये। बाप अब तुम बच्चों को आत्माभिमानी बनाते हैं। देहाभिमानी होने से रोना होता है।'' सा.बाबा 6.08.09 रिवा.

''आत्मा एक शरीर छोड़कर जाकर दूसरा पार्ट बजाती है। ये तो खेल है। तुम शरीर में ममत्व क्यों रखते हो। देह सहित देह के सब सम्बन्धों से बुद्धियोग तोड़ो, अपने को अविनाशी आत्मा समझो। ... आत्माभिमानी बनने से तुम लायक बन जायेंगे।''

सा.बाबा 6.08.09 रिवा.

''अविनाशी ज्ञान रतनों को लेकर फिर औरों को दान करते जाओ। इन ज्ञान रतनों के लिए कहा जाता है कि एक-एक रतन लाखों का है। कदम-कदम पर पदम देने वाला तो एक ही बाप है। सर्विस पर बड़ा अटेन्शन चाहिए। तुम्हारा कदम है याद की यात्रा का, उससे तुम अमर बन जाते हो। वहाँ मरने आदि का फिक्र होता नहीं। एक शरीर छोड़ दूसरा लिया।'' सा.बाबा 6.08.09 रिवा.

''ऊपर जाना माना मरना, शरीर छोड़ना। यहाँ तो बाप ने कहा है - तुम इस शरीर को भूलते जाओ। बाप तुमको जीते जी मरना सिखलाते हैं, जो और कोई सिखला न सके। तुम यहाँ आये ही हो अपने घर जाने के लिए। घर कैसे जाना है, यह ज्ञान अभी ही मिलता है।'' सा.बाबा 7.08.09 रिवा.

''जैसे हद के नाटक के एक्टर्स होते हैं तो नाटक जब पूरा होता है तो नाटक के

को अपना समझकर उनके लगाव-झुकाव में आ जाती है, जिनको मृत्यु के समय छोड़ना पड़ता है और वह छोड़ना आत्मा के लिए दुखदायी बन जाता है। वास्तव में तो वह छोड़ना भी एक पर्दा डालना ही है क्योंकि कोई आत्मा एक शरीर छोड़कर उसी घर में, सम्बन्ध में या आसपास ही जन्म ले सकती है परन्तु पहचान नहीं सकते हैं। इस सम्बन्ध में महाभारत में अभिमन्यु के मारे जाने के बाद शोक सन्तप्त अर्जुन को श्रीकृष्ण ने दिव्य दृष्टि में साक्षात्कार कराया, उस समय उनका जो सम्वाद हुआ, वह तो सब जानते ही हैं। संक्षेप में अभिमन्यु ने अर्जुन को कहा - यहाँ कौन किसका बाप और कौन किसका बच्चा है। न जाने आप हमारे कितने बार बाप बने हो और मैं आपका बाप बना हूँ।

इस विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर हम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल अभ्यास करके इस देह और देह की दुनिया से नष्टोमोहा होकर इस मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त हो सकते हैं, जिसके लिए ही परमात्मा पिता ने ये सत्य ज्ञान हमको दिया है। अब इसका जीवन में सदुपयोग करना हमारा कर्तव्य है। जो करेगा, वह इससे मुक्त हो जायेगा और इस जीवन का सच्चा सुख अनुभव करेगा अर्थात् मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त होकर अमरत्व का अनुभव करेगा।

इस मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख में आत्मा के कर्मभोग अर्थात् विकर्मों के संचित खाते और कर्म-बन्धन अर्थात् आत्माओं के साथ के अप्रिय सम्बन्धों के हिसाब-किताब की मुख्य भूमिका है क्योंकि अन्त समय वे सब सामने आते हैं। यह विश्व-नाटक का विधान है कि जब आत्मा शरीर छोड़ती है तो इस जीवन के सारे हिसाब-किताब उसके सामने आते हैं, जो आत्मा को भयभीत करते हैं। कलियुग का अन्त होने के कारण और विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार आत्मा की निरन्तर गिरती कला होती है, इसलिए अगला जन्म गिरती कला का होने के कारण भी आत्मा को इस देह को छोड़ने में दुख होता है।

यथार्थ ज्ञान और कर्मयोग के सफल अभ्यास से आत्मा मृत्यु पर विजय पा लेती

वह ज्ञान परमात्मा ने दिया है। जो अपने आत्मिक स्वरूप को यथार्थ रीति जानकर इस देह से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल अभ्यास करेगा, वह कर्मभोग होते भी उसकी वेदना से मुक्त रहेगा।

''समय कितना समीप पहुँचा हुआ दिखाई देता है ... समय के साथ सम्पूर्ण स्वरूप का लक्ष्य भी सामने रहता है? समीप का लक्षण क्या होगा? ... आप भी ऐसे अनुभव करेंगे कि यह शरीर जैसे कि अलग है, हम इसको धारण करके चला रहे हैं।''

अ.बापदादा 29.5.70

साक्षी - कर्मातीत - मुक्त - जीवनमुक्त स्थिति और उसका कर्मभोग - कर्मयोग से सम्बन्ध

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा से आत्मा साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखने और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाने में समर्थ होती है, जिससे वह इसे देखते हुए परम सुख का अनुभव करती है। साक्षी स्थिति ही इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा और कर्मभोग एवं कर्म-बन्धन से मुक्त होने का दर्पण है। कर्मयोग के द्वारा आत्मा पावन बनती है और अन्त में कर्मभोग और कर्म-बन्धन से मुक्त कर्मातीत स्थिति को धारण कर परमधाम जाती है, जो ही आत्मा की मुक्त स्थिति है। जो आत्मायें पुरुषार्थ से कर्मातीत बनती हैं, वे यहाँ भी मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती हैं और भविष्य नई जीवनुमुक्त दुनिया में भी श्रेष्ठ पद पाती हैं।

इस जीवन में ज्ञान से कर्मातीत और साक्षी स्थिति का अनुभव करना ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव है। अभी का ये अनुभव यथार्थ और अति श्रेष्ठ अनुभव है। वास्तव में परमधाम में तो मुक्ति का कोई अनुभव ही नहीं होगा और सतयुग में सदा काल का सुख तो होता है, दुख का आत्मा को कोई अनुभव नहीं होता है, इसलिए दोनों के अन्तर का भी आत्मा को ज्ञान नहीं होता है, इसलिए जीवनमुक्ति क्या होती है, इसका भी वहाँ ज्ञान नहीं होगा। मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव अभी ही होता है, जब हमको सारा ज्ञान परमात्मा से मिलता है।

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा और कर्मयोग के सफल अभ्यास से ही साक्षी और कर्मातीत स्थिति का अनुभव होता है। साक्षी और कर्मातीत स्थिति में आत्मा स्वयं को कर्मभोग की वेदना से मुक्त अनुभव करती है।

''यह कब भी नहीं समझना कि अन्तिम स्टेज का अर्थ यह है कि वह स्टेज अन्त में ही आयेगी। लेकिन अभी से उस सम्पूर्ण स्टेज को जब प्रैक्टिकल में लाते जायेंगे तब अन्तिम स्टेज को अन्त में पा सकेंगे। अगर अभी से उस स्टेज को समीप नहीं लाते रहेंगे तो दूर ही रह जायेंगे, पा न सकेंगे। इसलिये अब पुरुषार्थ में जम्प लगाओ।''

अ.बापदादा 9.11.72

''इस देह के भान को भी अर्पण करने से जब अपनापन मिट जाता है तो लगाव भी मिट जाता है। ...ऐसे समर्पण होने वालों की निशानी क्या रहेगी? एक तो सदा योगयुक्त और दूसरा सदा बन्धनमुक्त। जो योगयुक्त होगा, वह बन्धन मुक्त जरुर होगा। योगयुक्त का अर्थ ही है देह के आकर्षण के बन्धन से भी मुक्त।''

अ.बापदादा 25.3.71

''तुम यह 84 जन्मों का स्वदर्शन चक्र फिरायेंगे तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे। चक्र को भी याद करना है, यह ज्ञान किसने दिया, उनको भी याद करना है। बाबा हमको स्वदर्शन चक्रधारी बना रहे हैं। ... बाप को याद करने और स्वदर्शन चक्र को फिराने से ही तुम्हारे पाप कटते हैं।''

सा.बाबा 12.10.04 रिवा.

''यह फायदा और घाटा तब देखने में आता है जब आत्मा शरीर के साथ है। ... बाप समझाते हैं - देहाभिमान होने के कारण विकारों का कितना किचड़ा है। ... आत्मा में कितनी मैल है, यह अभी पता पड़ा है। ... तुम पवित्र बन जायेंगे तो फिर कोई अपवित्र की शकल देखने की भी दिल नहीं होगी।''

सा.बाबा 14.10.04 रिवा.

''हम क्या थे, फिर क्या से क्या बन जाते हैं, ये बातें तुम बच्चे ही समझते हो।... अभी तुम बच्चे जानते हो हमारी आत्मा में कैसे किचड़ा भरता गया है।... तुम

बच्चों को ज्ञान मिला है कि अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो तो आत्मा से किचड़ा निकल जायेगा।''

सा.बाबा 14.10.04 रिवा.

''सुखधाम में बाप नहीं ले जायेंगे। उनकी लिमिट हो जाती है घर तक पहुँचाना। यह सारा ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए। ... काल को हुक्म नहीं है नई दुनिया में आने का। ... बाप कहते - मुझे भी नई दुनिया में आने का हुक्म नहीं है। मैं तो पतितों को ही पावन बनाने आता हूँ।''

सा.बाबा 15.10.04 रिवा.

परमपिता परमात्मा आत्मा को पावन बनाता नहीं है परन्तु पावन बनने का रास्ता बताता है अर्थात् वह ज्ञान देता है और उनकी याद से आत्मा में ज्ञान की धारणा होती है और उनकी याद से आत्मा का देहाभिमान खत्म होता है, जिससे आत्मा का मूल (Original) स्वभाव-संस्कार, गुण-शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं।

''अभी बाप को याद करना है क्योंकि बाप की याद से बैटरी को चार्ज करना है। ... मूलवतन में तो हैं ही आत्मायें, शरीर तो है नहीं, इसलिए बैटरी कम होने की बात नहीं। मोटर जब चले तब बैटरी चालू होगी।'' (शरीर के साथ कर्म करने से ही आत्मा की शक्ति रूपी बैटरी डिस्चार्ज होती तो चार्ज भी शरीर के साथ ही होती है)

सा.बाबा 30.8.04 रिवा.

कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय और मृत्यु

आज के विश्व में मनुष्य से लेकर हर योनि की आत्मा मृत्यु से भयभीत है, जबकि मृत्यु इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाने और पार्ट परिवर्तन के लिए एक वस्त्र बदलना है, जो इस विश्व-नाटक की सबसे प्रिय और अति अनिवार्य क्रिया है अर्थात् घटना है। मृत्यु आत्मा को प्रकृति का एक अद्वितीय वरदान है, जिसके अनुसार आत्मा पुराना वस्त्र त्यागकर नया धारण करती, पार्ट बजाने के लिए जीवन में नवीनता, नई स्फूर्ति अनुभव करती है परन्तु अज्ञानता के वशीभूत वह वरदान आत्मा के लिए अभिशाप बन गया है क्योंकि देहाभिमान के वश आत्मा जिस तन में होती है, उसके साथ और जहाँ पार्ट बजा रही होती है, उससे सम्बन्धित वस्तु और व्यक्तियों